मुह में धखेला जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण बने साम्राज्यवादी नीतियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन एवं प्रतिरोध संघर्षों का उभार देखने को मिल रहा है। राष्ट्रीयताओं को आत्मनिर्णय अधिकार के लिए कुर्द जनता ने सशस्त्र क्रांति चला रही है। फिलिस्तीनी राष्ट्रीय-मुक्ति संघर्ष जुझारू रूप से जारी है। अफगानिस्तान में तालिबन के सशस्त्र संघर्ष दशकों से जारी है, उसने अभी अमेरिकी साम्राज्यवादियों को झुकाने में कामयाब हासिल कर रही है। नवजनवादी क्रांति के लाइन को लेकर सशस्त्र क्रांतिकारी संघर्षों का फिलिप्पींस, भारत, तुर्की, पेरू आदि देशों में माओवादी पार्टियां नेतृत्व कर रही हैं। इस तरह कई आंदोलन विश्वभर में अलग-अलग देशों में व्यापक ग्रामीण इलाकों में स्वयं अपने जनयुद्ध को शुरू करने लोगों को उत्साहित कर रही हैं।

विश्व बाजार का पुनर्विभाजन करने एवं प्राकृतिक संसाधनों को लूटने के लिए साम्राज्यवादियों के बीच कुत्तों का संघर्ष व्यापार एवं सैनिक क्षेत्रों में तेज होता जा रहा है। ब्रेग्जिट के घटनाक्रम साम्राज्यवादियों के बीच अंतरविरोध की तीव्रता को दर्शाती है। अमेरिका आर्थिक क्षेत्र में सामने लाने वाली संरक्षणवादी नीतियों को बाकी साम्राज्यवादी देश तीव्र विरोध कर रही हैं। अमेरिका एवं चीन के बीच व्यापार युद्ध बेहद तीव्रता से जारी है। पश्चिमाशिया, हिंदू-प्रशांत इलाकें साम्राज्यवादियों के बीच अंतरविरोध का केंद्र बना हुआ है। पश्चिमाशिया में इरान एवं पूर्वी एशिया में उत्तर कोरिया को एवं इनको बल देने वाले रूसी एवं चीनी साम्राज्यवादियों को सामना करते हुए विश्व पर अपने दबदबे को कायम रखने अमेरिका की विफल कोशिशों की वजह से तनाव बढ़ रहा है। विशेषकर पश्चिमाशिया में अमेरिका के नहीं झुकने वाले एवं स्वतंत्र नीतियां अपनाने वाले इरान को निशाना बनाकर उसपर कई आर्थिक पाबंदियां लगा दिया है। स्वायत्तता प्राप्त हांगकांग के जन आकांक्षाओं को कुचलते हुए चीनी सरकार द्वारा लायी गयी 'प्रत्यर्पण बिल' के खिलाफ जनउभार आयी है, बावजूद इसने एक तरह से साम्राज्यवादियों के बीच अंतरविरोधों का प्रतिबिंबित करता है।

विश्व पूंजीवादी आर्थिक संकट के कारण विश्वभर में सुलगते संघर्ष क्रांतिकारी शक्तियों का उद्भव एवं वृद्धि के लिए अनुकूल हैं। साम्राज्यवादी नये औपनिवेशिक शोषण के तहत मुट्ठीभर बहुराष्ट्रीय कंपनियां विश्वभर में अलग-अलग देशों में अपनी उत्पादन इकाइयों को विभाजित कर सर्वहारा का तीव्र शोषण करते हुए सुपर मुनाफे आर्जित करना ही नहीं, बल्कि विकसित एवं विकासशील देशों के सर्वहारा के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ा रही हैं। इस घटनाक्रम ने विश्वभर में सर्वहारा

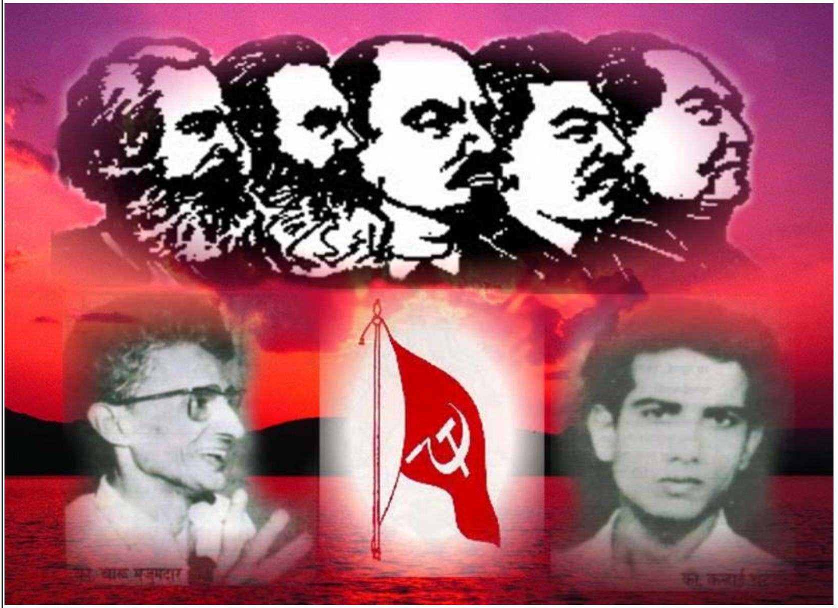

लाल पताका

केन्द्रीय कमेटी का सैद्धांन्तिक मुखपत्र

जून 2019

15

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

अवश्य गुप्त रूप से गठित करना चाहिए। कार्यनीतिक संयुक्तमार्चों में पहलकदमी हमारे हाथों में रखते हुए काम करने की स्पष्टता देनी चाहिए।

दुश्मन के हमले गंभीर होने, लेकिन जनाधार होने वाले जगहों पर पार्टी के नेतृत्व में विभिन्न स्तरों के पीएलजीए कमांडों एवं यूनिटों को गठित कर उनके नेतृत्व में मुख्य रूप से गुप्त तौर-तरीके अपनाकर गुरिल्ल युद्ध एवं जनांदोलनों को तेज करना चाहिए। जल-जंगल-जमीन जैसे जनता के मौलिक समस्याओं पर, राज्य का दमन के खिलाफ विभिन्न आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं पर जनांदोलनों का निर्माण करना चाहिए। ये आर्थिकवाद एवं सुध ारवाद का शिकार न हो जाय, इसके लिए पहले से ही राजसत्ता को कब्जा करने की राजनीति से जनता को जागरूक करनी चाहिए। जनता को हथियारबंद करते हुए उन्हें व्यापाक रूप से मिलिशिया में संगठित करना चाहिए। दुश्मन की राजसत्ता को जहां धक्का पहुंचाया जाता है, वहां यथासंभव शीघ्र क्रांतिकारी राजसत्ता के इकाइयों-क्रांतिकारी जन कमेटियों को गठित व संगठित करने पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

प्रिय कामरेडो एवं जनता!

विश्व पूंजीवादी आर्थिक संकट ने विश्वभर में गंभीर प्रभाव डाल रहा है। साम्राज्यवादियों ने इससे उबरने के लिए भूमंडलीकरण नीतियां, राजनीतिक एवं सैनिक क्षेत्रों में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से हस्तक्षेप करने की नीतियां अपना रहे हैं एवं दुराक्रमणकारी युद्ध चला रहे हैं। साम्राज्यवादी शोषणकारी नीतियों की वजह से विश्वभर में आर्थिक असमानताएं तेजी से बढ़ रही हैं। विश्व में 62 धनाड्यों की संपदा इतना बढ़ गयी है कि विश्व के आधी आबादी की संपदा से वह बराबर है। सभी सरकारें दिवालिया घाटे बजट की नीतियां लागू करते हुए, जन कल्याणकारी योजनाओं एवं सेवाओं में भारी कटौती करने की वजह से श्रमिक जनता की जिंदगियां और दूभर हो गयी हैं। मजदूरों एवं मध्यम वर्ग के लोगों की वास्तविक वेतन घट रहे हैं। बेरोजगारी गंभीर स्तर पर पहुंच गयी है। फलत: पूजीवादी एवं साम्राज्यवादी देशों में विशेषकर यूरोप में मजदूर एवं मध्यम वर्ग के आंदोलन दिन-ब-दिन तेज होते जा रहे हैं।

साम्राज्यवादियों की हस्तक्षेप से हो रहे युद्धों के कारण पश्चिमाशिया, अफ्रीका एवं लातीन अमेरिका के देशों में करोड़ों जनता शरणार्थी बनकर तंगहाली में जी रहे हैं एवं बेहद खतरनाक परिस्थितियों में निर्ममता से मृत्यु की

हमने रणनीतिक आत्मरक्षात्मक चरण में गुरिल्ला युद्ध चला रहे हैं। इसलिए गुरिल्ला युद्ध के कार्यनीति एवं नियमों पर दृढ़ता से अडिग रहना चाहिए। टेरेन पर पकड़ हासिल करना, केंद्रीकरण-विकेंद्रीकरण, स्थल बदलने की कार्यनीति, हमेशा दुश्मन के कमजोरियों को पहचानना एवं जीत हासिल करने के लक्ष्य से उन कमजोरियों पर सरप्राइज हमला करना चाहिए। जनता की मदद से दुश्मन के छोटे यूनिटों का सफाया कर, हथियार तथा अन्य युद्ध सामग्री जब्त करना चाहिए।

पीएलजीए यूनिटों को छोटे यूनिटों के रूप में अति-विकेंद्रीकरण करने से बचना चाहिए क्योंकि दुश्मन के सूचना आधारित हमलों एवं घेरा डालो-नाश करो हमलों में उनकी सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। पीएलजीए ने सख्ती से सक्रिय आत्मरक्षात्मक तरीके लागू करना चाहिए। बेवजह हमारे गुरिल्ला यूनिटों एवं पार्टी कैडरों की गुप्तता खुलना नहीं चाहिए एवं महत्वपूर्ण सभी समाचार को अवश्य ही गुप्त रखना चाहिए। जनता एवं मिलिशिया को गुरिल्ला युद्ध में विभिन्न कर्तव्य निभाने, एम्बुश व रेड में खुफिया समाचार इकट्टा करने, दुश्मन के पृष्ठभूमि में जाकर ऑपरेशन चलाने एवं गुरिल्ला यूनिटों का सक्रिय मदद देने लायक उन्हें राजनीतिक एवं सैनिक प्रशिक्षण देकर संगठित करना चाहिए।

पीएलजीए के बल दुश्मन के बरतर बलों द्वारा जब घेराव किया जाता है, तब वह तुरंत उस घेराव से बाहर आना चाहिए। वह दुश्मन के भीतरी घेरे में नहीं बल्कि बाहरी घेरे में जाकर लड़ना चाहिए।

विभिन्न गुरिल्ला यूनिटों के बीच कमांड, कंट्रोल, कम्युनिकेशन एवं समन्वय को मजबूत करना चाहिए। राजनीतिक एवं सैनिक पहलकदमी हाथ में रखना चाहिए। दुश्मन के गतिविधियों को नजदीक से जांच करना चाहिए। गुरिल्ला युद्ध में एवं सहयोग में हर एरिया एवं यूनिट की भूमिका का सभी कामरेड चिन्हित करना चाहिए। विभिन्न स्तरों के कामरेडों का सैनिक विज्ञान, कमांडरों की क्षमता, राजनीतिक एवं सैनिक प्रशिक्षण बढ़ाना चाहिए एवं आकलन करने की तौर-तरीकों के बारे में, राजनीतिक व सैनिक संश्लेषण करने की तौर-तरीकों के बारे में स्पष्टता देनी चाहिए। जनता के रोजमर्रा आंदोलनों का जनयुद्ध की मदद देने एवं मजबूत करने की तरह समन्वय करना चाहिए।

रणनीतिक एवं कार्यनीतिक संयुक्तमोर्चे का नेतृत्व प्रदान करने वाली पार्टी कमेटियों को संगठित करने पर हमने अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए। रणनीतिक संयुक्तमोर्चा का स्वयं पार्टी ही नेतृत्व प्रदान करता है, इसलिए उसे

लाल पताका

केन्द्रीय कमेटी का सैद्धांतिक मुखपत्र

जून 2019

15

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

लाल पताका
जून 2019

विषय-वस्तु

1. अमर शहीदों को लालसलाम!
2. संपादकीय -
3. हमारी पार्टी के 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर सीसी संदेश
4. चीनी क्रांति के 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर लेख
5. सैद्धांतिक लेख
   सामूहिक नेतृत्व एवं व्यक्तिगत जिम्मेदारी के बीच संबंध
   - 'सीपीसी बुनियादी दृष्टिकोण' से
   इतिहास का विकास घुमावदार होती है
   - पेकिंग रिव्यू, अक्टूबर 1974
6. बोल्शेवीकरण पर इआरबी सरकुलर
7. पार्टी की शिक्षा पर सीसी सरकुलर
8. सुधाकर व माधवी पर सीसी सरकुलर
9. चुनाव के उपरांत की परिस्थिति पर सीसी सरकुलर

(इसमें 1, 2, 4, 5 विषयों का अनुवाद नहीं हुआ है। इसे पीपुल्सवार-15 (अंग्रेजी) से अनुवाद करना बाकी है)

अनुशासन को, पार्टी की एकता को मजबूत करना; पार्टी की गुप्त समन्वय तंत्र एवं सुरक्षा को मजबूत करना आदि को सही रूप से लागू करने द्वारा ही पार्टी की संगठित शक्ति बढ़ेगी। सभी स्तरों के पार्टी के नेतृत्वकारी कतारों ने सर्वहारा की क्रांतिकारी दृढ़ता एवं एकता के साथ अपने कर्तव्य निभाना चाहिए। स्वार्थ त्याग एवं कम्युनिस्ट स्फूर्ति के साथ कठिन परिस्थितियों में भी कर्तव्यों को निभाना होगा।

हमारी पार्टी ने पहले से ही मालेमा को अध्ययन करते हुए भारतवर्ष के ठोस परिस्थितियों के मुताबिक सृजनात्मक रूप से लागू कर रही है। किंतु इस अध्ययन ठोस परिस्थितियों को, भारत की उत्पादन प्रणाली में उभर रहे रुझानों, घटनाक्रमों, वर्ग शक्तियों का संयोजन एवं संबंधों को समझने के लिए समय-समय पर (periodically) सामाजिक अध्ययन, वर्ग विश्लेषण अवश्य करना होगा। इस विषय में जारी हमारी कमी को सुधारना होगा। बदलती परिस्थितियों के मुताबिक लगातार कार्यनीति को बेहतर करना चाहिए।

पार्टी में सर्वहारा वर्ग विचारधारा एवं सांचे में पुनराकार नहीं पाने वाली निम्नपूंजीपति विचारधारा के बीच संघर्ष लगातार होता रहता है। पार्टी में कहीं न कहीं बाहर की सामाजिक वास्तविकता प्रतिबिंबित होती है। पार्टी के सदस्यों में जागरूकता में असमानता रहती है। उसमें अगवा, मध्यम एवं पिछड़े तबके होती हैं। फलतः सांचे में पुनराकार नहीं पाने वाली कुछ निम्नपूंजीपति शक्तियां अपने संकुचित स्वार्थ एवं व्यक्तिवादी विचारों ऐसे ही चिपके रहते हैं। ये सर्वहारा पार्टी में सर्वहारा-विरोधी विचारों का संबंधित स्तरों में बढ़ावा देने प्रयास करते हैं। इसलिए इस तरह के गैर-सर्वहारा सोच एवं रुझानों के खिलाफ हमने लगातार सही तरीके अपनाकर संघर्ष जारी रखना चाहिए।

पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए के विभिन्न फारमेशनों द्वारा गुरिल्ला आक्रामक ऑपरेशन संचालित किये जाएंगे। वे जब कार्यान्वित होते हैं, तब विभिन्न परिस्थितियों में दुश्मन के साथ संघर्ष करने के दौरान, विभिन्न संघर्षों को सफल बनाने का अपना मुख्य कर्तव्य निभाने में पीएलजीए को रोकने वाले पहलू क्या है, इसके बारे में हमारी पार्टी कमेटियों एवं पीएलजीए कमांड सही तरीके से विश्लेषण कर, कमी-कमजोरियों को पहचान कर, उचित सबक लेकर जरूरी सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक एवं सांगठनिक प्रयास करके, फिर ऑपरेशनों को सफलतापूर्वक चलाना चाहिए।

चाहिए। हमने विभिन्न स्तरों में, विभिन्न इलाकों/क्षेत्रों में किये जाने वाले प्रयास में हमारे अनुभवों को नियमित रूप से मूल्यांकन करना चाहिए। पार्टी के नेतृत्वकारी कमेटियों ने सैन्य निर्माण, प्रशिक्षण, युद्ध कार्रवाइयों का संचालन आदि फौजी कार्य पर, क्रांतिकारी भूमि-सुधारों का अमल पर, सामंतवाद-विरोधी, साम्राज्यवाद-विरोधी जनांदोलनों का संचालन, जन निर्माणों का गठन, संगठितीकरण आदि जनकार्य पर, लालप्रतिरोध इलाकों, गुरिल्ला जोनों, गुरिल्ला बेस-आधार इलाकों का निर्माण आदि मामलों पर हमारे कार्य को नियमित रूप से समीक्षा कर सकारात्मक एवं नकारात्मक अनुभवों से सबक लेना चाहिए।

देशभर में हमारा आंदोलन विभिन्न इलाकों में विभिन्न स्तरों में असमान वृद्धि के साथ जारी है। इसलिए संबंधित इलाकों के ठोस परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इसके मुताबिक पार्टी ने अधिकतम जनता के साथ घनिष्ठ संबंध साध ाकर सभी प्रकार के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक आंदोलनों का निर्माण करना चाहिए। इन आंदोलनों में शामिल होने वाले जनता में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाकर पार्टी को सांगठनिक तौर पर नियमित रूप से संगठित करना चाहिए। गुप्त व खुला जनसंगठनों का गठन कर, इनमें अगवा शक्तियों को पार्टी में भर्ती करना चाहिए।

जनता में सांगठनिक कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि जनता में उचित निर्माण के सिवा काम करना स्वत:स्फूर्तता होती है। इससे अपेक्षित परिणाम भी हासिल करना संभव नहीं है। पार्टी निर्माण को विस्तारित करना भी संभव नहीं है। उचित निर्माण होने से योजनाबद्ध ढंग से काम करना संभव होगा। वे जनता में हमारी पार्टी प्रभाव को संगठित कर सकते हैं।

जनसंगठनों में चार वर्गों - मजूदर वर्ग, किसान, निम्नपूंजीपति वर्ग एवं राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग - को संगठित करना चाहिए। लेकिन हमने मुख्य रूप से बुनियादी वर्गों पर निर्भर करना चाहिए। हमने गुप्त क्रांतिकारी जनसंगठनों का गठन करना चाहिए। उसी समय खुला राजनीतिक आंदोलनों एवं खुला जनसंगठनों को गठित करने एवं विकसित करने का प्रयास भी करना चाहिए।

नये पार्टी सेल, पार्टी ब्रांच, ग्राम/फैक्टरी/कालेज/बस्ती पार्टी कमेटियों को, मिलिशिया, पीएलजीए यूनिटों, विभिन्न स्तरों के आरपीसीयों को निर्माण करना; दुश्मन के दमन में नुकसान हुए निर्माणों को पुन:संगठित करना, मजबूत करना; गुप्त काम-काज को बेहतर करना, कमियों को सुधारना; जनवादी केंद्रीयता एवं

हमारी पार्टी की 50वीं वर्षगांठ समारोहों का क्रांतिकारी जयजयकार!

दीर्घकालीन लाकयुद्ध को देशभर में विस्तारित व तेज करने पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक एवं सांगठनिक तौर पर मजबूत करें!

हमारी पार्टी की 50वीं वर्षगांठ एवं हमारी नयी पार्टी - भाकपा (माओवादी) की 15वीं वर्षगांठ समारोहों को 21 सितम्बर से 8 नवंबर तक देशभर में क्रांतिकारी जोशखरोश एवं दृढ़संकल्प के साथ आयोजन करें!

भारतीय क्रांतिकारी कतारों एवं जनता के लिए आह्वान!

प्रिय कामरेडो एवं जनता!

हमारे देश में 1925 में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ। उसने महान तेलंगाना सशस्त्र किसान संघर्ष का विश्वासघात कर संसदीय दलदल में फंस जाने के बाद संशोधनवादी पार्टी के रूप में तब्दील हो गयी। किंतु संशोधनवादी नेतृत्व एवं लाइन का मुकाबला करने वैकल्पिक क्रांतिकारी नेतृत्व का अभाव की वजह से क्रांतिकारी कतारें इसी पार्टी में ही अपनी अस्तित्व को जारी रखा। 1964 में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने दो पार्टियों के रूप में - भाकपा एवं भाकपा (मार्क्सवादी) - विभाजित हो गयी। इन दोनों के बीच सैद्धांतिक एवं राजनीतिक अंतर कम थी। नवंबर 1964 को संपन्न भाकपा (मार्क्सवादी) की 7वीं कांग्रेस में दो लाइनों के बीच संघर्ष द्वारा इसकी नयी संशोधनवादी नीतियों का पर्दाफाश हुआ। इस तरह क्रांतिकारी कतारों में नक्सलबाड़ी के समय से ही भाकपा एवं भाकपा (मा) तथा उनके लाइन को कट्टर संशोधनवादी के रूप में मानने लगे।

विश्व सामाजवादी शिविर में उभरी ख्रुश्चेव आधुनिक संशोधनवाद के खिलाफ माओ के नेतृत्व में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा महान बहस चलाये गये;

चीन में महान सांस्कृतिक क्रांति का शुरूआत हुये; कई देशों में जनांदोलनों का उभार से उथल-पुथल 1960वें दशक में संशोधनवाद एवं नया संशोधनवाद का विरोध करते हुए वैकल्पिक क्रांतिकारी लाइन को सामने लाकर कामरेड चारू मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी जैसे पहली श्रेणी के महान नेताओं सहित बड़ी संख्या में माओवादी शक्तियां पटल पर आ गयी। फलतः महान नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान संघर्ष, उसके बाद देशभर में सशस्त्र किसान संघर्षों का उभार आया। 22 अप्रैल 1969 को मार्क्सवादी महान शिक्षक लेनिन की 100वीं जयंति पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) एवं 20 अक्टूबर 1969 को माओइस्ट कम्युनिस्ट सेंटर (एमसीसी) को गठित किया गया। उसके उपरांत भाकपा (मा-ले) की धारा की सच्ची क्रांतिकारी शक्तियां 22 अप्रैल 1980 को भाकपा (मा-ले) (पीपुल्सवार) का गठन एवं 1998 में पीपुल्सवार पार्टी एवं भाकपा (मा-ले) पार्टी यूनिटी एकताबद्ध होकर नयी भाकपा (मा-ले) [पीपुल्सवार] का गठन हुआ। इसी तरह एमसीसी भी सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी ग्रुप - आरसीसीआई (एम), आरसीसीएम, भाकपा (मा-ले) (सेकंड सीसी) एवं आरसीसीआई (मालेमा) (सांगठनिक कमेटी) से एकता कायम कर 2003 में एमसीसीआई के रूप में गठित हुए। एमसीसीआई एवं भाकपा (मा-ले) (पीपुल्सवार) एकताबद्ध होकर 21 सितंबर 2004 को नयी पार्टी भाकपा (माओवादी) का उद्भव हुआ। इस तरह हमारे देश में दो मुख्य क्रांतिकारी ध ाराओं का विलय होकर 1925 से निहित भारत की कम्युनिस्ट आंदोलन के लंबे इतिहास के सभी क्रांतिकारी पहलुओं का सच्ची निरंतरता के रूप में सच्ची क्रांतिकारी सर्वहारा पार्टी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का गठन हुआ। इस तरह हमारे देश में एक ही क्रांतिकारी पार्टी, एक ही सर्वहारा जनसेना (पीएलजीए) एवं एक ही राजनीतिक चरित्र से लैस क्रांतिकारी जनसंगठनों एवं नये राजनीतिक सत्ता के संस्थाओं अस्तित्व में आयी। उसके बाद उसने सच्ची कम्युनिस्टों को एकताबद्ध करने का इस सिलसिले को जारी रखा एवं दिसंबर 2013 में भाकपा (मा-ले) नक्सलबाड़ी के साथ एकता कायम किया।

भाकपा द्वारा आयोजित छः कांग्रेसों, भाकपा (मार्क्सवादी) द्वारा आयोजित 7वीं कांग्रेस की निरंतराता के रूप में मई 1970 में भाकपा (मा-ले) द्वारा आयोजित 8वीं कांग्रेस एवं जनवरी 2007 में भाकपा (माओवादी) द्वारा आयोजित ऐतिहासिक एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस संपन्न हुए। इस कांग्रेस ने मौलिक दस्तावेजों को पारित कर सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक एवं सांगठनिक

है। सैद्धांतिक एवं राजनीतिक शिक्षा देकर हमारी कैडर पालिसी के मुताबिक उन्हें एसी/पीपीसी/शहरी कमेटियों में पदोन्नति कर मजबूत करना चाहिए। सभी स्तरों में पार्टी कमेटियों को संगठित करते हुए, हर स्तर पर नये नेतृत्व का विकसित करना चाहिए। दुश्मन की परिस्थिति को ध्यान में रखकर रक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित कर हमारी कैडर पालिसी के मुताबिक नीचे से ऊपरी स्तर तक सैद्धांतिक एवं राजनीतिक शिक्षा बेहतर करने के लिए सीसी द्वारा बनायी गयी सिलाबसों के अनुसार निर्धारित समयावधि में अध्ययन कक्षाएं चलानी चाहिए। इस अभियान के जरिए हमारी पार्टी, पार्टी के नेतृत्व, जनसेना एवं संयुक्तमोर्चा को संख्या में एवं गुणवत्ता में विकसित किया जाना चाहिए।

हमारी केंद्रीय कमेटी सशस्त्र क्रांति एवं समूची पार्टी का सेनापतियों का समूह (general staff) के रूप में एवं जनाधार का विस्तारित एवं मजबूत करने, आंदोलन धक्का खाये हुए इलाकों को फिर से पुनर्जीवित करने, नये इलाकों में विस्तारित करने में निर्णयाक भूमिका निभानी चाहिए। सशस्त्र संघर्ष जारी ग्रामीण इलाकों में दुश्मन के योजनाओं, कार्यनीति, तैनाती, ऑपरेशनों को नीचे से ऊपर तक पार्टी कमेटियों एवं पीएलजीए यूनिटों ने अवश्य ही नजदीक से अध्ययन कर सही आत्मरक्षात्मक-आक्रामक योजनाओं को तैयार करनी चाहिए। पार्टी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पीएलजीए द्वारा अपने प्रधान, द्वितीय एवं बुनियादी बलों से संबंधित कर्तव्यों एवं नीतियों को अवश्य लागू किया जाय। जनकार्य (मासवर्क) एवं कार्यनीतिक जवाबी हमलों के बीच सही संतुलन पर ध्यान देना चाहिए।

पार्टी कमेटियां दुश्मन की परिस्थितियों एवं क्रांतिकारी आंदोलन में आने वाली बदलावों एवं अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों का मंथन करना चाहिए। किसी भी सूरत में अपने पैरों पर खड़े होने का सिद्धांत के मुताबिक अपने आप को बचाते हुए सशस्त्र क्रांतिकारी संघर्ष को आगे बढ़ानी चाहिए।

केंद्रीय स्तर से जिला स्तर तक नेतृत्वकारी कमेटियां इन बातों को सुनिश्चित करना चाहिए कि शहरों में, मैदान एवं वनांचल-ग्रामीण इलाकों में पार्टी निर्माण विकसित हो, लगातार शहरों से ग्रामीण इलाके में व पीएलजीए (जनसेना) में पार्टी के युवा नेतृत्व एवं सदस्यों को भेजा जाय, ताकि कुछ राजनीतिक, हस्तशिल्पी एवं तकनीकी क्षमताएं वहां बढ़ाया जाय।

हमने लगातार योजना के तहत सैद्धांतिक संगठितीकरण को जारी रखना

नेतृत्व प्रदान करती है। उसने विभिन्न निर्माणों एवं आंदोलनों का समन्वय करती है। दूसरा हथियार जनसेना-जनयुद्ध (सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन)। ये उच्च सांगठनिक एवं संघर्ष के रूप हैं। तीसरा हथियार संयुक्तमोर्चा। यह लाखो-करोड़ो जनता को क्रांति में गोलबंद करने, क्रांतिकारी युद्ध में या साम्राज्यवादियों के दुराक्रमण के खिलाफ लड़ने वाले देशभक्त युद्ध में दुश्मन को अलगाव में डाल कर, कमजोर कर एवं उन्हें नुकसान पहुंचाने के लिए विभिन्न प्रकार के संयुक्तमोर्चा के तरीके को बहुत ही चलाकी से सामने लाती है।

क्रांतिकारी आंदोलन में बड़ी सफलताएं हासिल करने के लिए हमारी पार्टी को विस्तारित व संगठित करना चाहिए। विभिन्न स्तरों में पार्टी को विस्तारित करने के लक्ष्य से हमने भर्ती से संबंधित व्यावहारिक योजना तैयार करनी चाहिए। पार्टी को संगठित करने के लक्ष्य से सही शिक्षा योजना तैयार करनी चाहिए। पार्टी में सर्वहारा से, खेतिहर मजदूर एवं गरीब किसानों से, अर्धश्रमिकों से, मुख्य उत्पीड़ित वर्ग व तबके के रूप में रहे महिलाओं, दलितों, आदिवासियों व धार्मिक अल्पसंख्यकों के पुरोगामी शक्तियों से भर्ती करने पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उनसे पार्टी के नेतृत्व को विकसित करना चाहिए। पार्टी का विस्तारित करने का मतलब है शहरों, मैदानी, वनांचल-ग्रामीण इलाकों में रहे विभिन्न क्रांतिकारी जनसंगठनों (मजदूर, किसान, छात्र, युवा, महिला, बुद्धिजीवी आदि संगठनों) से एवं पीएलजीए (जनसेना) से योग्यता-प्राप्त कामरेडो को उम्मीदवार सदस्यों के रूप में भर्ती करना। पार्टी को संगठित करने का मतलब है सही समय में उम्मीदवार सदस्यों को पूर्ण-रूप पार्टी सदस्यों के रूप में पदोन्नति देना। इसके लिए उम्मीदवारों के रूप में रहते समय में ही पार्टी प्राथमिक पाठ्यक्रम में उनकी (प्राथमिक पार्टी यूनिटों, ग्राम/फैक्टरी, बस्ती, कालेजी पार्टी कमेटियों को) शिक्षा पूरा करना, ताकि पार्टी प्राथमिक यूनिटों में उन्हें और सक्रिय किया जा सके एवं जिम्मेदारियां सौंपा जा सके। पूरोगामी जन कार्यकर्ताओं को सही समय में पार्टी में पेशेवर क्रांतिकारियों के रूप में भर्ती करना चाहिए। ऊपर से नजदीकी मार्गदर्शन देते हुए सैद्धांतिक शिक्षा सही तरीके से एवं सही समय पर देने से पार्टी के नेतृत्वकारी एवं सदस्य और ज्ञानप्राप्त कर सकते हैं, निर्णायक एवं अनुभव-प्राप्त कामरेडों के रूप में उभर सकते हैं। वे अपने राजनीतिक एवं सांगठनिक कार्य तहेदिल से, जुझारू रूप से एवं सक्षम तरीके से निभा सकते हैं। अन्यथा सभी प्रकार का कार्य नुकसान होता है। रोजमर्रा के कामों में डूब जाने की वजह से सैद्धांतिक शिक्षा नजरअंदाज किया जा रहा

लाइनों का समृद्ध बनाया। मालेमा की रोशनी में पार्टी अपनी कमी-कमजोरियों को पहचान कर शुद्धीकरण अभियान चलाया।

इस तरह 50 सालों से भाकपा (माओवादी) गठित होकर, कई ज्वार-भाटों, कष्ट-तकलीफों, गंभीर नुकसानों व पीछे-हटों के साथ आगे बढ़ी। उसने लहरों की तरह आगे बढ़ते हुए दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए नवजनवादी क्रांति को जारी रखकर भारत के मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग आदि उत्पीड़ित जनता एवं उत्पीड़ित तबकों को नेतृत्व प्रदान करने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। एक एक समय उसने बड़े छलांग लगाते हुए, उच्च एवं उल्लेखनीय जीत भी हासिल की। भारत के प्रतिक्रियावादी दलाल नौकरशाह पूंजीपति एवं सामंती शासक वर्गों ने साम्राज्यवादियों के हितों, अपने हितों को पूरा करने के लिए लगातार एवं पूर्ण स्तर पर किये जाने वाले प्रतिक्रांतिकारी हमलों का हमारी पार्टी ने जनता की मदद से जनयुद्ध के जरिए सामना करते हुए आगे बढ़ रही है।

इसलिए भाकपा (माओवादी) की 15वीं स्थापना वर्षगांठ समारोहों को भाकपा (मा-ले) एवं एमसीसी के विरासि के तौर पर उन पार्टियों के 50वीं स्थापना दिवसों के साथ जोड़कर आयोजित करना चाहिए। इन वर्षगांठ समारोहों का विशेषता को ध्यान में रखकर, 21 सितंबर से 8 नवंबर तक आयोजित करना चाहिए। इसी समय में 1 अक्टूबर को जनचीनी क्रांति की 70वीं वर्षगांठ का आयोजित करना चाहिए।

हमारी पार्टी की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर मालेमा की रोशनी में पार्टी का उज्वल इतिहास का अध्ययन में हमारी पार्टी ने ऊपर से नीचे तक पार्टी के सभी कमेटियां एवं यूनिटें शामिल होने एवं बहुत ही खून बहाकर आर्जित हमारे समृद्ध अनुभवों से सुशिक्षित होने हमारी केंद्रीय कमेटी आह्वान करती है। नवजनवादी क्रांति सफल बनाने वाली, उसके बाद समाजवाद-साम्यवाद को स्थापित करने वाली भविष्य लक्ष्य के साथ हमारी पार्टी ने अपने अनुभव से प्राप्त अथक एवं वीरोचित लड़ाकू स्फूर्ति के साथ इन वर्षगांठ समारोहों को सफल बनाने का आह्वान करती है। इस अवसर पर विगत 50 वर्षों में क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा हासिल सफलताओं को ग्राम स्तर से लेकर देशभर में पर्चों, पोस्टरों, बैनरों एवं बुकलेटों द्वारा, सांस्कृतिक प्रदर्शनों द्वारा प्रचारित-प्रसारित करने, रैलियों, जनसभाओं, संगोष्ठियों, फोटो एवं कला प्रदर्शनों को बड़े पैमाने पर आयोजित करने एवं कम्युनिज्म अपराजित है के संदेश को प्रचारित-प्रसारित

करने का अपील करती है।

विगत 50 वर्षों में हमारा देश में नवजनवादी क्रांति, अंत में विश्वभर में समाजवाद-साम्यवाद को सफल बनाने के लक्ष्य से सैकड़ो नेतृत्वकारी कामरेड, हजारों पार्टी सदस्यों एवं कई हजार क्रांतिकारी जनता शहीद हुए। विगत एक साल में ही 115 कामरेड शहीद हुए। इसमें 40 महिला कामरेड थी। पार्टी की 50वीं वर्षगांठ समारोहों के अवसर पर भारतीय क्रांति के महान नेता, पार्टी संस्थापक एवं शिक्षक कामरेड चारू मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी सहित जनता के लिए अपनी सबकुछ देकर, अपनी अंतिम सांस तक पार्टी एवं क्रांति के लिए सेवा किए क्रांतिकारी वीरों एवं वीरांगनओं तथा अमर शहीदों को कोटि-कोटि क्रांतिकारी अभिवादन पेश करें! इसी अवसर पर विश्व समाजवादी क्रांति को जीतने के लक्ष्य से विभिन्न देशों के माओवादी पार्टियों एवं संगठनों के नेतृत्व में जारी आंदोलनों में अपने जान न्योछावर करने वाले वीरयोद्धाओं को हमारी केंद्रीय कमेटी क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करती है। शहीदों की निष्ठा एवं आत्मबलिदान की चेतना के परिणास्वरूप ही भारतीय जनता के क्रांतिकारी सफलताएं संभव हो पायी हैं। आइये! उनकी आदर्शों से स्फूर्ति हासिल करें एवं उनकी निस्वार्थ त्याग स्फूर्ति का अनुसारण करें!

प्रतिक्रियावादियों एवं विश्वासघातियों ने लगातार यह कहते हुए जनता एवं क्रांतिकारी शक्तियों का निष्क्रिय करने का विफल प्रयास कर रहा है कि माओवादी पार्टी ने दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए नवजनवादी क्रांति जारी रखा है, किंतु 50 सालों के बाद भी पूर्ण जीत हासिल नहीं कर पायी। उन्होंने इस सच्चायी पर परदा डालने चाहते हैं कि भारतवर्ष में मौजूदा अर्ध-औपनिशेविक एवं अर्ध-सामंती व्यवस्था लगातार सड़-गल रही है। दरअसल कालग्रस्त इस व्यवस्था मरणावस्था में है, उसे नवजनवादी क्रांति के जरिए जड़ से उखाड़कर नयी व्यवस्था को स्थापित करनी चाहिए।

इस अवसर पर हमारी पार्टी ने वर्तमान मौजूदा अपनी शक्ति एवं हासिल किए गए सफलताओं को बरकरार रखते हुए, अनुकूल वस्तुगत अंतरराष्ट्रीय एवं देशीय परिस्थितियों को इस्तेमाल करते हुए आगामी वर्षों में अपनी ताकत को बढ़ने एवं बड़ी सफलताएं हासिल करने हेतु अपनी कार्य को पुन:सांचे में डालने के लिए और निष्ठा से प्रयास करना होगा।

सशस्त्र कृषि क्रांति की धुरी पर नवजनवादी क्रांति के लाइन के अनुसार

व्यापक उत्पीड़ित जनता को जागरूक करना, गोलबंद करना एवं संगठित करना, जुझारू रूप से उतारने द्वारा ही भारतीय क्रांति में पार्टी के नेतृत्वकारी अपनी असलियत एवं दक्षता को साबित कर सकती है। नेतृत्व की इस दक्षता व्यापक तौर पर जनता को राजनीतिक पटल पर लाने में, पीएलजीए द्वारा संचालित कार्यनीतिक जवाबी हमलों (एम्बुश व रेड आदि) में, गैर-कानूनी व कानूनी जनवादी आंदोलनों में ही बहुत हद तक प्रकट होती है। ये हमारी आत्मगत शक्तियों को और मजबूत करती हैं एवं दुश्मन को और कमजोर करती हैं। इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा हासिल सफलताओं का पार्टी, जनसेना (पीएलजीए) एवं विभिन्न क्रांतिकारी जनसंगठनों-राजनीतिक सत्ता के इकाइयों का गठित करने, विस्तारित करने, संगठित करने से, जनांदोलनों एवं गुरिल्ला युद्ध का विकास करने से, आंदोलन के इलाकों का विस्तारित करने से तुलना करना चाहिए। सशस्त्र क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए जनसेना एवं जनयुद्ध अनिवार्य है। उनमें ऐसी विशिष्ठ लक्षण निहित हैं एवं उन्होंने ऐसी विशिष्ठ भूमिका अदा करते हैं। क्रांतिकारी आंदोलन में भारी संख्या में जनता को गोलबंद करने एवं दुश्मन पर लड़कर जीत हासिल करने के लिए वे जरूरी है।

50वीं वर्षगांठ के अवसर पर पार्टी की संगठितीकरण (consolidation) अभियान को ऊपर से नीचे तक सभी स्तरों के कमेटियां लेनी चाहिए। अपने दायरे में पार्टी निर्माणों पर गहराई से चर्चा कर उन्हें मजबूत करने के लिए जरूरी निर्णय लेना चाहिए। पार्टी में जो गैरसर्वहारा रुझान व गलतियां जारी है, इस नेपथ्य में पार्टी में सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक एवं सांगठनिक स्तर तथा कम्युनिस्ट मूल्यों को बढ़ाकर गैरसर्वहारा रुझानों को सुधारने के लक्ष्य से एवं नुकसानों को न्यूनतम स्तर तक घटाने के लक्ष्य से इस अभियान को सफलतापूर्वक संचालित करने सीसी अपील करती है।

कालग्रस्त भारतीय अर्ध-औपनिवेशिक एवं अर्ध-सामंती व्यवस्था के खिलाफ हमारी पार्टी ने अगर दीर्घकालीन लोकयुद्ध का रणनीतिक लाइन को लागू करते हुए नवजनवादी क्रांति में जीत हासिल करना चाहती है तो, उसने तीन जादुई हथियारों का जनता को जागरूक करने, गोलबंद करने एवं संगठित करने तथा दुश्मन को हराने के लिए निपुणता से इस्तेमाल करना चाहिए।

पहला हथियार भाकपा (माओवादी)। वह सर्वहारा का अगवा दस्ता है। पार्टी ने जनसेना-जनयुद्ध का, संयुक्तमार्चा-व्यापक जनांदोलन का एवं सभी क्षेत्रों का

नेतृत्व देने वाले कामरेड हैं जिनके अंदर नेतृत्व के साथ कामरेडों या कार्यकर्ताओं के बीच के संबंध को दोस्तनामूलक व कार्यकर्ताओं को धरातल पर उतारने की निर्धारक शक्ति के बजाय गुरू व शिष्य के बतौर देखने का सामंती नजरिया मौजूद है। फलस्वरूप, कार्यक्रमों में नकारात्मक उपलब्धियां हासिल होना अनिवार्य होता है। पुन: पार्टी द्वारा निर्धारित निश्चित समय-सीमा के अंदर तयशुदा निश्चित कार्यक्रमों को पूरा करना तब-ही संभव है, जब इसके लिए कार्यकर्ताओं को ही निर्धारक शक्ति मानकर उनके साथ घनिष्ठ दोस्ताना संबंध स्थापित करते हुए उसे उस रूप से शिक्षित-प्रशिक्षित किया जाएगा। इसलिए हमारे महान शिक्षकों ने सिखाया है कि कार्यकर्ताओं के साथ ज्यादा समय व्यतीत करें तथा कार्यकर्ताओं के बीच ही रहें और व्यापक राजनीतिक चर्चा चलाते हुए एक राजनीतिक माहौल को तैयार करें।

एकताबद्ध भाकपा (माओवादी) को लगातार शक्तिशाली करने के लिए पार्टी के ओजस्वीपूर्ण स्पीरिट को हर हालत में ऊंचा उठाए रखें

पिछले कई दशकों से जारी क्रांतिकारी वर्ग-संघर्ष की भट्ठी में तपी-तपायी हमारी पार्टी आज पूरे भारत के राजनीतिक-जीवन में एक महत्वपूर्ण ताकत के रूप में उभरकर सामने आयी है। फिर भी हमें कई प्रकार की चुनौतियों को झेलना पड़ रहा है और ऐतिहासिक मंजिल तक जाने के मिशन के सामने कष्टकर व टेढ़े-मेढ़े रास्ते के अंदर से गुजरना पड़ रहा है। इसीलिए विचारधारा, राजनीतिक गतिविधि और संगठन को पहले की अपेक्षा ज्यादा सुसम्बद्ध व अनुशासित करने की बोल्शेवीकरण की प्रक्रिया को लगातार जारी रखना हमारा फर्ज है। पार्टी को और ठोस व सुसम्बद्ध करने के लिए तमाम पार्टी सदस्य, कार्यकर्ता व कतारों को चाहिए कि वे अपने पार्टी-स्पीरिट को और बुलंद करें, अपने हित को पूरी पार्टी के हित के मातहत रखें, विभिन्न पार्टी-सांगठनिक इकाइयों को पूरी पार्टी के हित के मातहत रखें ताकि हमारी पार्टी एक समग्र मानव शरीर जैसा ठोस बन जाए। फिर भी, चूंकि हमारी पार्टी ज्यादा हद तक ग्रामीण क्षेत्र पर आधारित है, जहां बहुत बड़ा क्षेत्र में कृषि-क्रांतिकारी गुरिल्ला

की एकता एवं एकताबद्ध संघर्षों की आवश्यकता को मजबूती से उजागर कर रही है। आगामी समय में नवजनवादी एवं समाजवादी क्रांतियों को पुनर्जीवित करने हेतु सर्वहारा का नेतृत्व प्रदान करने की स्थिति बढ़ रही है। इस अनुकूल स्थिति का इस्तेमाल कर सभी देशों के सर्वहारा की क्रांतिकारी शक्तियां सैद्धांतिक, राजनीतिक एवं सांगठनिक रूप से मजबूत होते हुए साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष का नेतृत्व प्रदान करने की आवश्यकता है। इन्होंने विश्वजनीन मालेमा सिद्धांत को लगातार अध्ययन करना चाहिए। अपने देशों के क्रांतिकारी विशिष्ट लक्षणों का विश्लेषण करने एवं मान्यता देकर ठोस परिस्थितियों से मालेमा को सृजनात्मक रूप से जोड़ना चाहिए।

विश्व पूंजीवादी संकट हमारे देश को तीव्र रूप से प्रभावित किया है। दूसरी बार सत्ता पर काबिज ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी मोदी सरकार ने साम्राज्यवाद-प्रायोजित एवं देश शासक वर्ग अनुकूल एजेंडे को लेकर आक्रामक रूप से बढ़ रही है। विदेशी कर्ज एवं विदेशी पूंजी आकर्षित करने के लिए देश की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह उदारीकरण करने के तर्ज पर वह काम कर रही है। उससे लागू नीतियों की वजह से हमारे देश साम्राज्यवादियों का और पराधीन होता जा रहा है। देश की जनता का भविष्य दिन-ब-दिन खतरे में पड़ रहा है। व्यापार घाटा बढ़ रहा है, कर्जों पर वह बेहद निर्भर है तथा अनुत्पादक खर्च बढ़ रहे हैं, देश के प्राकृतिक संसाधनों का साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियां का लूट बेहद बढ़ रही है, भ्रष्टाचार बढ़ रही है, फलत: देश में जनता की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां बदतर होती जा रही हैं। आर्थिक असमानताएं गंभीर स्तर तक पहुंच गयी हैं। देश में 9 धनाड्यों की संपदा देश में निचले स्तर के आधी आबादी की संपदा से बराबर है। मोदी सरकार की आर्थिक नीतियां अमीर को अमीर गरीब को और गरीब करने की दुष्ट-चक्र में धकेल रही हैं।

भारत की अर्ध-औपनिवेशिक एवं अर्ध-सामंती व्यवस्था में अधिकतर खेतिहर मजदूर-गरीब किसानों को जमीन नहीं मिलने, बेरोजगारी बढ़ने, वास्तविक वेतन घट जाने, जीवनव्यय बढ़ जाने, गरीबी, भुखमरी, बीमारी बेहद व्यापक हो जाने, कुल मिलाकर सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां बदतर हो जाने की वजह से जनता तंगहाली में पिस रही है। भूमंडलीकरण ने हमारे देश की ग्रामीण-कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था पर विध्वंस मचा रही है। किसान बेहाल है। किसानों की आत्महत्याएं थमने का नाम नहीं ले रहा है। कृषि बाजार पर एकाधिकार चला रहे बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं उनके दलालों ने 'कारपोरेट खेती'

एवं 'ठेका खेती' को विस्तार कर रहे हैं। कारपोरेट हितों के लिए लाखों आदिवासी-गैर-आदिवासी किसानों को विस्थापित कर रहे हैं। यही मोदी सरकार की नयी कृषि नीति का सार है। किसानों, क्रांतिकारी एवं जनवादी किसान संगठनों तथा किसान हितैषियों का हमारी पार्टी का आह्वान है कि इस 'कारपोरेट विकास नमूने' पर निर्भर नीतियों जो कृषि क्षेत्र को कभी नहीं उबरने वाले संकट में धकेल रही हैं, का भंडाफोड़ करते हुए सामंत-विरोधी, साम्राज्यवाद-कारपोरेट-विरोध ी संघर्षों को तेज करें, इसके तहत जोतने वालों को जमीन मुफ्त बांटने की मांग को मुख्य रूप से उठायें।

हमारे देश पर साम्राज्यवादियों के वित्तीय हमले दो तरीके से हो रहे हैं। पहला, साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थाओं के जरिए विदेशी पूंजी द्वारा प्रत्यक्ष हमला। दूसरा, साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सांठगांठ होकर देश के दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों द्वारा परोक्ष हमला। दोनों मामलों में भारतीय दलाल शासक वर्गों के अभिन्न हिस्से के तौर पर एजेंटों के रूप में रहे प्रधानमंत्रियों, मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों एवं उच्च अधिकारियों, राजनीतिक, बौद्धिक एवं अन्य क्षेत्रों के एजेंटों ने मार्ग सुगम बना रहे हैं।

भूमंडलीकरण युग में जनता पर अपने शोषण व उत्पीड़न को और तेज करने के लिए फासीवादी सरकारों से अनछूये एवं उदारीकरण से परे कोई कानून नहीं है। ये सिलसिला बेरोकटोक जारी है। लोकसभा एवं विधानसभाओं के सदस्य कोई भी हो, किसी भी पार्टी के हो बेवजह सिर्फ छोटे-छोटे मसलों पर ही शोर मचाते हैं। ऐसा इसलिए करते हैं कि अपनी देशद्रोही कारतूतों पर परदा डाल सके। किंतु साम्राज्यवादियों, दलाल शोषक-शासक वर्गों के हितों को पूरा करने वाले विधेयकों को उनके आदेशों के मुताबिक किसी भी चर्चा के बिना, कोई भी समझे बिना शीघ्र पारित किया जाता है। इसी तरह न्यापालिका भी विदेशी एवं दलाल वित्तीय पूंजी का साधन के रूप में इस्तेमाल होते हुए मजदूरों, किसानों, छोटे उद्योगपतियों, महिलाओं, दलितों, आदिवासियों एवं मानवाधिकार व जन कल्याण पर भी प्रतिक्रियावादी फैसले सुना रही है। यानी कानूनसभाएं, शासनतंत्र एवं न्यायपालिका - तीनों ने साम्राज्यवादियों एवं दलाल शासक वर्गों के हितों के लिए आक्रामक रूप से काम कर रही हैं।

मोदी सरकार दूसरी बार सत्ता पर काबिज होने के बाद पहला बजट में देश को 2025 तक 5 लाख करोड़ डालर अर्थव्यवस्था एवं विश्व में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में बदलने पर सिर्फ लफ्फाजी बात कर रही है। इसके

क्रमश: महत्वपूर्ण कमेटियों में जाते हैं, वैसे-वैसे कमेटी की मीटिंग-सीटिंग में ही ज्यादा समय देते रहने के कारण जब कुछ क्रांति-विरोधी विचारधारात्मक व राजनीतिक लाइन सामने आ जाती है तब ठीक से उक्त लाइन का विरोध करने व उसके खिलाफ सैद्धांतिक-राजनीतिक संघर्ष चलाने में अक्षम हो जाते हैं और असहाय लगने लगते हैं, बीच नदी में नाव डुबने जैसा लगने लगता है, तब उनके अंदर अनुभववादी विचारों की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

चूंकि हमारी पार्टी के ज्यादातर कामरेड अनपढ़ हैं, अत: इसे ठीक करने के लिए जरूरी है कि सिद्धांत को मौजूदा व्यावहारिक समस्याओं के हल के उद्देश्य से ज्यादा से ज्यादा ध्यान देकर अध्ययन किया जाए। साथ-ही किताबी ज्ञान रखनेवाले कामरेडों को व्यवहार के साथ युक्त करने पर विशेष ध्यान दिया जाए। ऐसा कर पाने से नेतृत्व की पद्धति में पहले से कुछ ज्यादा बेहतरी जरूर आएगी।

कार्यकर्ताओं के साथ ज्यादा मिलना-जुलना व एकात्म होना तथा एक-दूसरे को समझना बहुत जरूरी है

हमें भलीभांति मालूम है कि पार्टी द्वारा लाइन-नीति व कार्यक्रमों का निर्धारण के बाद उसे कार्यान्वयन के लिए कार्यकर्ता निर्धारक शक्ति होते हैं। इसीलिए नेतृत्व को चाहिए कि कार्यकर्ताओं के साथ उक्त निर्धारित कार्यक्रमों को अमलीजामा पहनाने के लिए उससे संबंधित प्रत्येक पहलू को लेकर व्यापक चर्चा चलाकर तथा किस प्रकार की कार्यशैली अपनानी होगी उसे साफ तौर पर समझाने का तरीका ग्रहण करें। ऐसा न कर कार्यकर्ताओं को केवल 'उक्त काम करना होगा' कहना तो बिल्कुल सही नहीं है, यह है हुक्मवादी या फरमानशाही तरीका, जबकि ग्रहण करना होगा जनवादी तरीका, समझाने-बुझाने का तरीका। आखिर में हुक्मवादी तरीका अपनाने के कारण जब उक्त कामकाजों की समीक्षा की जाएगी तब नतीजा को निर्धारित लक्ष्य हासिल करने में असफलता ही हाथ लगेगी। यही एक बुनियादी कारण है जिससे वास्तविक कामकाजों में आगे बढ़ने के बजाय पीछे हटना पड़ता है, कठिन स्थिति में फंस जाना पड़ता है। फिर भी हमारे कुछ नेतृत्वकारी कामरेड उसी फरमानशाही तरीके को लाना ही पसंद करते हैं। बाद में असफल होने से कार्यकर्ताओं को ही जिम्मेदार ठहराते हैं। कोई-कोई

व आंदोलन को दुश्मन की कठिन चुनौती का मुकाबला कर आगे बढ़ने में प्रयासरत हैं, तब हमारे लिए पार्टी नेतृत्व की पद्धति को और उन्नत, सक्रिय व कारगर बनाना एक आवश्यक शर्त है। इसलिए निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना जरूरी है, वे हैं : एम-एल-एम पर नेतृत्व की समझदारी को और बढ़ाना होगा। : चूंकि मा-ले-मा रटने वाली चीज नहीं है, बल्कि एक गतिशील विज्ञान व मार्गदर्शक सिद्धांत है, इसलिए इस मार्गदर्शक सिद्धांत पर, उपरी तौर पर नहीं, बल्कि एक गहरी समझ रखने की जरूरत है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सिद्धांत व व्यवहार के बीच अच्छा तालमेल स्थापित करना होगा। सिद्धांत पर पकड़ केवल एक-दो लेखों का अध्ययन करने मात्र से ही नहीं आता बल्कि, समस्याओं के हल के साथ जोड़कर अध्ययन करने से कुछ पकड़ बढ़ेगी ही। पर, हकीकत बात तो यही है कि उक्त प्रक्रिया पर हमारा ध्यान बहुत-ही हल्के प्रकार के हैं। मा-ले-मा पर इतना हल्का व ऊपरी तौर पर ज्ञान रहने से किसी भी सूरत से हम विभिन्न संशोधनवादी, उत्तर आधुनिकतावादी, भटकाववादी व क्रांति-विरोधी विचारों के खिलाफ कारगर सैद्धांतिक व राजनीतिक संघर्ष चलाने में अक्षम साबित होंगे। अत: समस्याओं के हल के उद्देश्य के साथ जोड़कर मा-ले-मा का लगातार अध्ययन करते रहना पार्टी को हर प्रकार से और बोल्शेवीकरण करने खातिर निहायत जरूरी है।

लेकिन, विपरीत में, कुछ कामरेडों के अंदर ऐसी भावना का अस्तित्व दिखाई देता है, जैसे- मैं मालेमा संबंधी सिद्धांत बहुत पढ़ता हूँ, जानता हूँ, कार्यकर्ताओं के अंदर मालेमा की तो समझ ही नहीं है, फिर भी उन्हें ही पार्टी कमेटियों के विभिन्न नेतृत्वकारी पद पर लिया जाता है जबकि मुझे नहीं लिया जाता, वगैरह-वगैरह। असल में सिद्धांत की समझदारी के बारे में उपरोक्त सारी बातें किताबी ज्ञान की ही अभिव्यक्ति है, जो बहुत-ही ऊपरी तौर का व हल्का होता है। खासकर, निम्न-पूंजीपति वर्ग आधारित किसी-किसी बुद्धिजीवी कामरेडों के अंदर ऐसी भावनाओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। फिर, भूमिहीन गरीब, आदिवासी व दलित से आए हुए कामरेड, जो अकसर अनपढ़ होते हैं ऐसे उनके अंदर सिद्धांत का अध्ययन करने की उतनी दिलचस्पी नहीं दिखाई देती। वे व्यवहार पर ही बहुत ज्यादा दिलचस्पी दिखाते हैं। जैसे-जैसे वे

लिए उसने 8 फीसदी जीडीपी वृद्धि हासिल करने की जो बात कर रही है, वह सरासर झूट है। इस बजट जनता पर कर-भार बढ़ाकर, देश अर्थव्यवस्था को 'मेक इन इंडिया' के नाम पर पूरी तरह बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं देश के बड़े पूंजीपतियों के निवेशों व शोषण का अड्डा बनाता है, इसके बजाय उसने जनता को गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, आत्महत्याओं एवं खतरनाक बीमारियों से थोड़ा भी राहत नहीं दे सकता। उदाहरण के लिए, बीमारियों से शिकार होकर सैकड़ों बच्चों की मृत्यु का कारण बने पौष्टिक आहार की कमी को दूर करने के लिए बजट में कोई भी योजना/प्रावधान नहीं है। किसान बजट के नाम किसानों का आय दोगुणी करने, इसके लिए कृषि क्षेत्र के बुनियादी ढांचे पर अपने ध्यान केंद्रित करने का बात सिर्फ डींग मारने तक सीमित है जो मोदी-1 की शासन में ही साबित हो चुकी है। किसान सम्मान योजना अन्नदाताओं का भिखारियों के रूप में तब्दील कर दिया है। महिलाओं, दलितों, आदिवासियों, मुस्लिमों आदि उत्पीड़ित तबकों के समस्याओं के लिए इस बजट में कोई भी राहत नहीं है। अमीरों पर कर लगाने के नाम पर मोदी सरकार ने 500 करोड़ रूपये संपत्ति होने वालों पर प्रति रुपये सिर्फ 2 पैसे, 1000 करोड़ संपत्ति होने वालों पर प्रति रुपये सिर्फ 3 पैसे कर लगाया। यही है मोदी बजट का स्वरूप।

दूसरी तरफ केंद्र सरकार ने क्रांतिकारी आंदोलनों, राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलनों एवं जनवादी आंदोलनों को सफाया करने के लिए एवं विस्तारवादी हितों के लिए रक्षा बजट में भारी वृद्धि की है। शिक्षा, स्वास्थ्य आदि जन कल्याण योजनाओं एवं सेवाओं के लिए राशि घटायी या तो नाम के वास्ते कर दी। केंद्र से ग्राम स्तर तक निरंकुश नौकरशाही में भ्रष्टाचार बेहद गंभीर हो गयी है। अर्ध-रोजगार पाने वालों में दरअसल अधिकतर बेरोजगार ही हैं। बेरोजगारी अपनी उच्चतम स्तर पर पहुंच गयी है।

मजदूरों, किसानों एवं मध्यम वर्ग के लोगों का वास्तविक वेतन का मूल्य घट रही है। उसी समय में उत्पादन में मंदी के कारण चीजों एवं सेवाओं में कमी आ रही है। व्यापक गरीबी, बार-बार फैलने वाली संक्रामक बीमारियां, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, सरकारी स्कूली व्यवस्था जर्जर हो जाना, पर्यावरण ध्वस्त हो जाना, पानी की किल्लत, लगातार बिजली में कटौती सहित शहरी बुनियादी सुविधाएं लड़खड़ाने की वजह से जनता की जीवन स्तर घट रही है। साम्राज्यवादियों एवं उनके बड़े दलाल-सामंती एजेंटों ने कई तरीकों से पर्यावरण को लगातार नुकसान पहुंचा रहे हैं। वनों की विध्वंस की दर बढ़ रही है। अक्सर बाढ़ एवं

अकाल, भूक्षारण, भूगर्भ-जलों का विध्वंस, जैविक विविधता लुप्त हो जाना, नदियां सूख जाना, मछली शिकार बेहद घट जाना आदि पहले से ही जनता की जीवन में भारी तबाही मचा रही है।

दूसरी बार सत्ता पर काबिज होने वाली ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी मोदी सरकार का मुख्य एजेंडा यही है कि साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं देश के दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों व सामंतियों के हितों को पूरा करना, इसके लिए देश में 'ब्राह्मणीय हिंदू राज्य' यानी फासीवादी राज्य की स्थापना। एक भारत, श्रेष्ठ भारत एवं नया भारत निर्माण के नाम पर उसके द्वारा प्रस्तावित 'हिंदू राज्य' - देश के उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित तबकों एवं उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के लिए पूरी तरह खिलाफ है। वह सत्ता में आकर दो महीने भी नहीं हुआ, देशभर में हमारे आंदोलनों के इलाकों पर सरकारी सशस्त्र बलो के क्रूर हमलें, मुस्लिमों, दलितों, महिलाओं, आदिवासियों पर, कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व के उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं पर ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी हमले तेज हो गयीं। संसद में भी 'जय श्रीराम' का नारा गूंज रहा है। मुस्लिमों को देखते ही अपमानित कर रहे हैं, 'जय श्रीराम', 'भारत माता की जय' के नारे कहने का हुकुम देते हुए मारपीट कर रहे हैं, 'भीड़ की हत्याएं' (मोब लिंचिंग) कर रहे हैं, 'गोरक्षा' के नाम पर मुस्लिमों, दलितों एवं आदिवासियों को हत्या करना, दलितों एवं आदिवासियों को जाति के नाम पर गालियां देकर अपमानित करना, जान से जला देना, आत्महत्या करने पर मजबूर करना, अपने हुकुम लागू नहीं करने एवं उन्हें सहयोग नहीं करने वाले सरकारी कर्मचारियों पर हमले करना 'नया मनु' की शासन में आम बात बन गयी। कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व राष्ट्रीयताओं के जनता पर सरकारी सशस्त्र बल सीधा युद्ध ही चला रहे हैं। मोदी सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून लाकर असम में लाखों लोगों को अनिश्चितता एवं असुरक्षा की स्थिति में धकेल दिया, हजारों लोगों को जेल जैसे कारा शिविरों में बंदी बनाया, इसके अलावा अभी तक 50 लोग आत्म'हत्याएं' करने की स्थिति पैदा की। सरकारी सशस्त्र बलों के मदद से उत्तर-पूर्व इलाके में दिन-ब-दिन हिंदू फासीवादी शक्तियों की कारनामे बढ़ रहे हैं। उपा, अफ्सपा जैसे फासीवादी कानूनों को टाडा से भी निरंकुश बनाया। इस तरह के कानूनों एवं राज्यहिंसा के खिलाफ देशभर में जारी जनांदोलनों को एवं क्रांतिकारी, जनवादी तथा राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलनों के लिए प्राप्त होने वाली अंतरराष्ट्रीय समर्थन को क्रूरता से कुचलने के लक्ष्य से मोदी सरकार ने देश में आतंकवाद का सफाया करने के नाम पर 'एनआईए संशोधन

विचार और आलोचनाएं पूरी जांच-पड़ताल पर आधारित नहीं है, वे महज फिजूल की बकवास है।''

इसीलिए, किसी भी आरोप को पेश करते समय वह तथ्यों पर आधारित होना चाहिए, ताकि तथ्यों के आधार पर सत्य को खोजा जा सकता है। बिना तथ्य के किसी के खिलाफ किसी ने कोई आरोप लगाया हो तो ऐसा प्रमाणित होने पर आरोप लगानेवाले व्यक्ति की मंशा या नीयत पर जांच-पड़ताल होनी चाहिए तथा उस पर आधारित होकर उचित कार्रवाई भी करनी चाहिए। इसके अलावे किसी अंतरविरोध के दोनों पहलुओं की विशिष्टताओं को समझने के महत्व पर कामरेड माओ ने युद्ध-विज्ञान के सवाल पर सुन-उ-चि की एक बात ''दुश्मन को पहचानो और खुद अपने को पहचानो, तभी तुम हार का खतरा उठाए बिना सैकड़ों लड़ाइयां लड़ सकते हो'' अकसर कहा करते थे। ताकि एकांगीपन की गलती से बचा जा सके। फिर, एकांगीपन से बचने के लिए और एक बात का भी, जो च्यांग वंश के वेई चांग ने कहा था ''दोनों पक्षों की बात सुनने से तुम्हारी समझ बढ़ती है, जबकि केवल एक ही पक्ष की बात पर विश्वास करने से तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है'' जिक्र किया करते थे।

उथलेपन का मतलब है न तो अंतरविरोधों को समग्रता की विशिष्टताओं पर विचार करना और न प्रत्येक अंतरविरोध के दोनों पहलुओं की विशिष्टताओं पर विचार करना; इसका मतलब है किसी वस्तु की बड़ी गहराई से छानबीन करने और बड़ी बारीकी से अध्ययन करने की आवश्यकता से इंकार करना तथा उन पर दूर से महज एक सरसरी नजर मारते ही उन्हें हल करने की कोशिश करने लग जाना। अतः धक्का खाने की मौजूदा स्थिति से सकारात्मक रूख अपनाकर बाहर आने का प्रयास करना है तो हमें अवश्य-ही उपरोक्त तमाम गलत रूझानों को व दृष्टिकोणों को सम्पूर्ण रूप से त्याग कर अपने नजरिया को बदलते हुए सही दृष्टिकोण को अपनाना होगा। तब-ही ठोस वस्तु का ठोस विश्लेषण कर अपने कार्यभारों को सफलता की ओर आगे बढ़ाने में सक्षम हो सकेंगे।

नेतृत्व की पद्धति को और उन्नत व सक्रिय करें

मौजूदा समय में जब हम पार्टी को हर तरह से बोल्शेवीकरण करते हुए पार्टी

असल में हमारे अंदर मनोगतवाद, एकांगीपन व उथलेपन काम कर रहा है। मनोगतवाद का मतलब है समस्याओं को वस्तुगत ढंग से न देखना अर्थात् उन्हें देखते समय भौतिकवादी दृष्टिकोण का इस्तेमाल न करना। उदाहरणस्वरूप, धक्का खाने की बुनियादी कारणों का अध्ययन कर एक सही आकलन के जरिए समझदारी के उच्च स्तर तक यानी धारणात्मक स्तर से बुद्धिसंगत स्तर तक पहुंचने में अक्षम साबित होते दिख रहा है। हमारे अंदर जो एकांगीपन काम कर रहा है उस एकांगीपन का मतलब है समस्याओं को सर्वांगीण रूप से न देखना। उदाहरण के लिए धक्का खाने के पीछे केवल अपना गैर-सर्वहारा रूझान को ही जिम्मेवार समझना, किन्तु अन्यान्य कारणों को नहीं समझना, केवल नकारात्मक पहलू को ही समझना, किन्तु निहित सकारात्मक पहलू को नहीं समझना, केवल प्रतिकूल पहलू को ही समझना, किन्तु अनुकूल पहलू को नहीं समझना, वगैरह-वगैरह। इसका मतलब है किसी वस्तु या विषय के अंदर निहित अंतरविरोध के दोनों पहलुओं की विशिष्टताओं को न समझना। इसी को ही कहा जाता है समस्याओं को एकांगी ढंग से देखना। एकांगीपन की समस्या पर यहां और थोड़ी चर्चा करना जरूरी है। पहले ही कहा गया है कि एकांगीपन का मतलब है, जैसा कि कामरेड माओ ने कहा है ''समस्याओं को सर्वांगीण रूप से न देखना।'' वाकई में इसका बहुत सा उदाहरण बीजे सैक के अंदर मौजूदा समय में उपजे कथित आपसी विवादों से संबंधित कुछ बातों या कुछ वाक्यों के अंदर दिखाई पड़ता है। ऐसा कि किसी एक व्यक्ति द्वारा उठायी जा रही अभी की बात अथवा किसी व्यक्ति द्वारा उठायी जा रही कई साल पूर्व की बात हो - उन सबों में ही एकांगीपन दृष्टिकोण की समस्या प्रबल रूप से दिखाई पड़ रहा है। हालांकि हम सबों को भलीभांति मालूम है कि ''बिना जांच-पड़ताल किए किसी को बोलने का हक नहीं है'' जैसी बात कामरेड माओ ने कहा। जांच-पड़ताल के महत्व पर कामरेड माओ ने और कहा कि ''जिसने जांच-पड़ताल न की हो, उसे बोलने का हक कतई हासिल नहीं हो सकता, बहुत से लोग ऐसे हैं जो 'सरकारी गाड़ी से नीचे उतरते ही' शोरगुल मचाने लगते हैं, अंधाधुंध रायजानी करने लगते हैं, किसी चीज की नुक्ताचीनी करने लगते हैं तो किसी चीज की निंदा, लेकिन दरअसल ऐसे सभी लोगों को असफलता का मुंह देखना पड़ता है। क्योंकि जो

बिल-2019', 'उपा संशोधन बिल-2019' को लायी है। केंद्र एवं राज्य मानवाधिकार आयोगों को ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी तत्वों से लपेटने, देश के उत्पीड़ित वर्गों, तबकों एवं राष्ट्रीयताओं का नाममात्र मानवाधिकार को भी कुचलने की साजिश कर 'मानवाधिकार संरक्षण संशोधन बिल-2019' को लायी है। जनवादियों एवं जनता द्वारा लड़कर हासिल किये गये 'सूचना अधिकार कानून-2005' को तबाह कर 'सूचना अधिकार कानून संशोधन बिल-2019' को लायी है। इस तरह कई निरंकुश बिल को पारित करते हुए राज्य को खुलेआम फासिजीकरण करते हुए उसने देशभर में एक बड़ी फासीवादी हमले के लिए मैदान तैयार कर रही है। सत्तारूढ़ ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी गुट ने देश में विपक्ष को भी सफाया करने की बड़े षड्यंत्र के साथ 'दल बदल विरोधी कानून' को भी कुचलते हुए कई राज्यों में विधायकों को, लोकसभा व राज्यसभा में संसदों को भी पैसों से खरीद-फरोक्त कर रही है, समझा-बुझाकर या डरा-धमकाकर उन्हें पालतू बना रही है। इस फासीवादी गुट के कारनामों के खिलाफ जनप्रतिरोध दिन-ब-दिन देशभर में विस्तारित हो रही है। इसे एकजुटता, और जुझारू एवं संगठित रूप से विकसित करने की आवश्यकता है।

हमारे आंदोलन के इलाकों में पहले से ही केंद्र एवं राज्य सरकारें (राज्यों में सत्ता में जो भी पार्टी हो) संयुक्त रूप से कार्पेट सुरक्षा व्यवस्था को और विस्तारित एवं मजबूत करते हुए 6 लाख पुलिस, अर्धसैनिक एवं कमांडो बलों को तैनात की है। जनता पर अंधाधुंध गोलीबारी करना-हत्या करना, तोपों से बमबारी करना, नरसंहारों को अंजाम देना, बड़े पैमाने पर गिरफ्तारी करना, यातना देना, झूठी मुठभेड़ों में हत्या करना, महिलाओं को अपमानित करना, अत्याचार कर-हत्या की जा रही है। गुरिल्ला बेसों को ध्वस्त कर, पीएलजीए के लिए मजबूत एवं विश्वसनीय जगहों में भारी पैमाने पर छानबीन एवं विध्वंस करने के ऑपरेशनों को अंजाम देकर जनता को बलपूर्वक विस्थापित किया जा रहा है। सरकारें देशभर में क्रांतिकारी शक्तियों, हमारी पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्तमोर्चा का सफाया करने एवं विघाटन करने के लक्ष्य से संपूर्ण चौतरफा हमलों की युद्ध-नीति के साथ कुचलने-उन्मूलन करने (नरसंहार) अभियानों (ऑपरेशनों) को अंजाम दे रही हैं। इसके तहत संपूर्ण स्तर पर मनौवैज्ञानिक युद्ध की कार्यनीति को तैयार कर लागू कर रही हैं। यानी नक्सलवादी हिंसावादी हैं, विकास विरोधी हैं, देशद्रोही हैं, जनविरोधी हैं, आदिवासियों व दलितों को हत्या कर रहे हैं, कहकर बड़े पैमाने पर दुष्प्रचार करना, आत्मसमर्पण नीति को लागू

करना, सरेंडर होने वालों को गद्दार बनाना, पुनरावास सुधार कार्यक्रम लागू करना, गद्दारों को पुलिस, अर्धसैनिक एवं कमांडो विशेष बलों में शामिल कर, जनता के खिलाफ आपराधिक हमले करना आदि। दुश्मन के भारी स्तर के सैनिक अभियानों की वजह से जनता बेहद मुश्किलों का सामना कर रही है। ये सब न सिर्फ आक्रामक रूप से दुश्मन द्वारा लागू कार्यनीति का, बल्कि उनके अंदर बढ़ती निराशा का भी संकेत है। दुश्मन के इन कार्यनीति के बारे में और जागरूक होकर, उन्हें हिम्मत से मुकाबला करने के लिए सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक, सांगठनिक एवं सांस्कृतिक रूप से और संगठित चेतना एवं एकजुटता से हमारी पार्टी, पीएलजीए, विभिन्न क्रांतिकारी जनसंगठन एवं जनसत्ता के इकाइयों तथा क्रांतिकारी जनता को तैयार होनी चाहिए।

प्रिय कामरेडो एवं जनता!

हमारे 50 वर्षों के पार्टी इतिहास को देखा जाये, तो साबित हुआ कि हमारी लाइन सही है। इस लंबे समयकाल में हमारी पार्टी ने कई उतार-चढ़ावों, मोड़ों-घुमावों का सामना करते हुए बहुमूल्य अनुभव आर्जित करते हुए पार्टी लाइन को और समृद्ध बनायी है। पार्टी बहुत ही फौलाद बन गयी। इस दौरान दुश्मन के हमले एवं पार्टी में अनुभवहीनता, गलतियों व दक्षिणपंथी, वामपंथी रुझानों के कारण आंदोलन एवं पार्टी ने जो गंभीर नुकसानों एवं पीछेहटों का सामना किया वे सभी अस्थायी ही है। हमें हमारी पार्टी लाइन पर दृढ़ता से अडिग रहकर, पार्टी एवं जनता पर विश्वास रखकर प्रयास करने से वर्तमान क्रांतिकारी आंदोलन की कठिन दौर से उबार कर, आंदोलन को आगे बढ़ा सकते हैं। इसके लिए इस विशाल अनुभव हमें बहुत ही मददगार साबित होंगी। आइये! हमें इस विशाल क्रांतिकारी अनुभव पर आधारित होकर तीन जादुई हथियारों को मजबूत करने दृढ़संकल्प के साथ प्रयास करें! अंतरराष्ट्रीय एवं देशयी स्तर पर क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियों का पूरी तरह सदुपयोग करने के लिए पहलकदमी लें! हमारे देश में नवजनवादी क्रांति को, अंत में समाजवाद-साम्यवाद को स्थापित करने के लिए उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित तबकों एवं राष्ट्रीयताओं के लोगों को मुक्ति की रास्ते पर बढ़ाएं! हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी दीर्घकालीन जनयुद्ध में लाखों-करोड़ो उत्पीड़ित-शोषित जनता को गोलबंद करते हुए जनयुद्ध को देशभर में विस्तारित करें! इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए आज हमारी पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक एवं सांगठनिक तौर पर मजबूत करें! हमारी पार्टी की 50वीं वर्षगांठ समारोहों के अवसर पर आगामी वर्षों में हमारी

प्रयास चलाना होगा। परिवर्तन को नीचे से उपर यानी नकारात्मक से सकारात्मक की ओर ले जाना होगा। पार्टी की आम लाइन यानी रणनीति-कार्यनीति, पार्टी कार्यक्रम संबंधी लाइन के साथ मजदूर-किसान सहित छात्र, युवा, महिला, बुद्धिजीवी, आदिवासी, दलित, अल्पसंख्यकों एवं राष्ट्रीयता को संगठित करने खातिर पार्टी द्वारा रेखांकित विशेष नीति व कार्यक्रमों को व्यवहार में ले जाने के लिए विशेष जोर देना होगा। इन तमाम कामों में अगर सफल होना है तो अवश्य ही हमें अपने विचारों को सुधारकर उन्हें बाहर में जो जगत का अस्तित्व यानी वस्तुस्थिति है उसके नियमों के अनुसार बना लेना होगा। हमें याद रखना है कि मार्क्सवादी दर्शन - द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की एक प्रमुख विशेषता है इसकी व्यावहारिकता। यह इस बात पर जोर देता है कि सिद्धांत व्यवहार पर निर्भर है और सिद्धांत का आधार व्यवहार है और बदले में व्यवहार की ही सेवा करता है। धक्का खाने की स्थिति से बाहर आने का निर्णय हमारी मनोगत भावनाएं नहीं करती बल्कि व्यवहार के वस्तुगत परिणाम करते हैं। अतः इन बातों को भलीभांति हमें समझना होगा और उसके अनुसार व्यवहार में लागू करना होगा।

आंदोलन धक्का खाने की समस्या का गहराई से अध्ययन करते समय मनोगतवाद, एकांगीपन और उथलेपन से बचना चाहिए

पिछले कई वर्षों से हमारी पार्टी व आंदोलन धक्का खायी हुई हालात में फंस गया है। इस हालात का अध्ययन, विश्लेषण व समीक्षा कर उससे बाहर आने के कुछ कार्यभारों को भी हमने निर्धारित किया है। उस निर्धारित कार्यभारों को व्यवहार में ले जाने की प्रक्रिया के अंदर ही हम सब शामिल हैं। फिर भी हम उतना सफल नहीं हो पा रहे हैं जितना की हमारी उम्मीद थी। इसका कारण क्या हो सकता है? इसका एक बुनियादी कारण है हमारे अंदर समस्या का अध्ययन करते समय बहुत-सा मूल्यांकन-समीक्षा व कार्यभारों के साथ एकमत होने के बावजूद मनोगतवाद, एकांगीपन व उथलेपन की स्पष्ट अभिव्यक्तियां दिखाई दे रही हैं। फलस्वरूप, उतनी सफलता नहीं मिली जितनी की मिलनी चाहिए थी।

गहरेपन से उसकी समीक्षा कर कुछ सबक लिए हैं और अपने विचारों को सुधार कर उन्हें वस्तुगत बाहरी जगत के नियमों के अनुरूप बना लेने का प्रयास किए हैं तथा इस प्रकार धक्का खायी हुई स्थिति से हम कहां तक बाहर आ पाए इसकी सच्चाई का निर्णय हमारी मनोगत भावनाएं नहीं करती बल्कि पिछले दो वर्षों के व्यवहार के वस्तुगत परिणाम करते हैं। इआरबी के अंतर्गत विभिन्न राज्य व स्पेशल एरिया में पिछले दो वर्षों के दौरान जो भी कार्यक्रम चलाया गया, उससे संबंधित बहुत-सारी रिपोर्टें प्रस्तुत हुई है। उन रिपोर्टों की गहरेपन से समीक्षा के दौरान जो निचोड़ निकल कर आया है, वह है : पार्टी को बोल्शेवीकरण के कामों में जरूर कुछ प्रगति हुई है। मतलब आम कार्यकर्ताओं के सैद्धांतिक-राजनीतिक चेतना का मान पहले की अपेक्षा थोड़ा बढ़ा है; पार्टी कमेटियों की बैठकें कुछ हद तक नियमित हुई है, गांवों में जाकर आम किसान जनता से विभिन्न विषयों पर बातचीत व चर्चा चलाने के काम पहले की अपेक्षा तथा जनता पर आधारित होकर रहने व काम करने का अभ्यास में कुछ हद तक सकारात्मक बदलाव आया है; गांव पार्टी सेल व गांव पार्टी कमेटी को नये सिरे से गठन किया जा रहा है; गैपों को कमोबेश ठीक-ठाक किया गया है तथा किया जा रहा है और विस्तार के काम में भी कुछ प्रगति दिखाई पड़ रही है; पीएलजीए की बुनियादी शक्तियों की वृद्धि के साथ-साथ कुछ प्रशिक्षण देने की कार्यशैली की शुरूआत हुई है; विभिन्न स्तरों के कमानों को गठन करने व सक्रिय करने के काम पर अधिक ख्याल रखा जाने लगा है; गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों में जो गिरावट आयी थी, उसके विपरीत में अभी दुश्मन पर जवाबी कार्रवाई करने की मानसिकता कुछ बढ़ी है; गांव-गांव व इलाके-इलाके में केकेसी का पुनर्गठन शुरू हुआ है; कुछ चुने हुए इलाके में आरपीसी के पुनर्गठन तथा कई नयी गांव व एरिया आरपीसी का गठन का काम भी आरंभ हुआ है; जन-आंदोलन व जन-संगठनों का नए सिरे से गठन व कुछ जन-मुद्दों को लेकर जनांदोलन का निर्माण का काम जारी हुआ है; इत्यादि-इत्यादि। पर, यह सब कुछ को केवल थोड़ा-बहुत मात्रात्मक परिवर्तन के रूप में देखना होगा। इसका मतलब है कि इन तमाम मात्रात्मक परिवर्तनों को गुणात्मक रूप से परिवर्तन करने खातिर प्रत्येक नेतृत्वकारी कामरेड को तथा प्रत्येक कामरेड को अथक

ताकत बढ़ाते हुए बड़ी सफलताएं हासिल करने के लिए कदम बढ़ाएं! साबित करें कि हमारे देश में ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादियों सहित विश्वभर में सभी फासीवादियों एवं प्रतिक्रियावादी सिर्फ कागजी बाघ हैं, अंत में उनकी पतन अनिवार्य है एवं अंतिम जीत उत्पीड़ित जनता की ही होगी।

☆ मजूदर, किसान, छात्र एवं बुद्धिजीवी एकता जिंदाबाद!

☆ पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्तमोर्चा जिंदाबाद!

☆ मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद जिंदाबाद!

☆ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिंदाबाद!

☆ नवजनवादी क्रांति जिंदाबाद!

☆ विश्व समाजवादी क्रांति जिंदाबाद!

क्रांतिकारी अभिवाद के साथ

केंद्रीय कमेटी

24 जुलाई, 2019 **भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)**

सरकुलर नंबरः 01/2018 (पार्टी सदस्य तक)

आवें, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद पर आधारित होकर जारी बोल्शेवीकरण की प्रक्रिया को आकांक्षित सफलता की ओर आगे बढ़ाने के लिए गंभीर प्रयास करें

- पूर्वी रीजनल ब्यूरो

भाकपा (माओवादी)

विदित है कि हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की पूर्वी रीजनल ब्यूरो (इआरबी) के मार्गदर्शन में पिछले दो वर्षों के दौरान पूरे इआरबी अंतर्गत विभिन्न राज्यों में पार्टी व आंदोलन को सेट-बैक की स्थिति से बाहर लाने का एक गंभीर प्रयास किया गया। विभिन्न राज्यों की वास्तविक स्थिति व समस्या पर गंभीर रूप से समीक्षा की गयी, पार्टी को हर तरह से बोल्शेवीकरण व जनाध ार युक्त बनाते हुए मजबूतीकरण करने, पीएलजीए में जारी कमी-कमजोरियों को दूर हटाकर हर तरह से उसे उन्नत व मजबूत करने और संयुक्त मोर्चा के बिंदु पर जारी कमियों को सुधार कर उसे पहले की अपेक्षा अधिक मजबूत करने के कार्यभारों को कहां तक कार्यरूप देने में सक्षम हो पाये हैं, उस पहलू की भी गहराई से समीक्षा की गयी। समीक्षा के दौरान जो निचोड़ बात निकल कर आई है, उस पर आधारित होकर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आंदोलन मौजूदा सेट-बैक की स्थिति से बाहर आने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ने का पहलू स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है।

ऐसी स्थिति में उक्त सकारात्मक पहलू का इस्तेमाल कर पार्टी नेतृत्व को और संगठित, सचल-सक्रिय-गतिशील व एकताबद्ध करने के लक्ष्य से बोल्शेवीकरण की प्रक्रिया को उसकी आकांक्षित मंजिल तक आगे बढ़ाने का इआरबी ने निर्णय लिया। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ही यह सरकुलर जारी किया जा रहा है। इस सरकुलर की रोशनी में व्यवहार को उन्नत करना, उच्च स्तर की बहस करने, आलोचना-आत्मालोचना करने इत्यादि पद्धतियों को पूरी पार्टी के विभिन्न

स्तरों में लागू करना होगा। पूरी पार्टी के सैद्धांतिक व राजनीतिक मान में वृद्धि करने के लक्ष्य से मुख्य रूप से नेतृत्वकारी कमेटियों को इस सरकुलर का गहन अध्ययन करने का इआरबी आह्वान करती है।

उक्त सरकुलर के मुख्य बिंदुएं निम्न प्रकार हैं:

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार दो विपरीत चीज की एकता और एक को दो में विभाजित कर देखने की बात को व्यवहार में लागू करने में हमें और माहिर होना होगा

अनुभव हमें सिखाया है कि कोई भी क्रांतिकारी कार्य के जरिए आशा के अनुरूप नतीजा पाने की अन्यतम शर्त है द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी मूलसूत्रों को व्यवहार में सटीक रूप से लागू करना। पार्टी को बोल्शेवीकरण करने के कार्यभार हो अथवा पार्टी को दोषमुक्त या गैर-सर्वहारा रूझानों से मुक्त करने के कार्यभार हो अथवा कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान (टीसीओसी) या किसी छोटी अथवा मध्यम व बड़ा किस्म की सैनिक कार्यवाही हो अथवा केकेसी-आरपीसी व नए किस्म के जन-आंदोलन का निर्माण करने के कार्यभार हो - सबकुछ में दो विपरीत तत्वों की एकता व संघर्ष के नियम और फिर एक को दो में विभाजित कर विश्लेषण करने के नियम को सटीक रूप से लागू कर पाने से तब-ही कुछ न कुछ सफलता मिल सकेगी। अगर हर कार्यभार के जरिए सकारात्मक नतीजा पाना है तो हमारे लिए जरूरी है कि क्या कार्यभार हमें सम्पन्न करना है उसे गहराई से समझना होगा और समझने के लिए विषय को उथलेपन और एकांगीपन या उपर-उपर से नहीं, बल्कि गहरेपन से व बहुमुखीपन से देखने व विश्लेषण करने की पद्धति अपनानी होगी। हमें याद रखना है कि यदि हम अपने काम में प्रत्याशित परिणाम प्राप्त करने चाहते हैं तब अवश्य-ही अपने विचारों को स्थान-काल व परिस्थिति के अनुसार वस्तुगत बाहरी जगत के अनुरूप बनाना होगा। यदि हम अपने विचार मनोगतवाद से शिकार हुए बिना इस नियमों के अनुरूप नहीं बना पाएंगे तो हम अपने व्यवहार में असफल हो जाएंगे। ऐसा नहीं कर पाना ही आंदोलन सेट-बैक की स्थिति में पहुंचने के पीछे का एक प्रमुख कारण रहा। जैसे ही हमारी आंदोलन सेट-बैक की स्थिति में चले गये तो हम

विगत 15 वर्षों में क्रांतिकारी आंदोलन के विभिन्न क्षेत्रों में हासिल सफलताओं बहुत ही महत्वपूर्ण कारणों से एक है पार्टी की सैद्धांतिक अध्ययन, सैद्धांतिक शिक्षा के मामले में हमारे द्वारा की गयी सकारात्मक प्रयास। किंतु, इसी समय में सैद्धांतिक अध्ययन, सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक शिक्षा, सामाजिक शोध, उचित शिक्षकों के टीमों को गठित कर संगठित करना, सिलाबस एवं अध्ययन सामग्री को तैयार कर उपलब्ध करना आदि मामलों में केंद्रीय कमेटी सहित अधिकतर राज्य कमेटियों द्वारा की गयी प्रयास आंशिक रूप में ही है। शिक्षा पर इस तरह के राज्यों को मार्गदर्शन देने में सीसी द्वारा की गयी प्रयास आंशिक रूप में ही है। पार्टी में अध्ययन की अवश्यकता को समझाकर पार्टी की जीवन में अध्ययन को अत्यंत महत्व रखने वाली एक कम्युनिस्ट गतिविधि के रूप में तब्दील करने, अधिकतर राज्यों में पार्टी के राजनीतिक स्कूलों को पार्टी की निर्माण में एक हिस्सा बनाने में कमी स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ रही है। पार्टी की शिक्षा के मामले में हमारी कमियां गंभीर है। इस समय में व्यवहार के क्रम में सामने आयी कुछ मुख्य समस्याओं को सही समय पर हल नहीं कर पाने, पार्टी, पीएलजीए, जननिर्माणों को और संगठित कर तेजी से विस्तार नहीं कर पाने, क्रांतिकारी आंदोलन में हासिल की गई विकास को और उच्च स्तर में आगे नहीं ले जा पाने, पार्टी में गैरसर्वहारा रुझान बढ़कर विभिन्न रूपों में (दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करना, गद्दारी करना, निष्क्रियता, गुटबाजी, आर्थिक भ्रष्टाचार आदि रूपों में) गंभीर नुकसान पहुंचाने, फलत: आंदोलन कठिन परिस्थिति में ध केल जाने के लिए अत्यंत मुख्य कारणों में से एक है आंदोलन की स्तर, व्यापकता एवं कर्तव्यों के मुताबिक केंद्रीय एवं राज्य कमेटियों द्वारा ऊपर से सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक एवं सैनिक शिक्षा उचित रूप से दे नहीं पाना। इस कमी के लिए सीसी ने मुख्य जिम्मेदारी लेकर निर्णय लिया कि इस कमी को सुधारने एवं इस कमजोरी से उबरने हेतु गंभीर प्रयास करें।

देशभर में सभी क्षेत्रों में सभी स्तरों में कार्यरत हमारी पार्टी के अधिकतर कामरेड क्रांति की लक्ष्य के लिए दैनंदिन काम-काज में व्यस्त हैं। किंतु इनमें से अधिकतर कामरेडों में पर्याप्त अध्ययन एवं शिक्षा कमी हो रही है। इस कमी की वजह से इन्होंने लापरवाही, यांत्रिकता, स्वत:स्फुर्तता, मनोगतवादी (जड़ात्मकवादी व अनुभववादी दृष्टिकोण से) तरीके से काम करते हुए प्रत्याशित परिणाम हासिल नहीं कर पा रहे हैं। हमारी सिद्धांत, विश्व दृष्टिकोण, राजनीति, लक्ष्य, दिशा (लाइन), निर्माणों, नेतृत्वकारी तरीकों, कार्यशैली, वर्गसंघर्ष, जनयुद्ध - ये

संघर्ष जारी है, वहां भूमिहीन व गरीब किसान, छोटे उत्पादनकारी व बुद्धिजीवी का अंश ही ज्यादा तादाद में है। जिस कारण कुछ कामरेडों के अंदर ''मनोगतवादी'', ''व्यक्तिवादी'', ''अहंवादी'', ''अपनी मनमौजी काम की आजादी'', ''जनवादी केन्द्रीयता के अंदर केन्द्रीयता-विरोधी भावनाएं'' सहित और कुछ गलत भावनाएं पैदा होती हैं जो पार्टी स्पीरिट की विरोधी है। इन सारे गलत भावनाओं को आगे बढ़ने देने से पार्टी की एकताबद्ध इच्छा, एकताबद्ध कार्यवाही व एकताबद्ध अनुशासन को बर्बाद कर बदले में गुटबंदी गतिविधि, संकीर्ण मनोभाव वाला संघर्ष और ऐसा कि पार्टी-विरोधी गतिविधियों में शामिल होकर पार्टी की प्रतिष्ठा का भारी नुकसान पहुंचाना जिससे पार्टी व क्रांति में भारी क्षति होती है और इसी बीच ऐसा हुई है। फिलहाल कई अध:पतित व गद्दारों की चरम पार्टी-विरोधी गतिविधियां इसकी ताजा मिसाले हैं।

अत: उक्त पृष्ठभूमि में इन सारे गलत भावना व कार्यपद्धति को सुधारने के लिए पार्टी की आंतरिक एकता बढ़ाना, पार्टी की जनवादी केन्द्रीकरण के सिद्धांत पर अडिग रहकर काम करना, इसके तहत समूची पार्टी केन्द्रीय कमेटी के मातहत रहना - इत्यादि पार्टी स्पीरिट को पूरी पार्टी में और जोरदार करने पर बल देना होगा। किसी को भी अपनी आजादी की आवाज को उठा कर भ्रांतियां पैदा करने का मौका नहीं देकर केन्द्रीय कमेटी व केन्द्रीय नेतृत्व के उपर व्यापक आस्था व भरोसा रखने के मनोभाव को बढ़ाना होगा। केन्द्रीय कमेटी द्वारा सौंपे गये कार्यभारों को सम्पन्न करने पर सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। निर्धारित विभिन्न योजनाओं को पूरा करने के लिए सदस्यों को रीलिज करना यानी छोड़ना होगा, अन्य जो कुछ भी जरूरी है उसे पूरा करना होगा। लिए गए तमाम निर्णय व प्रस्तावों को अवश्य ही कार्यान्वित करना होगा।

हमें याद रखना होगा कि जब-ही गलती दिखाई पड़ेगी तत्काल-ही उसे सुधारने का प्रयास करना होगा और क्या-क्या कदम उठाना होगा वह भी ठोस रूप से तय करना होगा। किसी भी गलत काम व गलत विचारों को निर्बाध रूप से प्रभाव विस्तार करने नहीं देना चाहिए। पीछे बात करना अथवा विभिन्न प्रकार के टीका-टिप्पणी या दुष्प्रचार किस्म की बातें नहीं होनी चाहिए। बल्कि खुले रूप से व तथ्यों के साथ आलोचना रखने की पद्धति लागू करनी होगी और

इसका उद्देश्य होगा कि गलतियों को सुधारने में मदद करना तथा एक-दूसरे के प्रति कामरेडना संबंध रखते हुए पारस्परिक सहयोग के तरीके अपनाना।

ऐसी मजबूत पार्टी में पार्टी अनुशासन का दृढ़तापूर्वक पालन करना क्रांति के मौजूदा कार्यभारों को आगे बढ़ाते हुए अंततः क्रांति में विजय हासिल करने की प्रमुख शर्त है। इसके लिए व्यक्ति संगठन के अधीन, अल्पमत बहुमत के अधीन, नीचले स्तर उपर स्तर के अधीन, पूरी पार्टी केन्द्रीय कमेटी के अधीन तथा पार्टी द्वारा रेखांकित बुनियादी लाइन-नीति को अवश्य-ही मानना व पालन करना होगा।

साथ ही साथ खुद को सुधारने के लिए निष्ठापूर्वक आत्म-आलोचना का तरीका अपनाना होगा तथा पार्टी व क्रांति की जरूरतों के अनुसार अध्ययन को बढ़ाना होगा, व्यापक करना होगा व कार्यकर्ताओं के साथ-भी व्यापक चर्चा करनी होगी। किसी के अंदर आत्मसंतोष या अपना स्वार्थ की भावना नहीं रहनी चाहिए। सभी के सामान्य हित, सादा-सरल जीवन, कठोर मेहनत, तथ्यों से सच्चाई को ढूंढना, घमंड या अहंकार मनोभाव को दूर हटाना होगा। सिद्धांत व व्यवहार के बीच कोई दूरी नहीं बल्कि घनिष्ठ तालमेल बैठाना होगा। इस रूप से पार्टी का सर्वहारा चरित्र, पार्टी के लक्ष्य-उद्देश्य व कार्यक्रम - विभिन्न विषयों पर पार्टी का अभिमत या स्टैण्ड और स्पीरिट इत्यादि बढ़ाने के महत्व को सर्वथा बुलंद रखना होगा। उपरोक्त सारे कुछ को यानी पार्टी के ओजस्वीपूर्ण स्पीरिट को सभी जिम्मेवार कामरेडों को यानी सीसी सदस्यों से लेकर पार्टी सेल सहित समूची कतारों को भी दृढ़तापूर्वक ऊंचा उठाए रखना होगा।

सेट-बैक की स्थिति से बाहर आने के लिए परिस्थिति के अंदर दिखाई पड़ा अनुकूल पहलू का भरपूर फायदा उठाएं! पार्टी-पीएलजीए-संयुक्त मोर्चा यानी तीन जादुई हथियारों को क्रमशः मजबूत बनाएं!

हमें भलीभांति मालूम है कि पिछले चार वर्षों के दौरान हम सेट-बैक या धक्का खायी हुई स्थिति से बाहर आने के लिए प्रयासरत हैं। उक्त प्रयासों के

विभिन्न अंतर थीं। देश में जनयुद्ध को विकसित करते हुए मूल्यवान उच्च अनुभव हासिल करने के लिए पीएलजीए एवं जनता की राजनीतिक एवं सैनिक प्रशिक्षण अत्यंत मुख्य पहलू के रूप में है। देश में आंदोलन की असमान वृद्धि के तहत ही पार्टी की सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा में भी असमानता मौजूद है। हमारी आंदोलन की स्तर, व्यापकता, आंदोलन की असमान वृद्धि, हल की जाने वाली समस्याएं, क्रांतिकारी लक्ष्य को ध्यान में रखकर अगर देखें तो, सभी स्तरों में एवं सभी क्षेत्रों में पार्टी का अध्ययन एवं शिक्षा बहुत ही आंशिक तौर पर जारी है। इनके बारे में उचित ध्यान दिया नहीं जा रहा है। इनमें निरंतराता नहीं है।

किंतु, विगत 15 वर्षों में पार्टी की सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक एवं सांकृतिक शिक्षा के लिए सीसी से लेकर पार्टी सदस्यों तक विभिन्न भाषाओं में तैयार की गयी सिलाबस, अध्ययन नोट्स, संदर्भ अध्ययन सामग्री से आज पार्टी की शिक्षा को बेहतर करने हेतु बहुत सहयोग मिलेगी। इसी दौरान संपन्न पार्टी एकता कांग्रेस, रीजिनल ब्यूरों के विस्तारित बैठकें एवं राज्य अधि वेशनों/प्लीनमों/विस्तारित बैठकों द्वारा जारी की गयी दस्तावेजों; केंद्रीय कमेटी द्वारा जारी की गयी पॉलिसी दस्तावेजों; केंद्रीय व राज्य कमेटियों द्वारा जारी की गयी आंतरिक सैद्धांतिक संघर्ष की दस्तावेजों; केंद्रीय कमेटी/पीबी/सीएमसी सहित सभी स्तरों के पार्टी कमेटियों द्वारा किए गए निर्णयों सहित इनके द्वारा जारी किए गए सर्कुलरों, लेटरों, संदेशों एवं रिपोर्टों; सीसी से लेकर डीसीयों तक पार्टी कमेटियों, केंद्रीय व राज्य सैनिक आयोगों द्वारा संचालित पत्रिकाओं, प्रकाशनों, प्रेस विज्ञप्तियों, मुलाकातों, पूरी पार्टी, पीएलजीए, जन निर्माणों द्वारा विभिन्न रूपों में जारी की गयी अपार प्रचार साहित्य सभी मिलकर हमारी अत्यंत मूल्यवान महान अनुभवों की निधि के रूप में मौजूद हैं। ये इन 15 वर्षों में हमारी आकलनों, कर्तव्यों, व्यवहारिक प्रयास एवं सफलताओं व विफलताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये पार्टी, पीएलजीए एवं जन निर्माणों का अध्ययन, शिक्षा एवं समझ को बढ़ाने के लिए, व्यवहार को उन्नत करने के लिए बहुत ही मददगार साबित होगी। इसी तरह क्रांतिकारी जनसंगठनों, जनवादी जनसंगठनों, संयुक्तमोर्चा के मंचों, विभिन्न जनवादी संगठनों द्वारा प्रकाशित ऐसी साहित्य ने क्रांतिकारी शिविर को शिक्षित करने के लिए बहुत ही फायदेमंद होगी। एक शब्द में कहा जाए तो, ये सब एक बढ़ी अविराम व्यवहारिक सैद्धांतिक व राजनीतिक शिक्षा है।

पुनर्निर्माण के लिए कोशिश करने के बावजूद व्यवहार में संभव नहीं हुई। किंतु, पहले से आज तक केंद्रीकृत योजना के मुताबिक सीसी/पीबी/सीएमसी द्वारा पूरी पार्टी के लिए शिक्षा संबंध में मुख्य कार्यक्रम एवं विभिन्न अध्ययन सामग्री को तैयार कर विभिन्न रीजनल ब्यूरो एवं राज्य कमेटियों के पास भेजी गयी।

ऊपरी स्तर की शिक्षा के बारे में यह सीमा होने के बावजूद, सीसी की तरफ से पीबी कामरेडो के नेतृत्व में कार्यरत सीएमसी एवं विभिन्न रीजनल ब्यूरो द्वारा अलग-अलग स्तरों में शिक्षा उपलब्ध करायी गयी। मध्य एवं पूर्वी रीजनल ब्यूरो द्वारा रीजनल राजनीतिक स्कूलों को गठित कर संबंधित राज्यों में शिक्षण कक्षाएं चलायी। अन्य रीजियनों में संबंधित आरबी/सीसी सदस्यों एवं राज्य कमेटियों द्वारा ही विभिन्न स्तर के पार्टी कैडरों के लिए शिक्षण कक्षाएं चलायी गयी। देशभर में जारी दुश्मन की भीषण दमन की वजह से हमारी राजनीतिक शिक्षा भी तीव्र रूप से प्रभावित हुई। किंतु सभी जगहों में कुछ अंतरों के साथ शिक्षण कक्षाएं चलायी गयी। दण्डकारण्य में राज्य स्तर में एडुकेशन सबकमेटी को गठित कर, उसके नेतृत्व में विभिन्न क्षेत्रों के सभी स्तर के कैडरों के लिए राजनीतिक शिक्षा एवं विद्या संबंधित (acadamic) शिक्षा दिलाने के लिए मोबाइल राजनीतिक स्कूल, मोबाइल एकडामिक स्कूल; प्राथमिक स्तर के कम्युनिस्ट कैडरों को तैयार करने के लिए बुनियादी कम्युनिस्ट ट्रेनिंग स्कूल; गांवों में बाल-बालिकाओं के लिए वैज्ञानिक एवं जनवादी दृष्टिकोण से एरिया व स्थानीय स्तर के प्राथमिक स्कूलों को गठित करने शिक्षा दिला रहे हैं। पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए एवं जनता ने क्रांतिकारी जन सरकारों को गठित करने/क्रांतिकारी राजनीतिक सत्ता चलाने के लिए जारी कृषि क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध के साथ सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक, सांस्कृतिक, उत्पादन-विकास-कल्याण से संबंधित शिक्षण कार्य को समन्वय करते हुए किया जा रहा है। हमने दण्डकारण्य में पार्टी की शिक्षण के बारे में हासिल अनुभव अपेक्षाकृत उन्नत एवं व्यापक हैं। सीएमसी के नेतृत्व में सेंट्रल इंस्ट्रक्टरों का टीम, मध्य एवं पूर्वी रीजनल ब्यूरो इलाकों में रीजनल मिलिटरी कमांडों, राज्यों में राज्य मिलिटरी कमीशनों, इनके मातहत इंस्ट्रक्टर टीमों को, निचले स्तरों में मिलिटरी कमांडों एवं इंस्ट्रक्टर टीमों को गठित कर पीएलजीए बलों के लिए राजनीतिक व सैनिक प्रशिक्षण दी गयी। जिन राज्यों में मिलिटरी कमीशन या कमांड नहीं है वहां संबंधित सीसी सदस्य एवं राज्य कमेटियां मिलकर अपने दायरे में राजनीतिक एवं सैनिक प्रशिक्षण दी गयी। सभी जगहों में राजनीतिक एवं सैनिक प्रशिक्षण में

जरिए थोड़ी-बहुत सफलता भी हासिल हुई है। पर, वह सफलता आशा व उम्मीद के अनुरूप नहीं है। इसका एक प्रमुख कारण है- सेट-बैक या धक्का खाई हुई स्थिति के अंदर भी दो पहलू की मौजूदगी रहती है उसे ठीक रूप से न समझ पाना। यानी एक पहलू है धक्का खायी हुई स्थिति को और नाजुक बनाना तथा दूसरा पहलू है उक्त स्थिति से बाहर आने का प्रयास करना। इसका मतलब धक्का खाई हुई स्थिति कोई स्थायी चरित्र की वस्तु नहीं है। बल्कि, दो विपरीत चीजों का एकताबद्ध रूप है।

इसलिए हमारे लिए जरूरी है कि प्रतिकूलता के अंदर अनुकूलता के पहलू को ढूंढ निकाल कर उसका फायदा उठाने के लिए उचित कार्यनीति व कार्यभार तय करना। हमारी केन्द्रीय कमेटी ने भी मौजूदा कठिन दौर से बाहर आकर पुनः क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के ख्याल से इस अनुकूल पहलू का उचित रूप से फायदा उठाने खातिर 'वर्तमान परिस्थिति-हमारा कर्तव्य' सरकुलर पेश किया है। उदाहरणस्वरूप, रूसी क्रांति में भी 1905 की क्रांति विफल होने के बाद 1907 से 1912 तक पीछे हटने की कार्यनीति ही अपनायी गई थी। जो कार्यनीति के अंदर पीछे हटने के समय के साथ-साथ पुनः आगे बढ़ने के अनुकूल पहलू का फायदा उठाने के लिए भी उपयुक्त कार्यभारों को रेखांकित किया गया था। चीनी क्रांति का अनुभव में 1927 में जब चीनी क्रांति विफल हुई, तब पीछे हटने की स्थिति ही उत्पन्न हुई थी। इस नाजुक स्थिति से बाहर आकर पुनः क्रांतिकारी आंदोलन में तेजी लाने के लिए उचित कार्यभारों को तय किया गया।

उपरोक्त दो प्रकार की पीछे हटने की स्थिति दो प्रकार की रणनीति यानी 'बगावत' व 'दीर्घकालीन लोकयुद्ध' के तहत घटित घटना है। पर दोनों ही थी सापेक्ष या अस्थायी चरित्र का पीछे हटने की मिसाल। इसलिए ही रूस देश में 1912 के बाद पुनः क्रांतिकारी आंदोलन में उभार आया और अंत में 1917 में रूसी समाजवादी क्रांति सफल हुई। फिर, 1927 में चीनी क्रांति विफल होने के बाद पुनः क्रांतिकारी आंदोलन में उभार लाने के लिए का. माओ ने दीर्घकालीन लोकयुद्ध की रणनीति के अधीन ही आधार इलाके की स्थापना, योजनाबद्ध

तरीके से राजनीतिक हुकूमत स्थापित करना, कृषि-क्रांति को गहरा करना, व्यापक रूप से मिलिशिया व स्थानीय व नियमित लाल सेना का निर्माण करने के लिए सटीक कार्य-पद्धति का पालन कर आम जनता को सशस्त्र करना व लगातार राजनीकि सत्ता का विस्तार करना- इत्यादि कार्यभारों को रेखांकित किया था।

अनुरूप ढंग से हमारे देश के क्रांतिकारी आंदोलन में जो कठिन दौर की स्थिति उत्पन्न हुई उससे बाहर आने के लिये सीसी-4 व सीसी-5 की बैठकों द्वारा कुछ जरूरी कार्यभारों को रेखांकित किया गया। हम सब कामरेड उसी कार्यभारों को ही कार्यान्वित करने की प्रक्रिया में लगे हुए हैं। इसी प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए ही सीसी-5 की बैठक द्वारा जारी सरकुलर 'वर्तमान परिस्थिति-हमारा कर्तव्य' के जरिए पुन: क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने खातिर अंतरराष्ट्रीय व घरेलू परिस्थिति के अंदर पहले की अपेक्षा बेहतर अनुकूल पहलू को दर्शाया गया है। साथ-साथ इस अनुकूल पहलू का हकीकत में फायदा उठाने के लिए पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चा को मजबूत करने के लिए कई नई कार्यभार भी सुझाया गया है।

इसीलिए, पीछे हटने और पुन: आगे बढ़ना एक ही वस्तु के अंदर कार्यरत 'दो विपरीत तत्वों की एकता व संघर्ष' की प्रक्रिया होती है। इसी द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दृष्टिकोण को अपना कर ही अनुकूल पहलू का फायदा उठाकर पार्टी व आंदोलन को पुन: आगे बढ़ने की स्थिति में पहुंचाया जा सकता है। इसीलिए हमें पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा यानी तीन जादुई हथियारों को क्रमश: मजबूत करना होगा।

(i) पार्टी को मजबूत बनाना हमारा पहला कर्तव्य है : हम सबों को भलीभांति मालूम है कि क्रांति से संबंधित किसी भी काम में सफलता हासिल करने के लिए एक मजबूत पार्टी का अस्तित्व रहना उसका कूंजीवत शर्त है। इसलिए पार्टी को हर तरह से यानी जमीनी स्तर से लेकर उपरी स्तर तक प्रत्येक पार्टी कमेटी का गठन कर उसे सचमुच ही क्रांतिकारी काम-काजों की संस्था के बतौर बनाना हमारा सर्वप्रथम व सर्वोच्च प्राथमिकता देने वाला कार्य है। ऐसा कर

करने का जो कर्तव्य निभाने का था, इसकी वजह से इस स्कूल ने पार्टी का कांग्रेस संपन्न होने का बाद अपनी काम शुरू करती है, विभिन्न राज्यों में चलाने वाले शिक्षा कार्यक्रम को संबंधित कमेटियां यथावत जारी रखने का निर्णय पीबी ने लिया। किंतु, बहुत राज्यों में बड़ी संख्या में पार्टी की प्राथमिक सदस्यता प्राप्त कामरेडो के लिए पार्टी प्राथमिक शिक्षा देने में बहुत हद तक हम विफल हुए। इन में से कुछ राज्यों में कुछ हद तक पार्टी शिक्षा देने के बावजूद उसके बाद इसे सुव्यवस्थित रूप से जारी नहीं रख पाये।

उस दिन पार्टी की प्रधान केंद्रीकरण पार्टी अधिवेशनों एवं कांग्रेस को आयोजन करने पर ही थी, बावजूद बहुत राज्यों में स्थानीय स्तर पर पार्टी यूनिटों एवं विभिन्न स्तर के पार्टी कमेटियों को संगठितीकरण करने के लिए शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया।

एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में सीसी ने माना कि पार्टी सैद्धांतिक, राजनीतिक एवं सांगठनिक स्तर को बढ़ाने की जरूरत है। उसके बाद आयोजित सीसी की पहली बैठक में ही सीसी ने सेंट्रल स्कोप (सब कमेटी ऑन पोलिटिकल एडुकोशन) या सेंट्रल पोलिटिकल स्कूल को गठित किया। इस कमेटी ने उसी समय में बैठक कर छ: महीनों में बुनियादी पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रकाशित की जाने वाले पुस्तकों के बारे में, एक साल में तैयार की जाने वाली अध्ययन सामग्री के बारे में, बाद में अध्ययन सामग्री पर नेतृत्व के लिए विभिन्न आर.बी. द्वारा चलाने वाले कक्षाओं के बारे में मसविदा निर्णय तैयार की, उसके बाद सीसी के सामने रखी। उसके बाद पीबी की बैठक में इस पर अंतिम निर्णय लेने का निर्णय सीसी ने लिया। कुछ ही महीनों में यानी 15 अगस्त, 2007 को सेंट्रल पोलिटिकल स्कूल के सचिव/प्रभारी कामरेड अजय दा (सीसीएम) अस्वस्थता से उनकी मृत्यु हुई। उसके बाद कुछ ही समय में इस स्कूल के एक मुख्य सदस्य गिरफ्तार हो जाने की वजह से इस निर्माण निष्क्रिय हो गयी। 2005-2012 के बीच देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन पर प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों ने हमले तेज की जिसमें हमारी सीसी के लिए उल्लेखनीय नुकसान हुए। यही वजह है कि, पहले जैसा सीसी अपनी केंद्रीकृत कार्यक्रमों को समन्वयपूर्वक एवं सही समय में सफलतापूर्वक संचालित करने में सीमा पैदा हुई। इसलिए पीबी ने निर्णय लिया कि सेंट्रल पोलिटिकल स्कूल काम करने के बावजूद, वह मुख्य रूप से रीजनल ब्यूरो एवं राज्य की स्तर में पार्टी की पोलिटिकल स्कूल चलाने के लिए प्राथमिकता देनी चाहिए। 2010 में सेंट्रल पोलिटिकल स्कूल की

सीसी सर्कुलरः 3/2019 **(पार्टी सदस्यों तक)**

दुश्मन के फासीवादी हमलों के बीच ही पार्टी को मजबूत करने के लिए पार्टी की सैद्धांतिक एवं राजनीतिक शिक्षा को उन्नत करें!

प्रिय कामरेडो,

हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) का गठन से लेकर पिछले 15 वर्षों में सीसी से एसी तक पार्टी के नेतृत्व में केंद्रीय स्तर से पार्टी सदस्यों तक जनसेना, जन निर्माण के नेतृत्व ने अपने क्षेत्रों में जारी शिक्षण में सकारात्मक एवं नकारात्मक अनुभवों को ध्यान में रखते हुए, आज की हमारा आंदोलन की कठिन दौर से उबरकर जीत की रास्ते पर आगे बढ़ने के मुताबिक एवं दीर्घकालीन क्रांतिकारी कर्तव्यों को सक्षम तरीके से निभाने के लिए समुचित रूप से पार्टी को मजबूत करने हेतु पार्टी की शिक्षा को बेहतर करने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर सीसी ने इस सर्कुलर को जारी कर रही है।

21 सितम्बर 2004 को हमारी नयी पार्टी, भाकपा (माओवादी) का गठन के तुरंत बाद इस ऐतिहासिक घटना पर देशभर में पार्टी में हमने एक सैद्धांतिक, राजनीतिक एवं सांगठनिक अभियान चलाया। इसके उपरांत पार्टी अधिवेशनों एवं कांग्रेस की तैयारियों के तहत पूरी पार्टी में बुनियादी दस्तावेजों पर, बहसों के व्याखानों पर एक बड़े सैद्धांतिक एवं राजनीतिक (अध्ययन, कक्षाएं-चर्चा आदि रूपों में) अभियान चलाया। कुल मिलाकर, ये अभियान मुख्य रूप से सफल होने के बावजूद, इसे सामग्रिक रूप से नहीं चलाने वाली इलाकों में पर्याप्त शिक्षा नहीं मिलने की वजह से पार्टी को उचित मात्रा में मजबूती से एकजुट नहीं कर पाये।

पीबी ने मार्च 2005 में केंद्रीय राजनीतिक पाठशाल (सेंट्रल पोलिटिकल स्कूल) को गठित किया। तमाम पार्टी के अधिवेशनों एवं कांग्रेस का आयोजन

पाने से ही पार्टी की जड़ मजबूत होगी। साथ ही साथ मा-ले-मा पर आधारित पार्टी राजनीति से शिक्षित-प्रशिक्षित करने के कार्यक्रमों को भी पार्टी पाठ्य-सूची के अनुसार चलाना होगा। उपरोक्त प्रक्रिया के साथ-साथ प्रत्यक्ष रूप से वर्ग-संघर्ष में भाग लेने के व्यावहारिक काम में उतरना होगा। यानी उत्पादन कार्य, वर्ग संघर्ष व सिद्धांत का अध्ययन - इन तीनों काम को तालमेलपूर्ण ढंग से चलाना होगा। पार्टी कमेटी व्यवस्था के जनवादी केन्द्रीयता के नियमों के अंदर सामूहिक बहस, सामूहिक निर्णय, सामूहिक कामकाज का बंटवारा, सामूहिक प्रयोग व व्यक्तिगत पहल का तालमेल, सामूहिक चेक-अप इत्यादि पद्धतियों को संजीदगी से लागू करना होगा। जनवाद पर आधारित केन्द्रीयता के तहत जनवाद के पहलू को संजीदगी से लागू करना होगा। पर, जनवाद के नाम पर अति-जनवाद को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। पार्टी संविधान के अनुसार तमाम पार्टी कमेटियों की बैठक नियमित रूप से होनी चाहिए। बैठक के लिए कई निश्चित विषय-सूची रहनी चाहिए और उस पर बहस होकर कुछ ठोस फैसला भी लेना चाहिए। प्रत्येक पार्टी कमेटी द्वारा एक निश्चित अंतराल पर ठीक उसकी उपर कमेटी के पास लिखित विस्तृत रिपोर्ट भेजनी चाहिए। जिस तरह की परिस्थिति के अंदर हमें आज कामकाज करना पड़ रहा है उसे देखते हुए समस्याओं के हल के लिए समय देने के बदले अतिरिक्त समय केवल मीटिंग-सीटिंग में व्यय करना कतई उचित नहीं होगा। पार्टी लेख, सरकुलर इत्यादि भी बहुत बड़ा, जटिल व कठिन भाषा में न होकर सहज-सरल भाषा व छोटी शक्ल में निकालना चाहिए;

(ii) पार्टी का सर्वहारा चरित्र बरकरार रखने के लिए बीच-बीच में दोष-निवारण आंदोलन का संचालन करना निहायत जरूरी है : पार्टी में उत्पन्न गैर-सर्वहारा रूझान या बुर्जुआ व पेटी-बुर्जुआ रूझानों को पूरी तरह खत्म करने के लिए बीच-बीच में एक आंदोलन तथा अभियान के बतौर ''दोष-निवारण आंदोलन'' का संचालन उपर से नीचला स्तर तक और नीचला से उपर स्तर तक करना चाहिए जो निश्चित परिणाम निकलने वाला होना चाहिए। चूंकि हमारा देश अर्द्ध-उपनिवेशिक व अर्द्ध-सामंती चरित्र वाला तथा पिछड़ा हुआ देश है और विशाल देहाती क्षेत्र ही काम-काज का मूल केन्द्र है, इसलिए हमारी पार्टी में आए

हुए अधिकांश लोग निम्न-पूंजीवादी वर्ग के होते हैं। इस तरह वर्ग-आधार ही तमाम प्रकार के गैर-सर्वहारा रूझानों को पैदा करने का मूल स्रोत या उद्‌गम के रूप में काम करता है। अतः जब ही पार्टी के अंदर विजातीय प्रवृतियां सर खड़ा करने की कोशिश करेगी उसी वक्त एक योजनाबद्ध तरीके से 'दोष-निवारण आंदोलन' का संचालन करना होगा। इसमें कतई ढिलाई नहीं देनी चाहिए। ढिलाई देने का मतलब ही होगा जानबूझ कर सर्वहारा वर्ग के हिरावल दस्ते को लेकर गठित कम्युनिस्ट पार्टी को पेटी-बुर्जुआ वर्ग चरित्र वाला पार्टी में बदल देना। अतः उचित समय पर निश्चित गलत रूझान व गलत कार्यशैली के खिलाफ दोष-निवारण आंदोलन का संचालन करें;

(iii) पार्टी में आलोचना व आत्मालोचना की शैली लागू रखें: सर्वहारा तथा कम्युनिस्ट का प्राण है आलोचना-आत्मालोचना। क्योंकि इस हथियार का ठीक-ठीक व उचित ढंग से इस्तेमाल कर पाने से पार्टी का सर्वहारा चरित्र और निखर आता है, उज्ज्वल होता है। पर, आलोचना व आत्मालोचना की शैली का सही संचालन के लिए हमें कई बिंदुओं पर ख्याल रखना चाहिए। वे हैं : (क) आलोचना व आत्म-आलोचना केवल राजनीतिक-सांगठनिक विषयों पर ही केन्द्रित होकर चलनी चाहिए। न कि कुछ नुक्ताचीनी वाला विषयों पर। आलोचना में किसी पर आरोप लगाते समय तथ्यों के साथ होना चाहिए, न कि केवल बातों के जरिए; (ख) इसका उद्देश्य होना चाहिए भूल सुधार कर एक कामरेड को अच्छा कामरेड के रूप में रूपांतरण करने में मदद करना। यानी सही प्वाइंट पर आलोचना भी करना और सुधारने के उपायों को भी सुझाना। इसका अर्थ है नकारात्मक या व्यक्तिगत आक्रमण या चरित्रहनन या ध्वंसात्मक नहीं, सकारात्मक व रचनात्मक आलोचना की शैली होनी चाहिए; (ग) इस हथियार का इस्तेमाल का और एक उद्देश्य होता है, वह है- आलोचना का उद्देश्य भी क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए और आत्म-आलोचना का उद्देश्य भी क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए होना चाहिए; (घ) आत्म-आलोचना का मूल बिन्दु होना चाहिए खुद की कमियों को बेबाक ढंग से उजागर करना और स्पष्ट करके कहने से पार्टी व क्रांति के विकास में खुद की भूमिका क्या होना चाहिए, पर अभी क्या है उसको ढूंढ निकालना और बिना हिचकिचाहट से विनम्र रूप से उसे

पीएलजीए व संयुक्त मोर्चा को भी पूरी तरह तैयार करना होगा, निर्धारित तमाम राजनीतिक-सांगठनिक-सैनिक कार्यभारों का सफल कार्यान्वयन के लिए भी तमाम तैयारियों के काम को भी पूरा करना होगा।

उपरोक्त कामों की पूरी तैयारी के लिए पार्टी लाइन, नीति, पद्धति व शैली पर पूर्ण विश्वास व भरोसा रखें, आम जनता पर अगाध विश्वास व भरोसा रखें, मौजूदा अनुकूल अंतरराष्ट्रीय व घरेलू परिस्थिति का फायदा उठाने हेतु सृजनशील व तत्पर रहें। इन सारे कुछ को अगले कार्यभारों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने की दिशा पर केंद्रित व संचालित करें।

रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा व जटिल है। पर पार्टी लाइन-नीति-पद्धति व शैली पर अडिग रहकर हम भारतीय क्रांति के मौजूदा दौर को पार कर नई जनवादी क्रांति को और आगे बढ़ा सकते हैं।

हमें याद रखना है कि जनता, केवल जनता-ही इतिहास निर्माण करने की मूल प्रेरक शाक्ति होती है। भारत में भी इसका अपवाद नहीं होगा। रात का अंधेरा खत्म होकर भोर की लाल किरण का आगमन होगा ही। अंत तक जीत जनता की ही होगी।

अंदर सर्वहारा दर्शन-सर्वहारा संस्कृति व सर्वहारा जीवन-शैली और सर्वहारा अनुशासन की सोच पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए।

आह्वान

इस सरकुलर के जरिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद और द्वंद्वात्मक भौतिकवाद पर अधिक समझदारी हासिल करने का महत्व सहित अन्यान्य कई बिंदुओं पर कुछ अधिक ध्यान देने के महत्व पर चर्चाएं की गयी हैं। चर्चा का एकमात्र उद्देश्य है उसे व्यवहार में अमलीजामा पहनाने का जोरदार प्रयास करना। ऐसा कर पाने से ही सिद्धांत के साथ व्यवहार का तालमेल बैठाया जा सकता है।

हमने पहले ही कहा है कि पिछले कई सालों से पार्टी को बोल्शेवीकरण करने की प्रक्रिया अपनाये जाने के कारण पार्टी व आंदोलन की धक्का खाने की स्थिति से उबार पाने में थोड़ा-बहुत सकारात्मक रूख दिखाई पड़ रहा है। अत: हमारे अंदर किसी प्रकार की आत्मसंतोष की भावना रखे बिना उक्त सकारात्मक पहलू को क्रमश: आगे की ओर बढ़ाने के जी-तोड़ प्रयास चलाते रहने की भावना को जेहन में बैठा लेना होगा।

कामरेडो,

पिछले करीब पांच दशकों से हम सशस्त्र कृषि-क्रांति तथा दीर्घकालीन लोकयुद्ध की रणनीति के अधीन कृषि-क्रांतिकारी गुरिल्ला लड़ाई यानी जनयुद्ध का संचालन करते आ रहे हैं। अनगिनत शहादतों, अनेकों बांक-मोड़ व उतार-चढ़ाव, हजारों-हजार के यंत्रणा-भरा जेल बंदी जीवन इत्यादि झेलते हुए ही लड़ाई को आज के मुकाम तक पहुंचा पाने में सक्षम हुए हैं। हमारी पार्टी से, उत्पीड़ित वर्गों एवं तबकों से तीव्र प्रतिरोध का सामना करने की वजह से दुश्मन अपने ऑपरेशन ग्रीन हंट की योजना को बदलकर और एक रणनीतिक हमला 'समाधान' को पिछले साल से गंभीर रूप से जारी रखा है। हजारों अतिरिक्त पुलिस, अर्धसैनिक एवं कमांडो बलों की तैनाती कर कार्पेट सुरक्षा को मजबूत करते हुए पहले के मुकाबले और क्रूरता से उनके द्वारा इस हमले को संचालित किया जा रहा है, ऐसी स्थिति का सफलतापूर्वक मुकाबला करने एवं हराने के लिए खुद को हर तरह से तैयार करने के साथ-साथ पूरी पार्टी,

स्वीकरना। आत्मालोचना के नाम पर कुछ फिजूल बातें करना अथवा उल्टे दूसरों की आलोचना करना- कतई ग्रहण योग्य नहीं है;

(iv) पीएलजीए को हर प्रकार से उन्नत व मजबूत करना हमारा दूसरा अहम कर्तव्य है: पिछले कुछ वर्षों से सशस्त्र संघर्ष के अनुभव हमें दिखाया है कि जनमुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) इसी बीच जनता की एक प्यारी सेना के बतौर उभर कर आयी है। अत: इसे क्रमागत संख्या के रूप में, गुण के रूप में, उन्नत युद्धकला का इस्तेमाल करने वाले के रूप में, हिम्मत-बुद्धि व भौगोलिक धरातल के अनुसार गुरिल्ला युद्ध के दाव-पेंचों का इस्तेमाल करने वाले के रूप में तथा एक अनुशासित सेना के रूप में तैयार करना हमारा महत्वपूर्ण कर्तव्य है। इसीलिए हमें जो सब जरूरी कदम उठाना चाहिए, वह है : (क) केन्द्रीय मिलिटरी कमिशन के दिशा-निर्देशन को व्यवहार में लागू करने का प्रयास चलाना, (ख) विभिन्न स्तरों में फौजी पार्टी कमेटियों का गठन व संजीदगी के साथ संचालन करने के साथ-साथ विभिन्न स्तरों के अनुसार कमानों का गठन, उसकी नियमित बैठक व कार्यक्रम इत्यादि को तय करना, मिलिशिया वाहिनी को पहले स्कवाड के रूप में संगठित करते हुए मिलिशिया प्लाटून व मिलिशिया कम्पनी का गठन सांगठनिक रूप से संगठित करना और उनका दैनिक कार्यक्रमों को तय करना, (ग) अतीत की गलतियों से सबक लेकर मिलिटरी प्रशिक्षण, टेक-आपूर्ति, अपना खुफिया, चिकित्सा, इत्यादि विभागों को जरूरी तौर पर पुन: निर्माण करना, (घ) सभी प्रकार की शक्तियों की मिलिटरी प्रशिक्षण के लिए ठोस कार्यक्रम रहना और कार्यक्रमों के अनुसार लगातार प्रशिक्षण का सिलसिला जारी रखना, (ङ) हमें याद रखना है कि गुरिल्ला लड़ाई के कार्यक्रमों के बिना कोई गुरिल्ला स्कवाड, पीएल, कम्पनी इत्यादि का अस्तित्व नहीं रह सकता। इसलिए अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार तथा अपनी पहलकदमी व योजना के अनुसार दुश्मन पर चोट पहुंचाने खातिर सकारात्मक परिणाम निकलनेवाली कार्रवाइयों का सफल कार्यान्वयन करना, (च) छोटी-मध्यम या किसी भी प्रकार की कार्रवाई हो, प्रत्येक कार्रवाई के बाद उसकी गहराई से समीक्षा तथा सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं का विश्लेषण करते हुए लिखित रूप से रखना और उसके सबक को लेकर सभी के साथ

चर्चा चलाना, (छ) चलायमान युद्ध के लक्ष्य के साथ गुरिल्ला युद्ध को योजनाबद्ध ढंग से संचालित करते हुए तीव्र-व्यापक करना चाहिए।

उपरोक्त सारे कामों को सटीक रूप से कार्यान्वयन करना हमारा दूसरा अहम कर्त्तव्य है;

(v) संयुक्त मोर्चा यानी रणनीतिक व कार्यनीतक संयुक्त मोर्चा का गठन हमारा और एक अन्यतम व महत्वपूर्ण तथा तीसरा अहम कर्तव्य है : (क) पिछला अनुभव हमें अच्छी तरह सिखाया है कि भारत में नव-जनवादी क्रांति को सम्पन्न करने के लिए हमारी पार्टी को सर्वहारा वर्ग, किसानों, शहरी निम्न पूंजीपति और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग (जो अक्सर छोटे व मंझोले पूंजीपति होते हैं) को लेकर रणनीतिक संयुक्त मोर्चा का गठन करने का काम पर सर्वाधिक महत्व देना होगा। क्योंकि राजनीतिक सत्ता पर कब्जा जमाने और जनता के जनवादी अधिनायकत्व की स्थापना करने के लिए वैसा संयुक्त मोर्चा की ही मूल भूमिका होगी। इसका एक भ्रूण रूप है देहाती क्षेत्रों में क्रांतिकारी जन-कमेटी की सत्ता। पर, लड़ाई की अग्रगति के साथ ताल मिलाकर जनसत्ता की स्थापना में हम वैसी अग्रगति हासिल नहीं कर पाए। अत: समय व स्थिति की मांग है कि उक्त कमी को जल्द से जल्द सुधार कर रणनीतिक संयुक्त मोर्चा का भ्रूण रूप आरपीसी को गठन करने व उसे जनसत्ता का निकाय के रूप में स्थापित व विकसित करने पर विशेष जोर लगाएं। साथ ही देश के पैमाने पर भी इस रणनीतिक संयुक्त मोर्चा का निर्माण खातिर व्यापक व जोरदार प्रयास लगावें। (ख) फिर अन्यान्य तबके की जनता को उक्त रणनीतिक मोर्चा में लामबंद करने के लिए हमें भिन्न-भिन्न वर्ग शक्तियों को लेकर भिन्न-भिन्न उद्देश्यों के साथ विभिन्न स्तरों पर कई किस्म के कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चा का निर्माण करना होगा। परंतु हमें अपने मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य के मातहत ही इन संघर्षों को विकसित करने की कोशिश करनी होगी। मौजूदा परिस्थिति में किन-किन मुद्दों पर व्यापक जन-आंदोलन का निर्माण के दौरान इस तरह के कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चा का गठन हो सकते हैं - केन्द्रीय कमेटी द्वारा जारी 'वर्तमान परिस्थिति-हमारा कर्तव्य' शीर्षक सरकुलर के जरिए प्रस्तुत किया गया है।

खासकर, ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवाद के खिलाफ मजदूर, किसान, छात्र, युवा, महिला, बुद्धिजीवी सहित तमाम अल्पसंख्यक धार्मिक समुदाय, दलित, पिछड़े हुए राष्ट्रीयता तथा तमाम प्रगतिशील, जनवादी व क्रांतिकारी ताकतों को लामबंद करने का एक अच्छा खासा सुअवसर मिला है - जैसी बातों को सामने लाया गया है। हालांकि, ये सबकुछ को भी अपना संगठन, अपनी पहलकदमी व अपना स्वतंत्र कार्यक्रम पर आधारित होकर ही वास्तविक कार्यरूप देने की कोशिश करनी होगी। (ग) हमें भलीभांति मालूम है कि हमारे जन संगठनों के अंदर पार्टी कामकाज जरूरत की अपेक्षा बहुत-ही कम है। जन-संगठनों के अंदर पार्टी कामकाज का मतलब पार्टी फ्रैक्शनों का सटीक रूप से संचालन करना। इन फ्रैक्शनों का सटीक तरीके से संचालन करना इसलिए भी जरूरी है जब जन संगठनों में विभिन्न प्रकार के पेटी बुर्जुआ चिंतन व आचार-व्यवहार तथा गैर-सर्वहारा रूझानें मौजूद हैं। खासकर मनोगतवाद, व्यक्तिवाद, अनावश्यक खर्च करने व मनमौजी घुमने-फिरने व रहने, पार्टी नियमों के अनुसार शादी संबंध न जोड़ने, साम्राज्यवादी व ब्राह्मणीय हिन्दुत्ववादी संस्कृति का व्यापक आक्रमण का उचित तरीके से खिलाफ न कर पाने इत्यादि रूझानें प्रबल रूप से ही विद्यमान हैं। साथ ही साथ क्रांतिकारी मुखौटा की आड़ में प्रयोगवाद में अधिक विश्वास रखने का रूझान मौजूद है। कारण है कि मा-ले-मा सिद्धांत पर और पार्टी दस्तावेज, पार्टी मुखपत्र व पार्टी सरकुलर पर अध्ययन करने में उतनी दिलचस्पी नहीं दिखाते हैं जितना अन्यान्य बुर्जुआ एवं पेटीबुर्जुआ विचार वाले पत्र-पत्रिकाएं, किताबों व मैगजीनों पर दिखाते हैं। इसीलिए, उनके अंदर गुरिल्ला लड़ाई के इलाके के कामरेडों द्वारा दुश्मनों का प्रचंड व बर्बर सैनिक आक्रमण के खिलाफ चलाया जा रहा जवाबी प्रतिरोधी कार्रवाइयों के दौरान कितने साथी शहीद हो रहे हैं, घायल हो रहे हैं, कितने भूख-प्यास सहित अन्यान्य कठिन स्थिति को झेलना पड़ रहा है- इसके बारे में खास कोई समझदारी नहीं रहती है। पार्टी व फौज में कुछ सदस्यों को भेजने की सोच तो बहुत ही कम दिखाई पड़ता है। अत: विभिन्न प्रकार के जन-संगठनों के अंदर कार्यरत फ्रैक्शनों के सदस्य सहित अन्यान्य सारे पार्टी कार्यकर्ताओं को मा-ले-मा सिद्धांत पर कुछ हद तक समझदारी पैदा करने खातिर लगातार शिक्षा क्लास चलाना बहुत जरूरी है। उनके

जिला कैडर अपनी अध्ययन पद्धति को बेहतर करने के लिए व्यापक एवं गहराई से अध्ययन करना चाहिए। जिला कैडर के तौर पर दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने की परस्पेक्टिव के मुताबिक अपनी जिले में तीन जादूयी हथियारों का निर्माण कर गुरिल्ला युद्ध को तेज व व्यापक करते हुए क्रांतिकारी जन सरकारों को गठित करने के अलावा जिले के ग्रामीण, शहरी व मैदान इलाकों में सभी क्षेत्रों में सक्षम तरीके से नेतृत्व प्रदान करने के लिए व्यवहारिक प्रयास करना चाहिए। इसके जरिए सक्षम व अपेक्षाकृत अधिक अनुभवी जिला कैडरों से आरसी/एससीयों के लिए एवं जिले से राज्य स्तर तक पार्टी, सेना, संयुक्तमोर्चा क्षेत्रों के लिए जरूरी कैडरों को तैयार करने एवं मजबूत राज्य आंदोलन को विकसित करने हेतु बुनियाद बना सकते हैं।

सबजोनल कमेटियों में जोनल कमेटी सदस्य, एसी सचिव/सदस्य शामिल होते हैं इसलिए जोनल आंदोलन के तहत सबजोनल आंदोलन का सक्षम नेतृत्व प्रदान करने लायक इन्हें शिक्षित करना चाहिए। सबजोनल कैडरों की शिक्षा के लिए जोनल कमेटियों का सिलाबस से चयनित साहित्य को इस्तेमाल करना चाहिए। इसपर निर्भर होकर सबजोनल कैडरों के साथ अध्ययन करवाना, उन्हें शिक्षित करना चाहिए। संबंधित रीजनल एवं राज्य कमेटियां इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

संदर्भ अध्ययन सामग्रीः

एरिया स्तर के कैडर के तौर पर काम करते समय अध्ययन एवं शिक्षा के लिए उचित अवसर न मिलने व अध्ययन पर उचित ध्यान नहीं देने वाले जिले कैडरों ने एरिया कमेटियों के संदर्भ अध्ययन सामग्री से चयनित साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। मार्क्सः दर्शनशास्त्र की गरीबी, फुयरबाक पर सिद्धांत, 18वीं ब्रुमाइर लुइस बोनापार्टी, पारिस कम्युन पर, इंटरनेशनल वर्किंगमेंस एसोसियेशन उद्घाटन भाषण, इंटरनेशनल वर्किंगमेंस एसोसियेशन के आम नियम, ट्रेड यूनियनों पर, फ्रांस में गृहयुद्ध, गोथा कार्यक्रम पर आलोचना; एंगेल्सः परिवार, व्यक्तिगत संपत्ति और राज्य का उद्भव, इंग्लैंड में मजदूर वर्ग की स्थिति, लुडविग फुयरबाक-जर्मन की सांप्रदायक दर्शनशास्त्र का अंत, जर्मनी में किसान युद्ध, पारिस कम्युन पर, सत्ता पर, मिलिटरी लेख; मार्क्स एवं एंगेल्सः पारिस कम्युन पर; लेनिनः मार्क्स-मार्क्सवादी सिद्धांत, क्या करें?, सामाजिक जनवाद-दो कार्यनीति, पारिस कम्युन पर, एक कदम आगे-दो कदम पीछे, रूस में पूंजीवादी

सभी अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा का प्रतिनिधित्व करती हैं, सभी मेहनतकश लोगों को मुक्ति की मार्ग में ले जाती हैं, नयी समाज को निर्माण करती हैं। ये सभी मामलों में प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों से पूरी तरह अलग हैं, उनके खिलाफ हैं, इनकी सत्ता को उखाड़ देती हैं। किंतु सही दृष्टिकोण एवं दृढ़संकल्प के साथ सैद्धांतिक अध्ययन-शिक्षा जारी रखना चाहिए, सिद्धांत की रोशनी में सृजनात्मक रूप से व्यवहार जारी रखना चाहिए, अनुभवों से सीखते हुए व्यवहार को बेहतर करना चाहिए, बार-बार जारी रखने वाली इस क्रम के द्वारा सिद्धांत को और विकसित करना चाहिए, समृद्ध सिद्धांत की रोशनी में जारी रखने वाली बेहतर लंबे व्यवहार की प्रक्रिया के जरिए ही नवजनवादी क्रांति को सफल बनाकर समाजवाद एवं साम्यवाद हासिल करने की तरफ हम आगे बढ़ सकते हैं।

नक्सलबाड़ी से शुरू होकर हमारी आम राजनीतिक दिशा (लाइन) सही है, नवजनवादी क्रांति से संबंधित मौलिक भावनाएं मुख्य रूप से सही हैं, इसके बावजूद इस दिशा के बुनियाद पर, इन मौलिक भावनाओं के बुनियाद पर पार्टी, पीएलजीए एवं जनता को किस हद तक सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक एवं सैनिक रूप में तैयार कर पाये हैं, उसपर आधारित होकर, जनता को किस हद तक राजनीतिक रूप से गोलबंद व संगठित कर दीर्घकालीन लोकयुद्ध के लिए तैयार कर पाये हैं, उस पर आधारित होकर, सामाजिक परिस्थितियों में, आंदोलन की परिस्थितियों में हुए बदलावों के मुताबिक किस हद तक उचित कार्यनीति अपनाएं हैं, उस पर आधारित होकर, इसके मुताबिक किस हद तक सक्षम नेतृत्व प्रदान कर पाये हैं, उस पर आधारित होकर हमारी क्रांतिकारी आंदोलन की गति एवं हमारी सफलताएं-विफलताएं रहीं - इसे विगत पांच दशकों का भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास ने साबित कर दिखाया। हमारी ठोस ऐतिहासिक अनुभव को ध्यान में रखकर इस विषय को हमने स्पष्ट रूप से बता सकते हैं।

मजबूत पार्टी महत्व के बारे में कामरेड्स लेनिन, स्तालिन एवं माओ ने इस तरह बताये : ''सर्वहारा वर्ग अपनी सत्ता के लिए किए जाने वाले संघर्ष में उसे संगठन से ऊपर उठकर और कोई हथियार नहीं है।'' - लेनिन; ''एक सही राजनीतिक लाइन के निर्धारण और व्यवहार में उसकी जांच के बाद, पार्टी के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ता ही निर्णायक शक्ति होते हैं .... एक सही लाइन को व्यवहार में लागू करने के लिए हमारे पास निश्चित रूप से कार्यकर्ता होने चाहिए, ऐसे लोग होने चाहिए जो पार्टी की राजनीतिक लाइन को लागू करते हों,

जो उसे अपनी लाइन के रूप में स्वीकार करते हों, जो उसे लागू करने के लिए तैयार हों एवं इसमें समर्थ हों, जो उसे व्यवहार में भी उतारने में समर्थ हों और साथ ही जो इसके प्रति जवाबदेह होने, इसकी रक्षा करने तथा इसके लिए संघर्ष करने में भी सक्षम हों। इसके बिना यह खतरा रह जाता है कि एक सही लाइन सिर्फ नाम के वास्ते ही रह जाय।'' – स्तालिन; ''यदि क्रांति करनी हो, तो उसके लिए एक क्रांतिकारी पार्टी का होना अनिवार्य है। एक क्रांतिकारी पार्टी के बिना, एक ऐसी पार्टी के बिना जिसका निर्माण मार्क्सवादी-लेनिनवादी क्रांतिकारी सिद्धांत के आधार पर और मार्क्सवादी-लेनिनवादी क्रांतिकारी शैली में हुआ हो, साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्तों को पराजित करने के लिए मजदूर वर्ग और व्यापक जनता का नेतृत्व करना असंभव है।'' – माओ।

किंतु, अगर आज की हमारी पार्टी की वर्ग संयोजन एवं मालेमा से संबंधित सैद्धांतिक समझदारी में कमी-खामियों को ध्यान में रखकर देखें तो, पार्टी में सैद्धांतिक रूप से फिर से सांचे में ढालने (remoulding) की स्तर कम है, निम्नपूंजीवादी सोच अभी भी मजबूत हैं। सर्वहारा सोच का प्रबल्य अभी भी मजबूती से स्थापित करना बाकी है। हम इस ठोस परिस्थिति की वजह से पार्टी लाइन एवं पॉलिसियों पर समझदारी बनाकर अमल करने की क्रम में अधिक गलतियां होने के साथ-साथ गलत रुझान भी उभरने की मौका मिल रही है।

नवजनवादी क्रांति को तीन जादूयी हथियार पार्टी, सेना एवं संयुक्तमोर्चा को मजबूती से गठन करने द्वारा ही सफल बना सकते हैं। नवजनवादी क्रांति में इन तीन जादूयी हथियारों का गठन, इनकी विकास, इनके द्वारा निभायी जाने वाली भूमिका परस्पर आधारित है। इनमें से बाकी दो जादूयी हथियारों को सक्षम तरीके से इस्तेमाल कर पार्टी ही नेतृत्वकारी भूमिका अदा कर सकती है। इस मामले में माओ ने कहा : "..... संयुक्त मोर्चा तथा सशस्त्र संघर्ष दुश्मन को हराने के दो बुनियादी अस्त्र हैं। संयुक्त मोर्चा सशस्त्र संघर्ष चलाने के लिए कायम किया गया संयुक्त मोर्चा है और पार्टी एक ऐसे बहादुर योद्धा की तरह है जो शत्रु पर धावा बोलने और उसे तहस-नहस करने के लिए इन दो अस्त्रों, संयुक्त मोर्चे तथा सशस्त्र संघर्ष को, उठाए हुए है। इसी रुप में ये तीनों एक दूसरे से संबंधित है।" बाकी दो हथियारों को सक्षम तरीके से इस्तेमाल करते हुए क्रांति का नेतृत्व प्रदान करने के लिए क्रांति की पूरी क्रम में पार्टी अपने आप को सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक एवं सांस्कृतिक रूप से शिक्षा देने योजनाबद्ध ढंग से प्रयास करना होगा। उसी समय में पार्टी के नेतृत्व में जनसेना

से हल करने के बारे में उदाहरणों के साथ शिक्षा देनी चाहिए। जिले में विभिन्न स्तरों के सभी निर्माणों को प्रभावशाली ढंग से सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक शिक्षा देने के लिए किए जाने वाले व्यक्तिगत व सामूहिक प्रयास के बारे में समझाना चाहिए। ऊपर से नेतृत्व द्वारा डीसी स्तर के कैडरों को भी सांगठनिक ट्रेनिंग व फील्ड ट्रेनिंग दिया जाना चाहिए। इस ट्रेनिंग ऐसा होना चाहिए कि आंदोलन के बदलावों का ध्यान में रखकर ही नहीं, बल्कि डीसी में नये तौर पर चुने गये कैडरों के सांगठनिक क्षमता को बढ़ाने के लिए देना चाहिए। व्यवहार की समीक्षा कर सबक निकालना, सामाजिक परिस्थितियों, आंदोलन एवं दुश्मन के हमले को समझकर आकलन करना आदि विषयों पर व्यवहारिक अनुभवों के साथ विवरण देते हुए शिक्षा देनी चाहिए। दीर्घकालीन लोकयुद्ध को सफलतापूर्वक विकसित करने के लिए कृषि क्रांति एवं गुरिल्ला युद्ध को जारी रखते हुए क्रांतिकारी जन कमेटियों को ग्राम स्तर से जिला स्तर तक गठित करने व संचालित करने/गुरिल्ला बेसों का निर्माण में, जिले के विभिन्न निर्माणों, क्षेत्रों व आंदोलनों विशेषकर गुप्त व खुला गतिविधियों को समन्वय करने, रीजनल/राज्य परस्पेक्टिव के मुताबिक जिला आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने के बारे में जिला कैडरों को शिक्षा देनी चाहिए।

आज की हमारी देश की ठोस सामाजिक परिस्थितियों का ध्यान में रखकर अगर हम देखें तो पाते हैं कि विभिन्न अंतरों के साथ हर जिला (आंदोलन का इलाका) ग्रामीण, उपनगरीय एवं शहरी इलाकों के साथ सापेक्षिक तौर पर बहुत व्यापक एवं अधिक आबादी वाली जिले के रूप में रही है। देश व राज्य की सामाजिक परिस्थितियों में ही नहीं बल्कि जिले की सामाजिक परिस्थितियों में भी असमानवृद्धि दिखायी पड़ती है। इसे ध्यान में रखकर क्रांति के मौलिक राजनीतिक व सामरिक कार्यनीति पर हमारी समझदारी को बढ़ाने के साथ-साथ अपनी जिले में लिये जाने वाली कार्यनीति पर समझदारी बढ़ाना चाहिए। इसके अलावा जिले के आंदोलन के कर्तव्यों को ध्यान में रखकर अगर देखें तो, हर एक जिला विभिन्न रूपों में रणनीतिक भूमिका निभाती है। इसलिए जिला कैडरों को सक्षम नेतृत्वकारी कैडरों के रूप में विकसित करने के लिए उनकी सैद्धांतिक व राजनीतिक समझदारी को बढ़ाना, उनकी मार्क्सवादी विश्व दृष्टिकोण को प्रगाढ़ करना, वे सिद्धांत को व्यवहार में जोड़ने में पकड़ हासिल करना, परिस्थितियों के मुताबिक कारगर कार्यनीति बनाना एवं उनकी नेतृत्वकारी क्षमताओं को बढ़ाना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

नीतियों-दुनिया पर, हमारा देश पर इनकी प्रभावों के बारे में शिक्षित करना चाहिए। प्रतिक्रांतिकारी एलआइसी पॉलिसी-इसकी जवाबी में हमारी पॉलिसी का सामग्रिक रूप से समझने लायक शिक्षा देनी चाहिए।

पार्टी की बुनियादी दस्तावेजों, पार्टी पॉलिसी दस्तावेजों, भारतीय अर्थव्यवस्था, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी पर (1925 से 1967 तक भाकपा द्वारा अपनायी गयी दक्षिणपंथी व वामपंथी लाइनों पर, सीपीएम की नया संशोधनवादी लाइन, एमएम/माओवादी पार्टी इतिहास पर (माले आंदोलन में उभरे विभिन्न दक्षिणपंथी व वामपंथी लाइनों पर), माले क्रांतिकारी ग्रुपों की एकता क्रम पर, भाकपा (माओवादी) का गठन पर, विशेषकर संबंधित राज्यों के माओवादी आंदोलन का इतिहास पर) समग्र रूप से समझने लायक शिक्षा देनी चाहिए। मालेमा की रोशनी में, हमारा पार्टी की बुनियादी एवं पॉलिसी दस्तावेजों की रोशनी में संबंधित जिला/राज्य की सामाजिक परिस्थितियों, उसमें हुई बदलावों, जिला क्रांतिकारी आंदोलन के ज्वार-भाटों को अध्ययन कर आत्मगत अनुभवों सहित अपना दायरे के आंदोलन के अनुभवों को सही रूप से विश्लेषण कर सबक लेने सहयोग करने लायक शिक्षा देनी चाहिए। ठोस परिस्थितियों के मुताबिक कार्यनीति बनाकर अगली पंक्ति में खड़े होकर लागू करने, रीजनल/राज्य, केंद्रीय कमेटियों के निर्णयों को अपनी जिले की परिस्थितियों से सृजनात्मक रूप से जोड़कर अमल करने, रीजियन, राज्य परस्पेक्टिव के मुताबिक अपनी जिले में पार्टी, सेना व संयुक्तमोर्चा को गठित व मजबूत करने सहयोग करने लायक शिक्षा देनी चाहिए। लगातार दैनंदिन काम में फंसे रहने के बजाय सैद्धांतिक व राजनीतिक अध्ययन पर ध्यान देने के लिए सहयोग करने लायक शिक्षा देनी चाहिए।

जिला स्तर के कैडर रूप में अपनी विश्व दृष्टिकोण को फिर से सांचे में ढालकर क्रांतिकारीकरण करने, अध्ययन पद्धति, नेतृत्वकारी कार्यपद्धति एवं कार्यशैली को बेहतर करने, अनुशासन पर दृढ़ता से अडिग रहने, जनवादी केंद्रीयता को सही तरीके से अमल करते हुए सामूहिक कार्यपद्धति व सामूहिक नेतृत्व-व्यक्तिगत कार्यभारों को सुदृढ़ बनाने, समझदारी में व व्यवहार में उभरने/जारी रहने वाली गलतियों को चिन्हित कर उन्हें सुधारने, अध्ययन व व्यवहार से सीखने व सिखाने हेतु आत्मालोचना-आलोचना खुल्लम-खुल्ला रखने, पार्टी में उभरने वाली गैरसर्वहारा रुझानों पर सीधा आलोचना करने, वर्गदिशा व जनदिशा को उनकी सही स्फूर्ती के साथ अमल करने, जनता के बीच एकता कायम करने के लक्ष्य से उनके बीच अंतरविरोधों का सही तरीके

एवं संयुक्तमोर्चा के निर्माणों को मजबूती से ढालने के लिए सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक एवं सांस्कृति रूप से विशेष प्रयास करना होगा। क्योंकि, महान राजनीतिक संघर्षों के लिए पूरी पार्टी में एकता कायम करना वैचारिक एवं राजनीतिक शिक्षा महत्वपूर्ण कड़ी है। सैद्धांतिक शिक्षा की महत्व के बारे में माओ ने इस तरह बताया : "समूची पार्टी को महान राजनीतिक संघर्षों के लिए एकताबद्ध करने हेतु विचारधारात्मक शिक्षा महत्वपूर्ण कुंजी है। इसके बिना पार्टी किसी भी राजनीतिक कार्यभार को संपन्न नहीं कर सकती।"

मालेमा की रोशनी में पार्टी की राजनीतिक लाइन के मुताबिक सही सांगठनिक लाइन एवं सामरिक लाइन लागू करने द्वारा ही क्रमशः नवजनवादी क्रांति की जीत के लिए अत्यावश्यक तीन जादूयी हथियारों - पार्टी, जनसेना (आज पीएलजीए) एवं संयुक्तमोर्चा (आज जनसंगठन, संयुक्तमोर्चा के संगठन, स्थानीय नवजनवादी सरकारों) को मजबूत कर सकते हैं। इसके द्वारा क्रमशः आज की कठिन परिस्थिति से उबरकर देशभर में जनयुद्ध की लपटे सुलगाते हुए एक अजय शक्ति के रूप में विकसित होने की मार्ग प्रशस्त होती है। इसलिए, आज की कठिन परिस्थिति में भी देश के विभिन्न इलाकों में मौजूदा सभी पार्टी कमेटियां शिक्षा में बेहतरी लाने एवं सिद्धांत की रोशनी में व्यवहार में बेहतरी लाने पर अपने ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह हमारे फौरी कर्तव्य है।

हमने मालेमा को इसके लिए हमारी मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकर करते हैं, उसे अध्ययन करते हैं कि विश्व को, उसके अंदर रही हमारा देश को समझकर उन्हें क्रांतिकारी तरीके से बदला जाय एवं पार्टी की क्षमता एवं पार्टी में सभी स्तरों के कैडरों के औसत क्षमता बढ़ाया जाय। इसीलिए, सैद्धांतिक शिक्षा पार्टी की सभी गतिविधियों में बहुत ही महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक है। पार्टी को सैद्धांतिक रूप से शिक्षित करने का मतलब है सीखना। इस क्रम में अर्जित ज्ञान पर निर्भर होकर पार्टी पॉलिसियों को और समृद्ध करना होगा एवं पार्टी कतारों को सैद्धांतिक रूप से विकसित करना होगा। पूरी पार्टी में एकता कायम करने के लिए अध्ययन, शिक्षा एवं सिद्धांत को ठोस रूप से जोड़ने के आधार पर एक ही तरह की शिक्षा की जरूरत है। पार्टी के नेतृत्व स्वयं सैद्धांतिक रूप से शिक्षित होने एवं पार्टी को सैद्धांतिक रूप से शिक्षित करने के लिए मालेमा विज्ञान शास्त्र को अध्ययन करने, कैडरों को शिक्षित करने, उसके उसूलों को ठोस परिस्थितियों के साथ सृजनात्मक रूप से जोड़ने, वर्गसंघर्ष में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होने, पार्टी कैडरों एवं जनता के नजदीक रहकर उनसे एकता कायम

करने, उनसे सीखने एवं गलतियों को सुधारने की सख्त जरूरत है। सैद्धांतिक अध्ययन एवं शिक्षा के मामले में अभी तक विभिन्न स्तरों पर जारी लापरवाही, उपेक्षा, औपचारिकता, आत्मसंतुष्टि, निस्सहायता, स्वत:स्फूर्तता से किसी भी तरह की कपटता से बचते हुए फौरन बाहर आने की जरूरत है। क्योंकि, क्रांति के लक्ष्य हासिल करने हेतु लिये जाने वाले राजनीतिक कर्तव्यों को सफलतापूर्वक अंजाम देने के लिए पार्टी में सोच की एकता, व्यवहार की एकता एवं पार्टी व जनता के बीच एकता जरूरी है। पार्टी सिर्फ सही सैद्धांतिक राजनीतिक लाइन अपनाने द्वारा ही इन तीन एकताओं को कायम हासिल कर सकते हैं, काम करने की क्रम में होने वाली चूक व गलतियों को सुधार सकते हैं एवं खामियों से उबर सकते हैं।

इसलिए, असमानवृद्धि होने वाले विभिन्न इलाकों के आंदोलनों के जरूरतों एवं विभिन्न आंदोलन के क्षेत्रों के जरूरतों के मुताबिक पार्टी की शिक्षा को नियमित रूप से जारी रखने की जरूरत है। किंतु, आज की कठिन दौर में इस कर्तव्य को तुरंत सफलतापूर्वक अंजाम देना कठिन है, बावजूद इसकी महत्व को ध्यान में रखकर समूची पार्टी कमेटियों को मुख्य रूप से केंद्रीय व राज्य कमेटियों ने इसके लिए सृजनात्मक तरीके अपनाते हुए गंभीर प्रयास करने की जरूरत है। हमारी सीसी ने पूरी पार्टी, पीएलजीए एवं जन निर्माणों में योजनाबद्ध ढंग से एवं एक क्रम तरीके से सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक अध्ययन एवं शिक्षा के लिए हमारी पार्टी की सांगठनिक ढांचा, पार्टी की कैडर पॉलिसी को ध्यान में रखकर एक आम एवं एकरूपता से युक्त शिक्षा सिलाबस जारी करती है। *(जहां राज्यकमेटीवजिलाकमेटीकेनामसेउल्लेखकियागयाहै,वहांहरबारउनकेसमानकमेटियों केरूपमेंसमझनाहोगा)*।

प्राथमिक पार्टी यूनिटों एवं ग्राम पार्टी कमेटियों के लिए

पार्टी के प्राथमिक पार्टी यूनिट सदस्यों के अंदर मार्क्सवादी विश्व दृष्टिकोण विकसित करने के लिए भौतिकवादी द्वंद्व सिद्धांत पर, द्वंद्वात्मक पद्धति पर एवं ऐतिहासिक भौतिकवाद पर न्यूनतम प्राथमिक रूप से एक स्पष्ट समझदारी बनानी चाहिए। सामाजिक चरणों, पूंजीवाद, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, नया उपनिवेशवाद, उदारीकरण-निजीकरण-भूमण्डलीकरण (एलपीजी) नीतियों के बारे में प्राथमिक समझदारी बनानी चाहिए। ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के उपनिवेश के तौर पर भारतवर्ष के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास के बारे में, विशेषकर इसमें

एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस की राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा, पीडब्लयु व एमसीसी पार्टियों के संक्षिप्त इतिहास (पीपुल्सवार/लाल पताका-2005), एसी हेंड बुक; एरिया स्तर तक तीनों जादूयी हथियारों की निर्माण पर, बैठकों का संचालन पर, विभिन्न निर्माणों व क्षेत्रों के बीच समन्वय पर, जनवादी केंद्रीयता पर, आलोचना-आत्मालोचना पर, पार्टी अनुशासन पर, वर्ग विश्लेषण, फील्ड ट्रेनिंगों पर, शिक्षा व शुद्धीकरण अभियानों पर, बोल्शेविक अभियानों पर, डीसी/एससी/आरबी/सीसी के सर्कुलरों/लेटरों/निर्णयों से विशेषकर संबंधित डीसी/एससी के सर्कुलरों/लेटरों/निर्णयों से चयनित और पार्टी की राज्य/केंद्रीय पत्रिकाओं से चयनित लेख; जनसंगठन के घोषणापत्र; मजदूर आंदोलन पर, किसान आंदोलन पर, महिला, छात्र, युवाओं के आंदोलनों पर, जनसंगठनों पर, संयुक्तमोर्चा पर, जनमिलिशिया पर, क्रांतिकारी जन कमेटियों पर, महिला समस्या पर, जाति समस्या पर, एलआइसी पॉलिसी पेपर पर, कैडर पॉलिसी पर, पार्टी निर्माण पर, गुरिल्ला युद्ध पर लेख-अध्ययन सामग्री; भाषा व व्याकरण।

जिला कमेटियों के लिए

मालेमा को समझने, अपनी विश्व दृष्टिकोण को मार्क्सवादी विश्व दृष्टिकोण के रूप में ढालने, सिद्धांत को व्यवहार से जोड़ने की तरीके जानने, क्रांतिकारी आंदोलन को निर्माण कर नेतृत्व प्रदान करने मालेमा मूल सिद्धांतों (मार्क्सवादी दर्शनशास्त्र, राजनीतिक अर्थशास्त्र, वैज्ञानिक समाजवाद, सर्वहारा की रणनीति-कार्यनीति), अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन का इतिहास विशेषकर पारिस कम्युन, रूसी व चीनी क्रांतियों के इतिहास, तीन इंटरनेशनल के इतिहास, महान बहस, महान सर्वहारा की सांस्कृतिक क्रांति (जीपीसीआर) को सामग्रिक रूप से समझने लायक शिक्षा देनी चाहिए। पार्टी की आम राजनीतिक लाइन व दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन से संबंधित समग्र समझदारी के साथ आंदोलन का निर्माण करने सहयोग देने लायक शिक्षा देनी चाहिए। देश का इतिहास विशेषकर 1857 से घटित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक व सांस्कृतिक घटनाक्रम सहित राज्य का इतिहास की शिक्षा देनी चाहिए। दुनिया का इतिहास विशेषकर बुर्जुआ जनवादी क्रांतियों, राष्ट्रीयताओं व उपनिवेशों की समस्या, सम्राज्यवाद, संशोधनवाद, संकट, फासीवाद, युद्ध, सर्वहारा क्रांति-समाजवादी राज्य की स्थापना, युद्ध व शांति, राष्ट्रीयमुक्ति आंदोलन, नयी उपनिवेशवाद, समाजवादी राज्य में पूंजीवादी पुनरुद्धार, सामाजिक साम्राज्यवाद, एलपीजी

से सही समय पर इन्हें सुशिक्षित करते रहना चाहिए।

संदर्भ अध्ययन सामग्री :

जब निचले स्तर में होते हैं अध्ययन व शिक्षा के लिए उचित अवसर नहीं मिलने, अध्ययन के बारे में उचित ध्यान नहीं देने वाले एरिया कैडर प्राथमिक पार्टी यूनिटों व जीपीसीयों के संदर्भ अध्ययन सामग्री से चयनित साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। मालेमा के मौलिक उसूल: मार्क्सवादी दर्शनशास्त्र, राजनीतिक अर्थशास्त्र, मालेमा संक्षिप्त इतिहास पर बुनियादी अध्ययन नोट्स; पार्टी मौलिक दस्तोवज; पार्टी पॉलिसी दस्तावेज: जाति समस्या पर पार्टी दृष्टिकोण, महिला समस्या पर हमारी दृष्टिकोण, राष्ट्रीयताओं की समस्या पर पार्टी दृष्टिकोण, क्रांतिकारी जन कमेटियों का पॉलिसी कार्यक्रम, जेल कम्युन घोषणापत्र, पीएलजीए हेंडबुक में प्रासंगिक भाग (पीएलजीए कार्यक्रम, पीएलजीए के बुनियादी बल एवं द्वितीय बल, सैनिक कार्रवाइयों पर पार्टी की दृष्टिकोण; पीएलजीए के कार्रवाई संबंधित नियम, पीएलजीए में पार्टी कमेटियां, कमीशन्स-कमांड्स); मार्क्स: फ्रांस में वर्गसंघर्ष, फ्रांस में गृहयुद्ध, ट्रेड यूनियनों पर; एंगेल्स: समाजवाद, काल्पनिक वैज्ञानिक, 'जर्मनी में किसान युद्ध' पुस्तक की भूमिका; लेनिन: कार्ल मार्क्स पर, क्या करें?, साम्राज्यवाद-पूंजीवाद की चरम अवस्था, साम्राज्यवाद-सामाजिक क्रांति की पूर्वसंध्या, साम्राज्यवाद-समाजवाद में विभाजन, राज्य एवं क्रांति, धर्म के बारे में, तीसरी इंटरनेशनल के कर्तव्य, तीसरी इंटरनेशनल की कम्युनिस्ट पार्टी के सांगठनिक नियम, राष्ट्रीयताओं, उपनिवेशों की समस्या पर सिद्धांत; स्तालिन: द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद, अराजकवाद? या समाजवाद?, लेनिनवाद के मूल सिद्धांत, भाषा समस्या, अक्टूबर क्रांति पर, पार्टी निर्माण पर; माओ: सही विचार कहां से पैदा होती हैं?, व्यवहार के बारे में, अंतरविरोध के बारे में, चीनी क्रांति-चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, नवजनवाद, गुरिल्ला युद्ध, बुनियादी कार्यनीति; अपने अध्ययन में सुधार करो, ग्रंथपूजा को विरोध करो, मनोगदवाद, व्यवहार व विज्ञान के बीच एवं जानने व करने के बीच संबंध के बारे में; पार्टी निर्माण पर लेनिन, स्तालिन, माओ, दिमित्राव, चौ एन लाई, छूह-ते के लेख; सीपीसी: चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की बुनियादी समझदारी, राजनीतिक कार्य, चीनी सोवियत गणराज्य की मौलिक नियम, चीन में महिला मुक्ति; पीसीपी: .... गाइड; सीपीपी: आरपीसी; सीपीएन (एम): यूआरपीसी कार्यक्रम; भाकपा (माओवादी): भारतीय अर्थव्यवस्था पर, पार्टी इतिहास पर, नवजनवादी क्रांति पर बुनियादी अध्ययन नोट्स, सबंधित एरिया/जिला/राज्य की राजनीतिक सांगठनिक समीक्षाएं,

सर्वहारा/कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा निभायी गयी भूमिका के बारे में शिक्षा देनी चाहिए। भारतवर्ष में अगस्त 1947 में हुई सत्ता हस्तांतरण (नाम के वास्ते आजादी) होने से लेकर जारी अर्धऔपनिवेशिक, अर्धसामंती सामाजिक परिस्थिति के बारे में, इसके साथ-साथ सामाजिक परिस्थिति में आने वाली बदलावों के बारे में शिक्षा देनी चाहिए। सामाजिक प्रमुख, मौलिक अंतरविरोध, प्रधान अंतरविरोध, अन्य अंतरविरोधों के बारे में, अतिरिक्त मूल्य, शोषण की तरीके, सामाजिक उत्पीड़िन की तरीके के बारे में, संसदीय राजनीतिक व्यवस्था-शासक वर्गों के एवं अन्य पार्टियों तथा उनकी वर्ग के सामाजिक बुनियाद के बारे में, ब्राह्मणीय विचारधारा के बारे में प्राथमिक समझदारी बनानी चाहिए। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)-भारतीय क्रांति: भारतीय सामाजिक चरित्र, क्रांतिकारी चरण, फौरी व दीर्घकालीन लक्ष्यों, राजनीतिक लाइन, सामरिक लाइन, भारतीय क्रांति के प्रहार के निशानों, प्रेरक शक्तियों, तीन जादूयी हथियारों, सामंती-विरोधी सशस्त्र कृषि क्रांति की कार्यक्रम, साम्राज्यवाद-विरोधी राष्ट्रीय जनवादी क्रांति की कार्यक्रम, सामाजिक उत्पीड़न-विरोधी कार्यक्रम, शहरों में कार्यक्रम, जनसेना का निर्माण, गुरिल्ला युद्ध, राजनीतिक सत्ता की इकाइयों का निर्माण, गुरिल्ला बेसों-आधार इलाकों, क्रांति की क्रम में सामने आने वाले ज्वार-भाटों, गांवों को मुक्त कर, शहरों का घेराबंदी कर, अंत में देशव्यापी सत्ता की स्थापना करने द्वारा आज की व्यवस्था में परिवर्तन लाना, नवजनवादी व्यवस्था को स्थापित करना, उसके बाद समाजवाद-साम्यवाद को हासिल करने के लिए आगे बढ़ना, विश्व समाजवादी क्रांति, सर्वहारा की अंतरराष्ट्रीयतावाद के बारे में प्राथमिक समझदारी बनानी चाहिए।

सामाजिक क्रांति के लिए नेतृत्वकारी वर्ग के तौर पर सर्वहारा वर्ग, उसकी अगवा दस्ते के तौर पर कम्युनिस्ट पार्टी की आवश्यकता, मार्गदर्शक सिद्धांत के तौर पर मालेमा, पार्टी की वर्ग बुनियाद, पार्टी का सांगठनिक ढांचा, जनवादी केंद्रीयता, अनुशासन, क्रांतिकारी कार्यशैली (सिद्धांत को ठोस परिस्थिति से जोड़ना, आलोचना-आत्मालोचना को जारी रखना, गलतियों से सीखना), वर्गदिशा-जनदिशा, व्यापक जनसमुदायों के साथ मजबूती से एकता कायम करने, संगठन बनाने, संगठन में अराजकतावाद एवं उदारतावाद का विरोध करने, व्यवहारिक काम में निश्चित ही गहराई में जाने, निस्वार्थ रूप से जनता को सेवा करने की आवश्यकता के बारे में, सादा जीवन-कठोर श्रम, लक्ष्य को हासिल करने के लिए निस्वार्थ एवं आत्मबलिदान की चेतना के साथ तथा हिम्मत एवं

दृढसंकल्प के साथ काम करने वाली कम्युनिस्ट जीवन व लड़ाकू शैली आदि विषयों के बारे में प्राथमिक समझदारी बनानी चाहिए। 1925 से 1965 के बीच सीपीआई व सीपीएम के नेतृत्व में गठित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास के महत्वपूर्ण पहलुओं, इस संशोधनवादी नेतृत्व के खिलाफ कामरेड सीएम, कामरेड केसी आदि अग्रगामी शक्तियों की सैद्धांतिक, राजनीतिक संघर्ष की महत्व, नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान क्रांतिकारी संघर्ष की महत्व, भाकपा (माले), एमसीसी पार्टियों के गठन की महत्व, भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के मुख्य ज्वार-भाटों, क्रांतिकारियों की एकता-भाकपा (माओवादी) का गठन की महत्व, नयी पार्टी के नेतृत्व में क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास, विशेषकर संबंधित राज्यों/इलाकों के आंदोलन की ठोस परिस्थिति के बारे में प्राथमिक समझदारी बनानी चाहिए। आज की तत्काल आंदोलन की स्थिति-हमारी पार्टी की रणनीतिक योजना एवं कर्तव्यों पर प्राथमिक समझदारी बनानी चाहिए एवं विभिन्न इलाकों की ठोस परिस्थिति को ध्यान में रखकर ठोस कार्यक्रम को तय करके सक्रिय रूप से काम करने की तरह उन्हें तैयार करनी चाहिए।

पार्टी एक्टिविस्ट ग्रुपों (सक्रिय समूहों) के लिए भी इन्हीं विषयों से जरूरी चीजों को चयनित कर उन्हें शिक्षित करनी चाहिए। पार्टी ब्रांचों को भी यही सिलाबस के साथ शिक्षित करनी चाहिए। अपनी दायरे में पार्टी सेल, ब्रांच एवं एक्टिविस्ट ग्रुपों को संचालित करने एवं जनसंगठनों, मिलिशिया एवं क्रांतिकारी जन कमेटियों का नेतृत्व प्रदान करने में काबिल होने लायक जीपीसीयों के लिए प्राथमिक नेतृत्वकारी कार्यपद्धतियों पर शिक्षा देनी चाहिए।

जाहिर है कि क्रांतिकारी आंदोलन का निर्माण के तहत स्थानीय वर्गसंघर्ष में आगे आये हुए लोगों में से पुरोगामी शक्तियों के साथ गुप्त रूप से हमारी प्राथमिक पार्टी यूनिटें गठित होंगे। इन यूनिटें अत्यंत गुप्त रूप से जनता में शामिल होकर स्थानीय जननिर्माणों में रहते हुए, इनके जरिए दैनंदिन समस्याओं पर जनता को नेतृत्व प्रदान करती हैं। इन यूनिटें लगातार जनता को राजनीतिक रूप से जागरूक करते हुए मुख्य दुश्मनों को अलग करते हुए, जनता के बीच एकता बढ़ाते हुए उनकी मार्गदर्शन करती हैं। ये कम्युनिस्ट लक्ष्य के लिए निस्वार्थ एवं हिम्मत के साथ काम करते हुए बुनियादी स्तर पर बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हमारी सही राजनीतिक लाइन पर निर्भर होकर संशोधनवाद एवं सुध ारवाद रुझानों का पर्दाफास करने, जनाधार को गठित करने, तीन जादूयी हथियारों को गठित करने, क्रांतिकारी जन कमेटियों को गठित करने, पेशावरी क्रांतिकारियों

एरिया कैडरों के रूप में अपनी विश्व दृष्टिकोण को फिर से सांचे में ढालने, अध्ययन पद्धति, नेतृत्व की कार्यपद्धति एवं कार्यशैली को बेहतर करने, अनुशासन पर दृढ़ता से अडिग रहने, जनवादी केंद्रीयता को सही तरीके से अमल करने, समझदारी में व व्यवहार में उभरने/जारी रहने वाली गलतियों को चिन्हित कर उन्हें सुधारने, अध्ययन व व्यवहार से सीखने हेतु आत्मालोचना-आलोचना खुल्लम-खुल्ला रखने, पार्टी में उभरने वाली गैरसर्वहारा रुझानों पर सीधा आलोचना करने, वर्गदिशा व जनदिशा को उनकी सही स्फूर्ती के साथ अमल करने, जनता के बीच एकता कायम करने के लक्ष्य से उनके बीच अंतरविरोध ों का सही तरीके से हल करने के लिए सहयोग देने लायक स्थानीय/एरिया स्तर का निर्माणों की सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक शिक्षा देनी चाहिए। व्यवहार की समीक्षा कर सबक निकालना, सामाजिक परिस्थितियों, आंदोलन एवं दुश्मन के हमले को समझकर आकलन करना आदि विषयों पर शिक्षा देनी चाहिए। कृषि क्रांति एवं गुरिल्ला युद्ध को जारी रखते हुए क्रांतिकारी जन कमेटियों को ग्राम स्तर से एरिया स्तर तक गठित करने व संचालित करने, विभिन्न निर्माणों, क्षेत्रों व आंदोलनों विशेषकर गुप्त व खुला गतिविधियों को समन्वय करने, जिला/राज्य परेस्पेक्टिव के मुताबिक एरिया आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने के बारे में एरिया कैडरों को शिक्षा देनी चाहिए।

मालेमा की रोशनी में, हमारी पार्टी की सैद्धांतिक, राजनीतिक लाइन की रोशनी में उत्पीड़ित वर्गों व उत्पीड़ित सामाजिक तबकों के जनता के बीच सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक, सांस्कृतिक, उत्पादन, कल्याण, आदि क्षेत्रों में काम करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन का निर्माण करने में इमारत के खम्बे के रूप में बहुत ही महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष नेतृत्वकारी भूमिका एरिया कमेटियां ही निभाती हैं। एरिया परिस्थितियों के मुताबिक रणनीतिक दृष्टि से कार्यनीति तैयार कर अमल करने एवं ऊपरी कमेटियों के निर्णयों को अपनी इलाके की परिस्थितियों से सृजनात्मक रूप से जोड़कर काम करने लायक एरिया कमेटियों को सुशिक्षित कर सक्षम कैडरों के रूप में विकसित करना चाहिए। इसपर आध ारित होकर एरिया स्तर में जनयुद्ध को सभी क्षेत्रों में मजबूत बुनियाद पर निर्माण कर सकते हैं। इसके जरिए जिला स्तर के आंदोलनों की विकास व जिला स्तर के कैडरों की विकास के लिए मजबूत आधार बना सकते हैं। इन सभी को नजर में रखकर ही, एसी कामरेड लगातार अपनी दैनंदिन काम में डुबे रहने के बजाय अध्ययन के बारे में ध्यान देना चाहिए। आंदोलन के जरूरतों के मुताबिक ऊपर

में, उसमें होने वाली बदलावों के बारे में जनता को अवगत करना चाहिए। बदलती परिस्थितियों के मुताबिक लिये जाने वाले संघर्ष व संगठन के रूपों के बारे में उन्हें समझदारी देनी चाहिए। जनता के साथ नजदीकी से आत्मसात होते हुए परिस्थिति उचित नारा तैयार कर प्रचार-आंदोलन एवं राजनीतिक गोलबंदी, किसान/व्यापक जनसमुदायों को सामंती-विरोधी, दलाल नौकरशाही पूंजीपति-विरोधी, साम्राज्यवाद-विरोधी, राज्य-विरोधी आंदोलनों में जन गोलबंदी, सामाजिक उत्पीड़न, दमन के खिलाफ उत्पीड़ित सामाजिक तबकों के जनता सहित विभिन्न आंदोलनों में जनवादी शक्तियों की गोलबंदी की अवश्यकता को समझने लायक शिक्षा देनी चाहिए। बुर्जुआ सुधारवाद एवं संशोधनवाद का पर्दाफास करते हुए प्रधान दुश्मनों के खिलाफ मुख्य रूप से बुनियाद वर्गों पर निर्भर करते हुए ही मित्र-शक्तियों को हमारी तरफ खींचना व बचना चाहिए। व्यापक जनता के बीच एकता को बढ़ाने के लिए जरूरी कार्यनीति तय करने की आवश्यकता को समझने लायक शिक्षा देनी चाहिए। स्थानीय निर्माणों (वर्ग, तबकों के जनसंगठन, जनमिलिशिया, प्राथमिक पार्टी यूनिटों, जीपीसीयों, क्रांतिकारी जन कमेटियों) का निर्माण कर उनकी काम-काज का संचालन के बारे में शिक्षित करनी चाहिए। स्थानीय निर्माणों की बैठकों, एरिया कमेटियों की बैठकों के एजेंडे बनाने, बैठकों में एजेंडे की विषय-वस्तु को सुधारने, विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कर अंतिम रूप देने, निर्णय लिखने, निर्णयों की अमल पर, आंदोलन पर ऊपरी कमेटी के लिए रिपोर्ट लिखने, समीक्षाएं लिखने, पत्र लिखने, प्रेस विज्ञप्ति, पर्चे लिखने, नारा, प्रचार पद्धतियां तय करने, जमा-खर्चे की लेखा-जोका (अकाउंट्स) लिखने, रिकार्डों की रख-रखाव, गुप्त काम-काज वगैरा विषयों पर सांगठनिक शिक्षा देनी चाहिए। स्थानीय निर्माण बनाने पर, उनकी काम-काज को सक्षम तरीके से संचालन करने पर, वर्गसंघर्ष चलाने पर फील्ड ट्रेनिंग देना चाहिए। नेतृत्वकारी कामरेड एसी कैडरों के साथ मिलकर स्थानीय निर्माणों की बैठकें संचालित करते हुए प्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शन-अनुभव देने की तरीके से इस फील्ड ट्रेनिंग होना चाहिए। इस फील्ड ट्रेनिंग के जरिए एसी कैडरों की औसत क्षमता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। उसी तरह आंदोलन में अगली पंक्ति में खड़े होने वाली पुरोगामी शक्तियों को पार्टी प्राथमिक यूनिटों में संगठित करने में, पेशेवरी क्रांतिकारियों के रूप में पार्टी, सेना एवं संयुक्तमोर्चा में भर्ती करने में, सांस्कृतिक क्षेत्र की कार्य में, कृषि उत्पादन, कल्याणकारी कार्यों का संचालन में शिक्षा देनी चाहिए।

को तैयार करने, उनकी विश्व दृष्टिकोण को फिर से सांचे में ढालने, उनकी वर्गचूत (declassify) करने के लिए जरूरी सही मजबूत बुनियाद इसी सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक, संघर्षरत एवं सांस्कृतिक प्रयास द्वारा ही निर्मित होती है। इसलिए इन यूनिटों के लिए सही सैद्धांतिक, राजनीतिक समझदारी प्रदान करने हेतु, इनकी सांगठनिक ताकत व क्षमता बढ़ाने के लिए सहयोग करने लायक ऊपर से हमारी पार्टी की प्राथमिक शिक्षा देनी चाहिए। इन यूनिटों ने पहले से ही किसान लोगों को राजनीतिक सत्ता छीनने की राजनीति को यानी दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन के बारे में समझाने पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। गुप्त काम-काज के बारे में, गुरिल्ला संघर्षों एवं गुरिल्ला निर्माणों को विकसित करने के बारे में उन्हें जागरूक करना चाहिए। वर्गसंघर्ष को विकसित करने उसे बरकरार रखने के लिए हथियारबंद होकर, जनसंगठनों एवं क्रांतिकारी जन कमेटियों में संगठित होकर लड़ने की उच्च चेतना बढ़ाने लायक, जब का तब प्रचार कार्यक्रम संचालित करने सहित उन्हें सैद्धांतिक एवं राजनीतिक शिक्षा देनी चाहिए। अर्धऔपनिवेशिक, अर्धसामंती व्यवस्था के बारे में, उसमें होने वाली बदलावों के बारे में जनता को शिक्षित करनी चाहिए। बदलती परिस्थितियों के मुताबिक लिये जाने वाले संघर्ष व संगठन के रूपों के बारे में उन्हें समझदारी देनी चाहिए। इन यूनिटों एवं जनता के लिए देने वाली यह शिक्षा की शैली आसान, आचरणात्मक एवं मातृभाषा में होनी चाहिए। इसके लिए जरूरी संदर्भ अध्ययन सामग्री एवं जरूरी अन्य साहित्य पहुंचाना चाहिए एवं अध्ययन करवाना चाहिए।

संदर्भ अध्ययन सामग्री :

पार्टी मौलिक दस्तोवज: मालेमा, पार्टी कार्यक्रम, पार्टी संविधान, भारतीय क्रांति की रणनीति-कार्यनीति में आज की भारतीय समाज की चरित्र, भारतीय समाज में वर्गों का विश्लेषण, जनता के जनवादी मौलिक कर्तव्य, क्रांति का केंद्रीय कर्तव्य-दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए राजनीतिक सत्ता को कब्जा करना आदि विषय; पार्टी पॉलिसी दस्तावेजों: जाति समस्या, महिला समस्या, राष्ट्रीयताओं की समस्या, क्रांतिकारी जन कमेटियों का पॉलिसी कार्यक्रम, पीएलजीए हेंडबुक में पीएलजीए कार्यक्रम, पीएलजीए के तीनों बल-उनके कर्तव्य, विशेषकर बुनियादी बल पर प्राथमिक अध्ययन नोट्स; कामरेड सीएम: आठ ऐतिहासिक दस्तावेज, नक्सलबाड़ी संघर्ष पर दो लेख; सीपीसी: वसंत काल का वज्रनाथ; कामरेड केसी: नक्सलबाड़ी पर (दक्षिणदेश पत्रिका) लेख, सोनारपुर-कांक्शा

संघर्षों पर समीक्षा; मालेमा के मौलिक उसूल: मार्क्सवादी दर्शनशास्त्र, राजनीतिक अर्थशास्त्र, वैज्ञानिक समाजवाद, रणनीति-कार्यनीति पर प्राथमिक अध्ययन नोट्स; हमारी पार्टी का इतिहास (संबंधित जिला/राज्य आंदोलन का इतिहास) पर, हमारा देश का इतिहास, आधुनिक दुनिया का इतिहास, संसदीय व्यवस्था पर प्राथमिक स्तर का अध्ययन नोट्स; सामाजिक आंदोलन, विज्ञान शास्त्रों पर विभिन्न राज्य कमेटियों/शिक्षा विभागों द्वारा स्थानीय भाषाओं में बनायी गयी प्राथमिक स्तर का अध्ययन नोट्स (उदाहरण: बीजे सैक द्वारा हिंदी में प्रकाशित राजनीतिक शिक्षा माला-पाठ 1, 2; डीके इडीसी द्वारा प्रकाशित मास अध्ययन नोट्स, बीसीटीएस पाठ्य पुस्तक); विभिन्न जनसंगठनों (मजदूर, किसान, छात्र, युवा, बाल, महिला, जाति उन्मूलन, सांस्कृतिक, साहित्यक, मानवाधिकार आदि) की घोषणापत्र; हमारी पार्टी का नवजनवादी क्रांति का कार्यक्रम; मार्क्सवादी महान शिक्षकों, अंतरराष्ट्रीय महिला नेत्रियों, कामरेड सीएम व कामरेड केसी, झान्सी लक्ष्मीबाई, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, सावित्री बाई पूले, ज्योतिराव पूले, अंबेडकर, पेरियार, कय्यूर वीर अमर शहीद, गेंदसिंह, गुंडादुर, बिरसामुंडा, अल्लूरि, कोमुरम भीम, लक्षण नयाक आदि के जीवन इतिहास; मार्क्सवाद परिचय माला 1-5 (शिववर्मा); अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस व मई दिवस पर लेख; मार्क्स-एंगेल्स: कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र; मार्क्स: उजरती श्रम और पूंजी, मजदूरी, दाम और मुनाफा, एंगेल्स: कम्युनिज्म के सिद्धांत, वानर नर के रूप में परिवर्तित होने की क्रम में श्रम की भूमिका, मार्क्स की समाधि के पास एंगेल्स का भाषण; लेनिन: युवा संगठन के कर्तव्य, मार्क्सवाद के तीन मूलाधार-तीन संघटक अंग, फ्रेडरिक एंगेल्स पर, मार्क्सवाद-ऐतिहासिक कर्तव्य, कार्ल मार्क्स की शिक्षाओं का ऐतिहासिक भविष्य, संगठित करें, मार्क्सवाद-संशोधनवाद, धर्म के बारे में, राज्य, महिलाओं पर, पार्टी निर्माण पर लेख; स्तालिन: युवा कम्युनिस्ट समिति में अंतरविरोध, द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद, पार्टी निर्माण पर लेख; माओ: वर्ग विश्लेषण, हुनान किसान आंदोलन, तीन लेख (नारमन बेत्यून की स्मृति में, जनता की सेवा करो, एक मूर्ख बूढ़ा आदमी, जिसने पहाड़ों को हटा दिया), नवजनवाद, जनता के बीच के अंतरविरोधों को सही ढंग से हल करने के बारे में, सही विचार कहां से पैदा होती हैं?, कम्युनिस्ट-निपुण, पार्टी निर्माण पर लेख, युवाओं के आंदोलन; चौ एन लाई: युवा पीढ़ी के लिए संदेश-माओ से सीखे, पार्टी निर्माण पर लेख; एमिली बरन्स: मार्क्सवाद क्या है?

एरिया कमेटियों के लिए

मालेमा सिद्धांत को समझने, मार्क्सवादी विश्व दृष्टिकोण को निर्माण करने के लिए मालेमा मौलिक उसूल, विशेषकर भौतिकवाद सिद्धांत, द्वंद्वात्मक पद्धति, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अंतरविरोध के सूत्र, सिद्धांत व व्यवहार के बीच द्वंद्वात्मक संबंध के बारे में, सिद्धांत को ठोस परिस्थिति से सृजनात्मक रूप से जोड़ने की पद्धति के बारे में स्पष्ट समझदारी देनी चाहिए। भारतीय जाति-आधारित सामंतवाद, आज की अर्धसामंती, अर्धऔपनिवेशिक सामाजिक परिस्थिति, उसमें होने वाली बदलाव, सामाजिक वर्ग-वर्ग अंतरविरोध (प्रमुख अंतरविरोध, इनमें मौलिक अंतरविरोध, प्रधान अंतरविरोध, अन्य अंतरविरोध), क्रांतिकारी चरण, पार्टी की सैद्धांतिक राजनीतिक लाइन, नवजनवादी क्रांति, दीर्घकालीन लोकयुद्ध, तीन जादूयी हथियार, बुर्जुआ जनवादी क्रांतियां-पूंजीवाद, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, नयी उपनिवेशवाद, एलपीजी पॉलिसियों-भारतीय समाज पर इनकी प्रभाव पर समझदारी देनी चाहिए। भारतीय संसदीय राजनीतिक व्यवस्था, भारतीय संविधान, शासक वर्गों की पार्टियों, संशोधनवादी पार्टियों, सरकारी सुधारों, प्रतिक्रांतिकारी एलआइसी पॉलिसी-हमारी जवाबी कार्यनीति, अस्तित्व (sectional) आंदोलन-संगठन, नवजनवादी क्रांति का वैकल्पिक कार्यक्रम आदि सैद्धांतिक, राजनीतिक मामलों के बारे में एरिया कमेटियों के लिए बेहतर समझदारी देनी चाहिए। एरिया कमेटी के सदस्य मालेमा की रोशनी में, पार्टी सैद्धांतिक राजनीतिक लाइन की रोशनी में अपनी इलाके की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों पर समझ बनाकर वर्ग अंतरविरोध को विश्लेषण करने, व्यवहार में जोड़ने, पहलकदमी के साथ जनता के बीच राजनीतिक, सांगठनिक, संघर्ष के काम जारी रखने के आत्मगत अनुभव को समीक्षा कर सबक सीखने की अपने क्षमता बढ़ानी चाहिए।

पहले से ही किसान लोगों को राजनीतिक सत्ता छीनने की राजनीति यानी दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन के बारे में समझाने पर अपने ध्यान केंद्रित करना चाहिए। गुप्त काम-काज के बारे में, गुरिल्ला संघर्षों एवं गुरिल्ला निर्माणों को विकसित करने के बारे में उन्हें जागरूक करना चाहिए। वर्गसंघर्ष को विकसित करने, उसे बरकरार रखने के लिए हथियारबंद होकर, जनसंगठनों एवं क्रांतिकारी जन कमेटियों में संगठित होकर लड़ने की उच्च चेतना बढ़ाने लायक, जब का तब प्रचार कार्यक्रम संचालित करने सहित उन्हें सैद्धांतिक एवं राजनीतिक शिक्षा देनी चाहिए। अर्धऔपनिवेशिक, अर्धसामंती व्यवस्था के बारे

गंभीर प्रयास करना चाहिए। इसके तहत पीएलजीए एवं संयुक्तमोर्चा में सैद्धांतिक शिक्षा देने के लिए विशेष प्रयास करना चाहिए। पार्टी का अध्ययन का मामले में एक अच्छी बदलाव लाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले इलेक्ट्रानिक साध नों को चेतनापूर्वक सही उपयोग करना चाहिए न की दुरुपयोग। एक शब्द में कहा जाय तो, पार्टी की शिक्षा को पार्टी निर्माण एवं पार्टी की राजनीतिक जीवन में एक अभिन्न अंग के रूप में तब्दील करना चाहिए।

सभी स्तरों में संचालित पार्टी की सैद्धांतिक अध्ययन, शिक्षा - सिद्धांत को समझकर व्यवहार में उसे हमारी क्रांति की ठोस परिस्थितियों से जोड़कर समस्याओं का हल करने की क्षमता बढ़ाने के लिए ही है, इसके जरिए हमारी पार्टी की समझदारी में एवं व्यवहार में एक उल्लेखनीय बदलाव लाने के लिए ही है - इसे हमेशा ध्यान रखना होगा। इसलिए, सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक शिक्षा को नाम के वास्ते कभी-कभी करने के बजाय सिद्धांत को भारतीय क्रांति की व्यवहार से जोड़ने के लिए लगातार जारी रखना होगा। नियमित रूप से चलाने वाले इस प्रयास की वजह से सभी स्तर के नेतृत्वकारी कैडरों, प्राथमिक पार्टी यूनिटों के सैद्धांतिक व राजनीतिक बुनियाद मजबूत होते हुए सिद्धांत को ठोस परिस्थितियों से सृजनात्मक रूप से जोड़ने में पकड़ एवं आंदोलन की समस्याओं को सही तरीके से हल करने की क्षमता बढ़ेगी। इसकी वजह से सांगठनिक तौर पर पार्टी मजबूत होगी। पार्टी की सभी कमेटियां आत्मविश्वास के साथ क्रांति को सक्षम नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं। ऐसा करने द्वारा ही अत्यंत फासीवादी दुश्मन की 'समाधान' हमले को एकजुटता एवं हिम्मत के साथ मुकाबला करते हुए जीत हासिल कर सकते हैं। इसी तरह दूसरी तरफ अर्ध औपनिवेशिक-अर्ध सामंती विचारधारा एवं संस्कृति के प्रभाव से एवं संशोध नवादी सैद्धांतिक हमलों से पार्टी को बचाने में एवं इन्हें सैद्धांतिक रूप से मुकाबला करने में जीत हासिल कर सकते हैं। ऐसा करने से ही पार्टी, पार्टी के नेतृत्व में जनसेना एवं संयुक्तमोर्चा मजबूत होते हुए अजेय शक्ति के रूप में विकसित हो सकती हैं। भारत की नवजनवादी क्रांति को सफल बनाकर विश्व समाजवादी क्रांति को जीत की रास्ते पर आगे बढ़ा सकते हैं। ऐसा करने से ही हजारों-हजार अमर शहीदों की सपनों को पूरा कर सकते हैं।

इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए ही सीसी सभी स्तरों के पार्टी यूनिटों के लिए उनकी स्तर के मुताबिक सामान्यीकृत व एकरूपता वाली सिलाबस भेज रही है। इसपर आधारित होकर पार्टी के सभी स्तरों में जरूर 2-3 सालों में एक

विकास, कृषि क्षेत्र में पूंजीवाद, कृषि समस्या पर निबंध, जुझारू भौतिकवाद का महत्व, यूरोप की मजदूर वर्ग की आंदोलन में सुधारवाद, अप्रैल सिद्धांत, सर्वहारा क्रांतिकारी युद्ध की कार्यक्रम, दूसरी इंटरनेशनल बिखरा, सर्वहारा क्रांति-गद्दार काउटत्स्की, साम्राज्यवाद-पूंजीवाद की चरम अवस्था, राज्ययंत्र, साम्राज्यवाद-समाजवाद में विभाजन/संशोधनवाद, तीसरी इंटरनेशनल का कार्यक्रम, तीसरी इंटरनेशनल का संगठनिक नियम, तीसरी इंटरनेशनल-इतिहास में उसकी स्थान, चुनाव, राष्ट्रीयताओं व उपनिवेशों की समस्या, सोवियतों-द्वंद्वाधिकार, पारिस कम्युन, 1905 की क्रांति, कार्यनीति, युद्ध एवं शांति, महिला समस्या, बुद्धिजीवियों की समस्या, राजी व समझौते, ट्रेड यूनियनों-जनसंगठनों पर लेख, सोवियतों पर, अक्टूबर क्रांति पर; स्तालिन: समाजवाद? या अराजकवाद?, लेनिनवाद की मूल सिद्धांत, बोल्शेविक पार्टी की इतिहास, मार्क्सवाद-भाषा शास्त्र, विपक्ष; चिंगकांग पहाड़ों में संघर्ष, एक चिंगारी सारे जंगल में आग लगा सकती है, चीन में लाल राजनीतिक सत्ता क्यों कायम रह सकती है?, दर्शनशास्त्र के लेख, अंतरविरोध के बारे में, व्यवहार के बारे में, मिलिटरी रचनाएं, शिक्षा-शुद्धीकरण के लेख, नवजनवाद, नेतृत्वकारी कार्यपद्धतियों व कार्यशैली पर लेख, मिश्रम सरकार, आधार इलाकों पर, कृषि क्रांतिकारी सुधारों पर, अर्थनीति पर लेख, साम्राज्यवाद पर, युद्ध व शांति पर, कला व साहित्य पर, महिला समस्या पर, सांस्कृतिक क्रांति पर लेख; सीपीसी: सोवियतों पर लेख, महान बहस लेखों में स्तालिन के सवाल पर, नये उपनिवेशवाद, सर्वहारा क्रांति और खुश्चोव का संशोधनवाद, खुश्चोव का नकली कम्युनिज्म और दुनिया के लिए उसके ऐतिहासिक सबक-14 जून का लेख, आधुनिक चीनी नव-जनवादी क्रांति का इतिहास-हो कान ची, शंघाई पाठ्य पुस्तक में पहली भाग (राजनीतिक अर्थशास्त्र पर), जीपीसीआर से संबंधित चयनित दस्तावेज/लेख; छूह-ते मिलिटरी रचनाएं; चीन में महिला मुक्ति (क्लाडी ब्रायेल), चीनी मुक्तिसंघर्ष में महिलाएं (संपादक: उमेन आफ चाइना, न्यू वरल्ड प्रेस), क्रांतिकारी चीन में महिलाएं-पार्टी (डेलियाडेविन), चीन में क्रांति से पहले, उसके बाद महिला समस्या, शांडिनो पुत्रिकाएं-निकाराग्वुआ संघर्ष में महिलाओं के कथन (मार्गरेट रांडाल), भारतीय श्रमिक आंदोलन में महिलाएं (एपी सीएमएस), महिला नहीं तो, इतिहास नहीं-आंदोलनों में भारतीय महिलाएं (विगार्गी); हमारी पार्टी: संशोधनवादी डेंग गुट पर और माओवाद पर पूर्ववर्ती पीपुल्सवार पार्टी एवं एमसीसीआई के दस्तावेज; एकता कांग्रेस दस्तावेज (बुनियादी दस्तावेज, केंद्रीय एवं राज्यों के राजनीतिक सांगठनिक समीक्षाओं के दस्तावेज);

पार्टी पॉलिसी दस्तावेज (शहरों में काम-काज, कैडर पॉलिसी, एलआईसी पॉलिसी-हमारी जवाबी कार्यनीति, पीएलजीए हेंड बुक, अंतरराष्ट्रीय संगठन का गठन, चीनी सामाजिक साम्राज्यवाद); शुद्धीकरण अभियान के दस्तावेज; भाकपा (माले) की 8वीं कांग्रेस (1970) के दस्तावेज; भाकपा (माले) (पीपुल्सवार): आत्मालोचना रिपोर्ट (1980) का दस्तावेज, आंध्रप्रदेश राज्य की 12वीं अधि वेशन का पीओआर (1980), अखिल भारतीय स्पेशल कान्फेरेंस (1995) का पीओआर; भाकपा (माले) पीयू: 1, 2, 3 (1997) के केंद्रीय अधिवेशनों के पीओआर; भाकपा (माले) (पीपुल्सवार): 9वीं कांग्रेस (2001) का पीओआर; एमसीसीआई: पहली, दूसरी केंद्रीय अधिवेशनों (1986 व 1996) के पीओआर; भाकपा (माले) नक्सलबाड़ी के बुनियादी दस्तावेज: बुनियादी अवस्थाएं (Basic positions), समीक्षात्मक नोट (मार्च 2008), मिलिटरी लाइन (जनवरी 2010), पार्टी निर्माण एवं तैयारियों पर मार्गदर्शन (जनवरी 2010), जनता में काम एवं जनसंगठनों के लिए मार्गदर्शन (जनवरी 2010), ब्राह्मणवाद के खिलाफ संघर्ष (जनवरी 2010), संयुक्तमोर्चा के गतिविधियों पर मार्गदर्शन (फरवरी 2010) आदि पर दस्तावेज; अध्ययन कक्षाओं के लिए बुनियादी नोट्स: मालेमा, मार्क्सवादी दर्शनशास्त्र, राजनीति अर्थशास्त्र, भारतीय अर्थव्यवस्था, पार्टी का इतिहास (1925-67); पीपुल्सवार पत्रिका में प्रकाशित लेख: विश्व युद्ध, तीन दुनिया के सिद्धांत, फासीवाद, नये उपनिवेशिकवाद, भूमंडलीकरण; लाल पताका, पीपुल्सवार, लाल चिंगारी पत्रिकों में प्रकाशित चयनित लेख; सीपीपी: बारियो आर्गनाइजिंग कमेटी गाइड, पीसीपी: आरपीसी; एनसीपी: यूआरपीसी कार्यक्रम; भाषा एवं व्याकरण

शहरी व नगरी कमेटियों के लिए

नक्सलबाड़ी के दिनों में कोलकता नगर आंदोलन को छोड़कर पूर्ववर्ती दोनों माओवादी धाराओं के समय में हो या नयी पार्टी-भाकपा (माओवादी) को गठित करने से लेकर हो, पार्टी की शहरी व नगरी (सिटी) कमेटियां एरिया व जिला स्तर के कमेटियों के रूप में ही काम की। कुछ नगर कमेटियों के सैद्धांतिक, राजनीतिक एवं सांगठनिक स्तर, राजनीतिक रूप से निभायी गयी भूमिका जिला कमेटी से अधिक होती थी। लेकिन दुश्मन के दमन एवं आत्मगत कमी-कमजोरी व खामियों की वजह से इन कमेटियां बहुत समय तक कायम रहकर और विकसित होने से पहले ही नुकसान हुई या कमजोर हुई। बहुत जगहों में शहरी

गहराई से अध्ययन करना; विश्व क्रांतिकारी अनुभवों से और सीखने के लिए फिलिप्पींस, पेरू, नेपाल, बंगलादेश, तुर्की आदि क्रांतियों को और गहराई से अध्ययन करना; हमारी देश-दुनिया के क्रांतियों के ज्वार-भाटों को गहराई समझने के लिए हमारी देश-दुनिया के राजनीति को अध्ययन करना जरूरी है। इसे ध्यान में रखकर व्यक्तिगत अध्ययन पर अत्यंत महत्व देना चाहिए। इसी तरह सीसी की सामूहिक अध्ययन पर उचित ध्यान देना चाहिए।

कामरेडो,

हमारी पार्टी की शिक्षा की लक्ष्य - क्रांति की समस्याओं का सही तरीके से हल करते हुए सफलताओं को हासिल करने के लिए पार्टी क्षमता, इसके तहत सभी स्तरों के कैडरों की औसत क्षमता को बढ़ाना, पूरी पार्टी की सैद्धांतिक एवं राजनीतिक बुनियाद मजबूत करते हुए पार्टी, पार्टी के नेतृत्व में जनसेना एवं संयुक्तमोर्चा को मजबूती से विकसित करना। सीसी से जीपीसी तक ऊपर से नीचे तक इस सिलाबस एवं संदर्भ अध्ययन सामग्री को ध्यान में रखकर व्यक्तिग तौर पर एवं संबंधित कमेटियों में सामूहिक तौर पर सामग्रिक रूप से अध्ययन करना चाहिए। आज हमारी पार्टी की ठोस स्थिति में सामूहिक अध्ययन महत्व रखती है। अनपढ़ कामरेडो को पढ़े-लिखे कामरेड पढ़कर बताना है। अनपढ़ कामरेड पढ़ाकर सुनने के अलावा पढ़ाई सीखने के लिए गंभीर प्रयास करना चाहिए। ऊपर से नीचे तक पार्टी कमेटियां एवं राजनीतिक स्कूलें विभिन्न स्तर के नेतृत्वकारी कमेटियों एवं आंदोलनों के जरूरतों एवं विशेषताओं को ध्यान में रखकर सिद्धांत को हमारी ठोस परिस्थिति से जोड़कर विभिन्न रूपों में शैक्षणिक कक्षाएं संचालित करना चाहिए। सिलाबस, अध्ययन नोट्स एवं संदर्भ अध्ययन सामग्री को स्थानीय भाषाओं में देकर अध्ययन करवाना चाहिए। शैक्षणिक कक्षाएं भी स्थानीय भाषाओं में ही चलाना चाहिए। प्राथमिक पार्टी सदस्यों से लेकर जिला कैडरों तक यह शिक्षा सरल शैली में होनी चाहिए एवं व्यवहार से जोड़कर होनी चाहिए। यथावत जरूरी शिक्षक का सहायक सामग्री (teaching aids) को इस्तेमाल करना चाहिए। स्थानीय भाषाओं में सिलाबस, अध्ययन नोट्स, अध्ययन सामग्री देने के लिए हर एक राज्य कमेटी योजना के तहत प्रयास करना चाहिए। कामरेडो की स्तर, विषयवस्तुय स्थानीय परिस्थिति, शिक्षकों की क्षमता के मुताबिक शैक्षणिक कक्षाओं की समयावधि का निर्णय करना चाहिए। पार्टी की शिक्षा के लिए सीसी से डीसी (जीबीयों में एरिया कमेटियों) तक राजनीतिक स्कूल बनाने एवं राजनीतिक शिक्षकों के टीम बनाने के लिए योजना के तहत

तैयार कर सकते हैं; मजबूत पार्टी निर्माण, मजबूत पार्टी के नेतृत्व परस्पर आधारित ही हैं। किंतु, इसमें प्रधान, महत्वपूर्ण व रणनीतिक है, पूरी पार्टी के आगे खड़े होने वाला है नेतृत्व। हमारी केंद्रीय कमेटी, उसके नेतृत्व में पार्टी के सभी कतारें चेतनापूर्वक दृढ़संकल्प के साथ कठोर श्रम करने द्वारा ही, हिम्मत से लड़ने द्वारा ही, आत्मगत अनुभवों से एवं विश्व क्रांतिकारी अनुभवों से सीखने द्वारा ही पार्टी को मजबूत एवं अजेय बना सकते हैं। किंतु ये सब आसमान से गिरने वाले नहीं हैं। अजेय बोल्शेविक पार्टी एवं चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहासों से हमें सीखने वाली बहुत ही महत्वपूर्ण उपदेशों में से एक है।

भारतीय क्रांति को सफल बनाने के लिए पर्याप्त उच्च श्रेणी वाले नेतृत्वकारी कैडर की सख्त जरूरत है। इसलिए, केंद्रीय कमेटी खुद को और राज्य कैडरों सहित सभी कतारों को सैद्धांतिक रूप से सुशिक्षित करने के लिए अपनी उच्च स्तर के समुचित रूप से सैद्धांतिक अध्ययन करना चाहिए। अपनी स्वयं अध्ययन में एवं पार्टी की शिक्षा में होने वाली गलतियों को अवश्य सुधारना चाहिए। राज्य कैडरों के सभी संदर्भ अध्ययन सामग्री सीसी स्तर के कैडरों के लिए न्यूनतम अध्ययन सामग्री के रूप में रहेगी। इस सामग्री पर सीसी स्तर के सभी कैडरों को न्यूनतम परिचय होना चाहिए। इन पर पकड़ हासिल करने के लिए लगातार प्रयास करना चाहिए। भारतीय क्रांति की समस्या को हल करने के लिए सहयोग देने वाली सभी साहित्य केंद्रीय स्तर के कैडरों के लिए अध्ययन सामग्री के रूप में रहेगी। आम तौर पर मालेमा मौलिक सिद्धांतों पर, अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन का इतिहास पर, हमारा देश का कम्युनिस्ट आंदोलन का इतिहास पर, वर्तमान देश-दुनिया की परिस्थितियों पर, हमारी क्रांतिकारी युद्ध पर गहरी ज्ञान बढ़ाने लायक अध्ययन करना चाहिए। मालेमा की रोशनी में, सामाजिक विकास की नियमों के मुताबिक काम करते हुए भारत की नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के लक्ष्य से आंदोलन की समस्याओं का हल के लिए अपना ध्यान केंद्रित देकर इसके लिए मदद देने वाली साहित्य को चयनित कर व्यापक, गहराई, समग्र एवं तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। आज की हमारी केंद्रीय स्तर के अध्ययन विषयवस्तु के रूप में निम्न लिखित विषयों को लेना चाहिए: आज भारत की क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लक्ष्य से हमारी रणनीति-कार्यनीति को समृद्ध करने के लिए हमारी देश की सामाजिक परिस्थितियों में हुई बदलावों पर गहराई से अध्ययन करना; समृद्ध आत्मगत अनुभवों से और सीखने के लिए हमारी पार्टी का इतिहास को और

एवं नगरी कमेटियों का पुनर्निर्माण भी नहीं कर पाये। किंतु नयी पार्टी का गठन के बाद चार-पांच सालों में शहरी आंदोलन बहुत हद तक नुकसान होने के बावजूद कुछ राज्यों में इसमें कुछ नये अनुभव हासिल किये।

भारतीय क्रांति की रणनीति-कार्यनीति एवं शहरी काम-काज के दस्तावेजों में शहरी आंदोलन की रणनीतिक भूमिका, कार्यनीति, काम-काज, कर्तव्यों के बारे में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया। इसके तह पार्टी निर्माण, अध्ययन, शिक्षा पर मौलिक रूप से सही मार्गदर्शन ही दी गयी। इन पर निर्भर होकर शहरी आंदोलन को विकसित करने के लिए कर्तव्यों एवं योजना बनाकर कार्य में उतरने के बावजूद, उसी समय में देशभर में पहले से मुकाबले भीषण प्रतिक्रांतिकारी हमलों एवं आत्मगत गलतियों की वजह से शहरी आंदोलन बहुत हद तक नुकसान हुईं। आत्मगत गलतियों में मुख्य है - देश परिस्थितियों में हुई बदलावों के तहत शहरी इलाकों में हुई बदलावों को ध्यान में रखकर दुश्मन के हमले से आत्मगत शक्तियों को बचाते हुए काम करने हेतु संघर्ष एवं निर्माण के रूपों में, काम-काज में किये जाने वाले बदलावों के बारे में केंद्रीय एवं राज्यों के नेतृत्व द्वारा गहराई से सोच कर शीघ्र जरूरी निर्णय नहीं ले पाना। इसमें एक मुख्य व अभिन्न विषय था अध्ययन व शिक्षा के बारे में उचित ध्यान नहीं देना। इसलिए, शहरी व मैदान इलाकों के आंदोलनों को पुनर्निर्माण कर विकसित करने के लक्ष्य से शहरों/नगरों में पार्टी यूनिटों सहित सभी पार्टी कमेटियां अध्ययन व शिक्षा की महत्व को गहराई से अवगत करना एवं इसपर विशेष प्रयास करना जरूरी है।

साम्राज्यवादियों एवं भारतीय दलाल शासक वर्गों के हितों के मुताबिक एलपीजी नीतियों इस दौर में शहरीकरण, शहरों व गांवों के बीच संबंध, गांव शहरों पर निर्भर होना, गांव शहरों से प्रभावित होना - ये सब बदलाव अपेक्षाकृत तेजी से आयी है। इस तरह के उल्लेखनीय बदलावों के अनुसार दीर्घकालीन लोकयुद्ध में शहरी आंदोलन, उपनगरीय (suburban) इलाके के आंदोलन एवं शहर-आधारित जारी कानूनी/खुले जनवादी आंदोलनों की महत्व भी बहुत बढ़ गयी। वस्तुगत परिस्थितियों में हुई बदलावों के कारण ग्रामीण एवं शहरी आंदोलन-सामंती-विरोधी, सामाजिक उत्पीड़न-विरोधी, साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजी व राज्य-विरोधी आंदोलन बहुत हद तक एक साथ मिलकर चलने की स्थिति और बढ़ी है। इसे ध्यान में रखकर हमारी पार्टी की राजनीतिक लाइन के मुताबिक मुख्य कार्यक्षेत्र तौर के पर ग्रामीण इलाके पर, मुख्य शक्ति तौर पर किसानों पर निर्भर करते हुए ही, ग्रामीण इलाकों में गैरकिसानी व्यापक जनता एवं

शहरी इलाकों में मजदूर वर्ग के साथ-साथ सभी क्षेत्रों के जनता के अंदर काम करने द्वारा ही व्यापक व गहरी जनाधार एवं सामूहिक चरित्र वाली मजबूत व गुप्त पार्टी एवं लड़ाकू क्षमता से युक्त जनता की सक्रिय समर्थन हासिल मजबूत जनसेना को निर्मित कर नवजनवादी क्रांति सफल बना सकते हैं।

शहरी कैडरों व नगरी कैडरों के लिए एरिय व जिला स्तर हेतु दिए जाने वाली सिलाबस (में सिर्फ ग्रामीण इलाकों के लिए ही इस्तेमाल होने वाल चीजों को छोड़कर) पर निर्भर होकर अध्ययन करवाना व शिक्षित करना चाहिए। इसके साथ-साथ विशेषकर शहरी व नगरी आंदोलनों का निर्माण के लिए जरूरी विषयों पर सिलाबस, अध्ययन नोट्स एवं संदर्भ अध्ययन सामग्री को तैयार कर उन्हें देनी चाहिए। इन कामरेडों को भारतीय क्रांति की रणनीति-कार्यनीति दस्तावेज में शहरों में हमारा काम से संबंधित विषयों पर, शहरों में हमारी काम-काज का दस्तावेज पर, मजदूर कानूनों पर, एलपीजी पॉलिसियों की वजह से शहरी इलाकों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक, यातायात, कम्युनिकेशन, शासन-प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में हुई मुख्य बदलावों पर, इन बदलावों में समानता व अंतरों पर, संबंधित इलाके के ठोस परिस्थिति पर, शहर/नगर/राज्य/देश की मजदूर आंदोलन का इतिहास पर, शहरी काम से संबंधित हमारी दिशा निध र्रिण, संघर्ष व सांगठनिक तरीके, शहरों पर आधारित होकर निर्मित किए जाने वाले कानूनी व जनवादी आंदोलनों, गुप्त पार्टी निर्माण, गुप्त व खुले गतिविधि यों का समन्वय पर विशेष सिलाबस तैयार कर अध्ययन करवाना व शिक्षित करना चाहिए। सिद्धांत को ठोस परिस्थिति से सृजनात्मक तरीके से जोड़ने एवं शिक्षा भी ठोस रूप से होने के लिए संबंधित नेतृत्व के साथ-साथ कैडर भी अपने दायरे में शहरों/नगरों की परिस्थिति को अध्ययन करना चाहिए। इसी तरह शहरों एवं नगरों के प्राथमिक पार्टी यूनिटों एवं फेक्टरी/बस्ती/कालेज पार्टी कमेटियों को शिक्षित करना चाहिए। संबंधित ऊपरी कमेटियां इनकी राजनीतिक, सांगठनिक, संघर्ष व तकनीकी संबंधी समझदारी तथा नेतृत्वकारी शक्ति-क्षमताओं को बढ़ाने हेतु सहयोग देने वाली अन्य विषयों को जोड़कर अध्ययन करवाना चाहिए एवं शिक्षित करना चाहिए।

मुख्य रूप से ग्रामीण इलाके के आंदोलन पर अपनी ध्यान देने वाली एरिया व जिला कमेटियों के प्रत्यक्ष नेतृत्व में छोटे शहरों, जिला केंद्रों एवं उपनगरीय इलाकों में कार्यरत पार्टी कामरेडो के लिए उनकी स्तर के मुताबिक पार्टी शिक्षा से जरूर शिक्षित करना चाहिए। इसके अलावा इन्हें भी शहरी व नगर कैडरों के

सक्षम नेतृत्वकारी भूमिका अदा करना होगा; नवजनवादी राज्य की स्थापना के बाद स्थापित होने वाली सामाजिक समाज में राजनीतिक सत्ता संशोध नवादियों/प्रतिक्रियावादी तत्वों के हाथों में जाने से/पूंजीवाद की वापसी से बचते हुए, कम्युनिज्म लक्ष्य को लेकर सर्वहारा अधिनायकत्व के मातहत सही लाइन का मार्गदर्शन में क्रांति को जारी रखते हुए, सर्वहारा एवं व्यापक जनता की विश्व दृष्टिकोण को क्रांतिकारीकरण करते हुए, सांस्कृतिक क्रांतियों का सफलतापूर्वक अंजाम देने की परिप्रेक्ष्य के साथ आज उन महान अनुभवों की रोशनी में नेतृत्व प्रदान करना होगा।

दीर्घकालीन लोकयुद्ध में छोटे व कमजोर शक्ति बड़े व मजबूत शक्ति को हराकर अंतिम जीत हासिल करने से पहले लगातार अत्यंत क्रूर व निर्मम तरीके से किये जाने वाले प्रतिक्रांतिकारी हमले का सामना करने की वजह से आम तौर पर कुछ समय गंभीर नुकसान/पीछे हट हो सकते हैं। यह हमारी आत्मगत अनुभव भी है, दुनिया के अधिकतर पार्टियों का अनुभव भी। मालेमा की रोशनी में पार्टी की सैद्धांतिक व राजनीतिक लाइन को सही तरीके से लागू करने की तरह पार्टी को सुशिक्षित करने एवं इस लाइन पर दृढ़ता से अडिग रहने द्वारा ही सही सांगठनिक व सैनिक लाइन को अमल कर सकते हैं। हमारी सही सैद्धांतिक व राजनीतिक लाइन को सही तरीके से लागू करने द्वारा ही मजदूर, किसान आदि व्यापक जनता को राजनीतिक रूप से गोलबंद करने में सामना करने वाली समस्याओं एवं सशस्त्र संघर्ष में सामना करने वाली समस्याओं को सही तरीके से हल कर सकते हैं; पार्टी अपनी गुप्त स्वभाव एवं सांगठनिक मजबूती को बढ़ा सकते हैं; जनवादी केंद्रीयता को उसकी स्फूर्ती के साथ अमल करते हुए पार्टी की एकता, केंद्रीकृत नेतृत्व एवं अनुशासन को मजबूत करने के अलावा पूरी पार्टी के सदस्यों व जनता की पहलकदमी को बढ़ा सकते हैं; वर्गदिशा व जनदिशा को अनुसरण कर सकते हैं; गैरसर्वहारा रुझानों का सफलतापूर्वक जड़ से उखाड़ सकते हैं; दो लाइनों की बीच संघर्ष को सही तरीके से चलाकर पार्टी की एकता को बढ़ा सकते हैं; सर्वहारा वर्ग में, कृषि मजदूर-गरीब किसानों में मुख्य रूप से केंद्रीकृत कर पार्टी यूनिटों को निर्मित कर उन्हें विस्तार करते हुए बढ़ी संख्या में पेशेवरी क्रांतिकारियों को भर्ती कर शिक्षित करते हुए व्यवहार में नेतृत्व में लाते हुए पार्टी की सर्वहारा चरित्र को कायम कर सकते हैं; क्रांति में सर्वहारा के नेतृत्वकारी भूमिका बढ़ा सकते हैं; अन्य जनवादी वर्गों व तबकों में पार्टी को विस्तारित कर सकते हैं; मजबूत पार्टी व मजबूत पार्टी के नेतृत्व को

के कैडरों से होकर, पूरी पार्टी की शीर्ष भाग में खड़े होकर प्रभावशाली तरीके से नेतृत्व प्रदान करना होगा; लगातार जनमानस को क्रांति के लिए अनुकूल बनाते हुए जनयुद्ध में जनता की सक्रिय भूमिका को बाहर निकालना होगा; सही मित्रों व सही दुश्मनों के बीच अंतर, सही मार्क्सवाद व नकली मार्क्सवाद के बीच अंतर पहचानने की तरह पार्टी कतारों एवं जनता की राजनीतिक चेतना बढ़ाना होगा; जनता को क्रांतिकारी रास्ते से भटकाने के लिए प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों व साम्राज्यवादियों की साजिशों व षड्यंत्रों एवं नये गोबलसीय प्रचार का मुकाबला करते हुए राजसत्ता पर कब्जा जमाने की आत्मविश्वास व हिम्मत के साथ जनता को क्रांतिकारी रास्ते पर आगे ले जाना होगा; रणनीति-कार्यनीति पर लगातार ध्यान केंद्रित करते हुए उन्हें विभिन्न परिस्थितियों में (देश-दुनिया की परिस्थितियों में एवं क्रांतिकारी युद्ध में होने वाली बदलावों के मुताबिक) सही तरीके से इस्तेमाल करने में प्रवीण होना होगा; दीर्घकालीन जनयुद्ध के क्रम में सामने आने वाली कठोर मुश्किलों, भीषण प्रतिक्रांतिकारी हमलों, अस्थायी पराजयों एवं पीछे-हटों से डरे बिना निश्चित वर्गसंघर्ष के अनुभवों से सीखते हुए, हिम्मत से लड़ते हुए टुकडों में बांटकर दुश्मन की शक्ति को नाश करते हुए आत्मगत शक्ति को राशि व गुण में बढ़ाते हुए सफलतापूर्वक लक्ष्य हासिल करने के तरफ आगे बढ़ना होगा; क्रांति की क्रम में सामना होने वाले अप्रत्याशित खतरों से बचते हुए, जटिल परिस्थितियों में भी हल करने की रास्तों का पहचान कर आगे बढ़ने के लिए वर्तमान घटना क्रम को पहले ही देखने में सक्षम होने के अलावा उसकी भविष्य की क्रम एवं उसकी दिशा को सही आकलन करना होगा; वर्गसंघर्ष की क्रम में घटित गलतियों का पहचान कर ईमानदारी से स्वीकार करते हुए उनसे सीखते हुए जनता को सिखाना होगा; पार्टी में उभरने वाली गैरसर्वहरा रुझानों/वामपंथी व दक्षिणपंथियों के खिलाफ दृढ़ता से सही तरीके से लड़कर व हराकर पार्टी की एकता व पार्टी का लाइन को संरक्षित करना होगा; स्वार्थ (पद, प्रतिष्ठा, भ्रष्टाचार, जाति-धर्म-राष्ट्रीयता-लिंग-इलाका-भाई भतीजावाद) के लिए नहीं, बल्कि कम्युनिस्ट समाज की स्थापना के महान आशय के लिए लगातार वर्गसंघर्ष को महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में लेकर, राजनीति को प्रधान स्थान में रखकर स्वार्थ के खिलाफ लड़ने वाली कम्युनिस्ट चेतना से लैस होना होगा; जनता ही इतिहास की निर्माता है की सिद्धांत पर पूरा विश्वास रखकर उन्हें निस्वार्थ रूप से सेवा करते हुए उनके आगे खड़े होकर अंतिम जीत हासिल करने के लिए उन्हें आगे ले जा सकने वाली क्रांतिकारी निर्माता की भूमिका एवं

लिए दी जाने वाली शिक्षा देनी चाहिए। सिलाबस में, संदर्भ अध्ययन सामग्री में कुछ बदलाव कर देनी चाहिए। इस जिम्मेदारी संबंधित जिला/रीजनल/राज्य कमेटियों की है। ग्रामीण इलाकों पर आधारित होकर निर्मित की जाने वाली शहरी आंदोलन से संबंध में संबंधित पार्टी नेतृत्वकारी कमेटियां अपने दायरे में शहरों व उपनगरीय इलाको में क्रांतिकारी आंदोलन निर्माण करने के लिए स्वयं वहां की ठोस परिस्थिति को अध्ययन करना चाहिए। योजना के मुताबिक नये शक्तियों को तैयार कर शिक्षित करना चाहिए। उचित शक्तियों को चयनित कर शिक्षित कर आवंटित करना चाहिए। इन इलाकों के कैडर के अध्ययन व शिक्षा के बारे में विशेष ध्यान देना चाहिए।

संदर्भ अध्ययन सामग्री:

शहर व नगर कमेटियों का संदर्भ अध्ययन सामग्री के रूप से निम्न लिखित साहित्य देनी चाहिए: भारतीय क्रांति की रणनीति-कार्यनीति दस्तावेज में, एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस केंद्रीय राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा में शहरी आंदोलन से संबंधित विषय; शहरी काम-काज पर नयी पार्टी दस्तावेज; शहरी काम-काज पर एपी राज्य कमेटी भाकपा (माले) (1973) दस्तावेज; गुप्त काम-काज पर केंद्रीय व राज्य कमेटियों के सर्कुलर/लेटर; कोलकता, हैदराबाद, मुंबई, दिल्ली, सिंगरेणी, धनबाद, वरंगल, विशाखपट्टनम आदि शहरी आंदोलनों के अनुभव; एलपीजी नीतियां शुरू होने से लेकर देश के शहरों व नगरों में जारी मजदूर, शहरी गरीब, छात्र, युवा, बुद्धिजीवी, कर्मचारी, पेशेवर, महिला, दलित, मछुआ, अल्पसंख्यक, छोटे व मध्य स्तर के व्यापारी, किसान, आदिवासियों के आंदोलनों के अनुभव; सुकुमलसेन की पुस्तक भारतीय मजदूर आंदोलन का इतिहास; वर्तमान ट्रेड यूनियन-आंदोलन, विशेषकर संबंधित नगर/राज्य का मजदूर आंदोलन का इतिहास; अंतरराष्ट्रीय मजदूर, छात्र, महिला, पर्यावरण आंदोलनों का इतिहास; मजदूर कानून, अंतरराष्ट्रीय मजूदर संगठन (आइएलओ); ट्रेड यूनियन आंदोलनों पर मार्क्स, बोल्शेविक पार्टी का इतिहास व आधुनि चीनी नवजनवादी क्रांति का इतिहास में मजदूर आंदोलन व शहरी आंदोलन से संबंधित भाग, शंघाई नगर के अनुभव, ली शाव-ची, चेनयुन, चौ एन-लाई के रचनाओं में मजदूर आंदोलन व शहरी आंदोलन से संबंधित लेख, मार्क्सवाद-गुरिल्ला युद्ध पुस्तक में प्रासंगिक लेख; The Dawns Are Quiet Here (रूसी उपन्यास), The Song of Youth by Yong Mo (चीनी उपन्यास), Red Crag by Lo Kuong-Pin, Yong Yi-Yen (चीनी उपन्यास), मेरा परिवार by Tao Cheng (चीनी उपन्यास), सीलनी

दुखोम (यह एक रूसी उपन्यास की रूसी नाम। इसकी अंग्रेजी नाम Strong Spirit or Stout Hearts); How to Master Secret Work (अफ्रिकन नेशनल कांग्रेस द्वारा अपनायी गयी गुप्त तरीके); पेरू, फिलिप्पींस, नेपाल के नगर आंदोलनों के अनुभव; भाषा, व्याकरण।

राज्य कमेटियों के लिए

राज्य कमेटियां मालेमा की रोशनी में पार्टी की राजनीतिक लाइन पर निर्भर होकर दीर्घकालीन लोकयुद्ध से संबंधित समग्र दृष्टिकोण के साथ अखिल भारतीय आंदोलनों एवं संबंधित राज्य आंदोलनों के ज्वार-भाटों की ठोस परिस्थिति, देशीय-अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति, अपने राज्य के विभिन्न तरह के इलाके के आंदोलन की ठोस परिस्थितियों का ध्यान में रखकर उचित कार्यनीति बनानी होगी व क्रांति का कार्यशैली के साथ व्यवहार में कार्य करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन को विकसित करनी होगी। राज्य स्तर के कैडर वर्गदिशा एवं जनदिशा को अपनाकर लगातार उचित नारा एव उचित कार्यनीति बनाते हुए अपने दायरे के सभी इलाकों के मजदूर, किसान आदि व्यापक जनसमुदायों को राजनीतिक संघर्ष के क्षेत्र में गोलबंद करते हुए संगठित करना, आत्मगत शक्ति को बढ़ाना, दुश्मन की शक्ति को घटाना - इस कार्य में पकड़ हासिल करना होगा। इन्होंने दीर्घकालीन लोकयुद्ध की क्रम में पार्टी, जनसेना व संयुक्तमोर्चा को निर्मित व मजबूत करने के कार्य में, गुरिल्ला युद्ध का संचालन, नवजनवादी राजनीतिक सत्ता का निर्माण/आधार इलाकों का निर्माण के कार्य में पकड़ हासिल करना होगा। इन्होंने सिद्धांत की रोशनी में क्रांतिकारी आंदोलन की ठोस समस्याओं का हल करने के अलावा आत्मगत अनुभवों, अपने दायरे के आंदोलन के अनुभवों का विश्लेषण कर सबक निकालना, इन पर निर्भर होकर अपनी समझदारी एवं कार्यनीति को विकसित करना होगा। इन्होंने नेतृत्वकारी कार्य-पद्धतियों एवं अध्ययन शैली को बेहतर करने के बारे में, स्वयं निर्णय लेने के समय में, उसके अलावा, अपने दायरे की पार्टी कमेटियों को मार्गदर्शन करने की समय में भी रणनीति-कार्यनीति के बारे में उचित ध्यान देना होगा। राज्य कमेटियों ने अपनी दायरे के पार्टी कमेटियों को सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक व सांस्कृतिक रूप से सुशिक्षित करने के अलावा जनता को भी राजनीतिक शिक्षा देनी होगी। इन्होंने आत्मालोचना-आलोचना से, पार्टी आंतरिक संघर्षों से निडरता से, पार्टी लाइन को संरक्षित करने हेतु संघर्ष करने के लिए बेहिचक दृढ़ता से

कर्तव्य है। हमारा देश में क्रांति का मतलब ही जनयुद्ध है। इसलिए, इस फौरी लक्ष्य को हासिल करने, उसके बाद अंतिम लक्ष्य समाजवाद-साम्यवाद तक पहुंचने तक केंद्रीय कमेटी सदस्य का फर्ज है राजनीतिज्ञों व लड़ाकू योद्धाओं के रूप में अपने आप को ढालना, सर्वहारा सिद्धांत व राजनीति को संरक्षित करना, एक तरफ साम्राज्यवादी फासीवाद से, दूसरी तरफ पार्टी में दक्षिणपंथी व वामपंथी अवसरवादों के साथ लड़ना, इसके लिए पार्टी को मजबूत करना, फिर से सांचे में ढालना, लगातार क्रांति को जारी रखना। यही हमारी पार्टी के केंद्रीय कमेटी का मुख्य कर्तव्य के रूप में रहेगा।

हमारी पार्टी क्रांति को प्रभावशाली ढंग से चलाने के लिए मालेमा सिद्धांत को मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में लेने के अलावा हमारा देश का क्रांतिकारी ठोस व्यवहार से उस सिद्धांत का सृजनात्मक रूप से जोड़ना होगा। देश की परिस्थितियों के मुताबिक सही लाइन बनाना होगा एवं उसे लागू करना होगा। हमारी पार्टी सही लाइन लागू करने द्वारा ही कमजोर शक्ति मजबूत शक्ति के रूप में बढ़ सकती है।, शिथिलों से ही सशस्त्र शक्तियां निर्माण होते हैं। राजसत्ता पर कब्जा जमा सकते हैं। गलत लाइन लागू करने से क्रांति पीछे हटों का सामना कर सकती है। हासिल सफलताएं दबे जा सकते हैं। इसलिए हमारी पार्टी ने मालेमा की मौलिक सिद्धांतों के मुताबिक, मालेमा दृष्टिकोण, रूख व पद्धतियों को अपनाते हुए समाज में वर्ग संबंधों के बारे में समय-समय पर गहरी सामाजिक शोध व अध्ययन करना होगा। जब का तब परिस्थितियों, देश का इतिहास, देश की क्रांति की स्वाभाविक स्वरूप को ठोस रूप से विश्लेषण करना होगा। क्रांति से संबंधित सैद्धांतिक व व्यवहारिक समस्याओं को स्वतंत्र रूप से हल करना होगा। हमने जरूर अंतरराष्ट्रीय अनुभव से सीखना होगा। किंतु इस अनुभव का यांत्रिक रूप से नकल नहीं करना चाहिए। हमारी पार्टी हमारा देश के वास्तविक विषयों के परिप्रेक्ष्य में हमारी आत्मगत अनुभव को सृजनात्मक रूप से विकसित करना होगा। इसके जरिए ही हमारी पार्टी ने क्रांति को विजय की तरफ आगे बढ़ा सकती है। विश्व सर्वहारा क्रांति की सेवा कर सकती है।

केंद्रीय कमेटी ने अपार सैद्धांतिक, ऐतिहासिक, देश-दुनिया की वर्तमान परिस्थितियों का ज्ञान, पार्टी का सैद्धांतिक व राजनीतिक लाइन के बारे में स्पष्टता, सिद्धांत को क्रांतिकारी व्यवहार से जोड़ने में पकड़ हासिल कर, कठोर दीर्घकालीन संघर्षरत रास्ते में दृढ़ता से खड़े होकर लंबे अनुभव, निचले कमेटियों व कतारों का विश्वास हासिल कर उनकी प्रतिनिधियों से चुनी गयी केंद्रीय स्तर

लखिमपुर-खेरी, बीरभूम, कांक्शा, सोनारपुर, कोलकता, भोजपुर आदि नक्सलबाड़ी के दौर के महान आंदोलनों के इतिहास; एमसीसीआई के पहली, दूसरी केंद्रीय अधिवेशनों के दस्तावेज, बिहार-झारखंड, बंगाल राज्यों के अधिवेशनों के दस्तावेज; पीपुल्सवार पार्टी: विभिन्न राज्य अधिवेशनों के दस्तावेज, अखिल भारतीय स्पेशल कान्फेरेंस के दस्तावेज, 9वीं कांग्रेस के दस्तावेज; पीयू पार्टी: तीन केंद्रीय अधिवेशनों के दस्तावेज, राज्य अधिवेशनों के दस्तावेज; नक्सलबाड़ी पार्टी: बुनियादी दस्तावेज, अन्य मुख्य दस्तावेज; एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस के दस्तावेज, पार्टी पॉलिसी के दस्तावेज, पार्टी आंतरिक सैद्धांतिक संघर्ष पर लेख, अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र के सैद्धांतिक संघर्ष पर लेख; 1970 की दशक के अंत से घटित प्रमुख किसान, आदिवासी, मजदूर, छात्र, युवा, साहिती-सांस्कृतिक, महिला, जाति-उन्मूलन आदि सामाजिक तबकों के, विस्थापन विरोधी आदि आंदोलनों के इतिहास; भारत देश का इतिहास; भारतीय अर्थव्यवस्था, भारतीय दर्शनशास्त्र पर देवीप्रसाद चटोपाध्याय; इतिहास पर कोशांबी; अंबेडकर रचनाएं; जाति व धर्म पर आर.एस. शर्मा के पुस्तक; सुनीति कुमार घोष: सामंतवाद, दलाल पूंजीपति वर्ग, राष्ट्रयताओं की समस्या, देश विभाजन, प्लानिंग पर पुस्तक; मजदूर, किसान, महिला, दलित, आदिवासी, छात्र-युवा, राष्ट्रीयताओं पर चयनित पुस्तक व लेख; भारतीय संविधान, संयुक्त राष्ट्र के चार्टर; एलआइसी: एलआइसी पर अमेरिका सैनिक गाइड (मानुवल्स), मलया कम्युनिस्ट क्रांति पर एलआइसी की अमल के बारे में जार्ज थामसन का पुस्तक, एलआइसी पर तुर्की, फिलिप्पींस, अमेरिकी माओवादी पार्टियों के लेख, एलआइसी पर हमारी पार्टी का दस्तावेज; मलया, थायलैंड, फिलिप्पींस, पेरू, अमेरिका, तुर्की, बंगलादेश, नेपाल आदि देशों के माओवादी पार्टियों के मुख्य दस्तावेज; भाषा, व्याकरण।

केंद्रीय कमेटी के लिए

हमारी पार्टी की उन्नत लक्ष्य है इस विश्व पर पूंजीवादी-साम्राज्यवादी व्यवस्था को ध्वस्त कर समाजवाद-साम्यवाद की स्थापना। लक्ष्य हासिल करने के लिए हमारे सभी गतिविधियों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद ने सैद्धांतिक मार्गदर्शन करता है। इस लक्ष्य को हासिल करने के तहत हमारा देश में व्यापक जनता के कंधों पर बोझ बने तीन महान पहाड़ साम्राज्यवाद, सामंतवाद एवं दलाल नौकरशाह पूंजीवाद का प्रतिनिधित्व करने वाली अर्धऔपनिवेशिक, अध सामंती व्यवस्था को उखड़कर नवजनवादी क्रांति को सफल बनाना हमारी फौरी

खड़े होकर सर्वहारा चेतना दर्शाना होगा। इन्होंने दुश्मन के हमलों से निडरता से पार्टी कतारों का अगवाई कर बहुत ही धैर्य व साहस एवं आत्मबलिदान की चेतना के साथ नेतृत्व प्रदान करना होगा। इन्होंने उदारतावाद एवं नौकरशाही से बचने का प्रयास करते हुए, इनके खिलाफ संघर्ष करते हुए पार्टी कतारों एवं जनता का पहलकदमी व सक्रिय भूमिका को बढ़ानी होगी। इन्होंने रीजनल ब्यूरो/केंद्रीय कमेटी का मार्गदर्शन में हमारे अन्य इलाकों व क्षेत्रों के आंदोलनों पर पार्टी संविधान के मातहत अपना राय जाहिर करते हुए पार्टी की राजनीतिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। इस तरह राज्य स्तर के कैडर भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में अपनी अमूल्य अनुभवों को जोड़ते हुए नवजनवादी क्रांति में अत्यंत महत्वपूर्ण रणनीतिक व कार्यनीतिक भूमिका अदा करनी होगी।

राज्य स्तर के कैडर तीन चरणों विकसित मालेमा का इतिहास-इसमें हुई घटित सैद्धांतिक, राजनीतिक संघर्षों पर; अंतरराष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन की विकास पर, सैद्धांतिक विकास पर; हमारी पार्टी का इतिहास 1925-67 के बीच एवं 1967 से 2018 के बीच हुई सैद्धांतिक व राजनीतिक संघर्षों पर, क्रांतिकारी आंदोलन की विकास, पार्टी लाइन, रणनीति-कार्यनीति की विकास पर; हमारा देश का इतिहास पर, आधुनिक विश्व का इतिहास पर, वर्तमान देश-दुनिया की परस्थिति पर; हमारा देश का क्रांतिकारी युद्ध का मुख्य स्वाभाविक चरित्र-दीर्घकालीन लोकयुद्ध की रणनीति एवं कार्यनीति, जनसेना का निर्माण, जनयुद्ध की मौलिक कार्यनीति, गुरिल्ला युद्ध का संचालन, आधार इलाकों की स्थापना पर; प्रतिक्रांतिकारी एलआइसी पॉलिसी के खिलाफ हमारी/वर्तमान कम्युनिस्ट व राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों के अनुभवों पर; देश-दुनिया में प्रबल हुए संशोधनवादी सैद्धांतिक रुझानों पर; नवजनवादी एवं समाजवादी क्रांतिकारी चरणों में अपनायी जाने वाली सर्वहारा रणनीति-कार्यनीति पर; समाजवादी समाज में सर्वहारा अधिनायकत्व के मातहत कम्युनिज्म हासिल करने तक क्रांति को जारी रखने पर, इसके तहत सांस्कृतिक क्रांतियों को जारी रखने पर गहरी समझदारी हाने की जरूरत है।

इसलिए, राज्य के सभी कैडर बहुत ही सावधानी व ध्यान देकर व्यापक, गहरी व समग्रता से तुलानात्मक अध्ययन जारी रखनी चाहिए। क्रांतिकारी व्यवहार में सक्रिय व सक्षम नेतृत्वकारी भूमिका अदा करने के लिए चेतनापूर्वक प्रयास करना चाहिए। इस तरह के कैडर की तैयार करने हेतु समुचित रूप से केंद्रीय कमेटी ने इन्हें सुशिक्षित करने के अलावा इन्हें सक्रिय व समक्ष नेतृत्व प्रदान करनी चाहिए। ऐसा करने द्वारा ही सैद्धांतिक व राजनीतिक रूप से विकसित,

सांगठनिक रूप से अनुभवी, क्रांतिकारी कार्यशैली में पकड़, प्रतिक्रांतिकारी हमलों के बीच दृढ़ता से खड़े होकर हिम्मत से नेतृत्व प्रदान करते हुए व्यवहार में जांच किए गए, अपने दायरे के पार्टी कतारों व जनता का विश्वास हासिल सक्षम कैडरों के साथ राज्य कमेटियों को निर्मित किया जाता है/मजबूत होती हैं। इसी तरह इन कमेटियों से आज ही नहीं, सुदूर भविष्य में भी भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के लिए नेतृत्व प्रदान कर पाने वाले केंद्रीय स्तर के सक्षम नेतृत्वकारी कैडर तैयार हो जाते हैं। इसके मुताबिक ही लगातार राज्य स्तर के कैडरों के अध्ययन व शिक्षा उच्च स्तर में होनी चाहिए।

हमारा आंदोलन में रीजनल कमेटियों द्वारा अदा करने वाली भूमिका भी रीजियन स्तर में कुछ मुख्य भिन्नताओं को छोड़कर राज्य कमेटियों की ही होगी। इनकी अध्ययन, शिक्षा, इनके द्वारा अपनी निचले कमेटियों को दी जाने वाली शिक्षा, इसकी संदर्भ सामग्री कुछ मुख्य भिन्नताओं के साथ राज्य कमेटियों की ही होगी। रीजनल कमेटियों का अध्ययन एवं शिक्षा तथा संदर्भ अध्ययन सामग्री के बारे में संबंधित राज्य कमेटी व रीजनल ब्यूरो/सीसी कामरेडो द्वारा विशेष रूप से सूचित किया जाना चाहिए।

संदर्भ अध्ययन सामग्री:

जिला स्तर कैडर के रूप में रहते समय अध्ययन व शिक्षा के लिए उचित अवसर न मिलने एवं अध्ययन पर उचित ध्यान नहीं देने वाले राज्य कैडर जिला कमेटियों के संदर्भ अध्ययन सामग्री से चयनित साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। तीन चरणों विकसित मालेमा इतिहास (मार्क्सवाद दर्शनशास्त्र, राजनीतिक अर्थशास्त्र, वैज्ञानिक समाजवाद, सर्वहारा की रणनीति-कार्यनीति); इसके तहत अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में मजदूरों के संगठन-उनके संघर्ष, सर्वहारा की लक्ष्य-कर्तव्य, सर्वहारा पार्टी, क्रांतिकारी बगावत/समाजवादी क्रांति, राज्ययंत्र, संयुक्तमोर्चा, किसान समस्या, जनसेना, राष्ट्रीयताओं, उपनिवेशों की समस्या, रणनीति-कार्यनीति, सर्वहारा अधिनायकत्व, समाजवादी निर्माण, ट्रेड यूनियनवाद/आर्थिकवाद, मजदूर कुलीन-वर्ग (labour aristocracy)/संशोधनवाद, सर्वहारा अंतरराष्ट्रीयतावाद, युद्ध व शांति, महिला समस्या, परिवार, कला व साहित्य, पर्यावरण, विज्ञान व तकनीकी शास्त्रों में हुई विकास, पूंजीवाद-साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नये उपनिवेशवाद, सामाजिक साम्राज्यवाद, साम्राज्यवादियों के नयी उदारवादी नीतियां-विश्व में विशेषकर वर्गसंघर्ष के अलावा सभी क्षेत्रों में उनकी

प्रभाव आदि मुख्य समस्याओं पर विभिन्न देश/अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा पार्टियों द्वारा अपनाये गये रूख, इनके बीच हुई सैद्धांतिक संघर्ष पर; मार्क्स, एंगेल्स: जर्मन विचारधारा, पवित्र परिवार, पारिस कम्युन पर, दोनों के बीच पत्राचार; मार्क्स: लुड्विग फुयरबाक पर निबंध, 'अर्थव्यवस्था की आलोचना के लिए सहयोग देने हेतु' की भूमिका, अर्थशास्त्र की आलोचना, गोथा कार्यक्रम की आलोचना, फ्रांस में गृहयुद्ध, पूंजी व अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत, उपनिवेश का सवाल पर, पूर्वी समाजों पर; एंगेल्स: फुयरबाक-जर्मन सांप्रदायक दर्शनशास्त्र का अंत, जर्मनी में किसान युद्ध, डूरिंग का खंडन, प्रकृति की द्वंद्व, गृह समस्या; परिवार, व्यक्तिगत संपत्ति, राज्ययंत्र का उद्भव; लेनिन: मार्क्सवाद व सशोधनवाद, सर्वहारा क्रांति-गद्दार काउत्स्की, वामपंथी बचकानापन और टुटपुंजिया मनोवत्ति, भौतिकवाद-अनुभववाद की आलोचना, दर्शनशास्त्र का नोट्स, प्रचार व आंदोलन पर लेख, पार्टी निर्माण पर लेख, सेना निर्माण पर लेख, रणनीति-कार्यनीति पर लेख, नयी आर्थिक नीति पर, समाजवाद का निर्माण पर लेख, राष्ट्रीयताओं व उपनिवेशों की समस्या पर लेख; स्तालिन: लेनिनवाद की समस्याएं, विपक्ष, सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास, मार्क्सवाद व राष्ट्रीयताओं की समस्या, राष्ट्रीयताओं की समस्या-लेनिनवाद, भाषा समस्या, सोवियत आर्थिक समस्याएं; माओ (विभिन्न विषयों पर माओ रचनाओं से संकलन): दार्शनिक लेख, सामरिक लेख, पार्टी निर्माण पर लेख, नेतृत्वकारी कार्यपद्धतियों व कार्यशैली पर लेख, शिक्षा व शुद्धीकरण पर लेख, संयुक्तमोर्चा पर लेख, आधार इलाकों की स्थापना पर लेख, कृषि क्रांतिकारी सुधारों पर लेख, आर्थिक नीति पर लेख, सोवियत अर्थव्यवस्थ पर आलोचना, साम्राज्यवाद-युद्ध व शांति पर लेख, समाजवादी समाज में क्रांति को जारी रखना-सांस्कृति क्रांति पर लेख, कला व साहित्य पर लेख, महिला सवाल पर लेख, सीपीसी: महान बहस के लेख, आधुनिक चीनी नवजनवादी क्रांति का इतिहास, शंघाई पाठ्य पुस्तक; छूह-ते संकलित रचनाएं, चौ एन-लाई संकलित रचनाएं, 1 से 10 तक सीपीसी कांग्रेस दस्तावेज, सांस्कृतिक क्रांति से संबंधित दस्तावेज-लेख, पेकिंग रिव्यू के लेख; हमारी पार्टी की विकसित अध्ययन कक्षा के नोट्स: मालेमा, मार्क्सवादी दर्शनशास्त्र, राजनीतिक अर्थशास्त्र, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास (1925-67), भारतीय अर्थव्यवस्था; हमारी पार्टी: भाकपा (माले)-8वीं कांग्रेस के दस्तावेज, चारू मजुमदार के रचानाएं, लिबरेशन पत्रिका के लेख; पुनप्रा-वायलार, तेभागा, तेलंगाना, वर्ली किसान आंदोलन के इतिहास; नक्सलबाड़ी, श्रीकाकुलम, तेराय, मुशहरी,

सीसी सर्कुलर : 4/2019 **(पार्टी सदस्यों तक)**

चुनाव के उपरांत की परिस्थिति-हमारे कर्तव्य

लोकसभा चुनावों में मोदी के नेतृत्व में भाजपा की जीत देश में तेज होने वाली ब्राह्मणीय हिंदू फासीवाद एवं संसदीय फासीवाद का ही संकेत है! तेज होती जा रही साम्राज्यवादी, दलाल नौकरशाही बुर्जुआ एवं बड़े सामंती वर्गों के शोषण, उत्पीड़न एवं दमन को जुझारू रूप से प्रतिरोध करने के लिए पार्टी, पीएलजीए एवं क्रांतिकारी जननिर्माणों को तैयार करें!

भारत को 'सबसे बड़े लोकतत्र' कहकर शासक वर्ग जो ढिंढोरा पीटते हैं, ऐसी देश में 17वीं लोकसभा के लिए एवं आंध्रप्रदेश, ओड़िशा, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश विधानसभाओं के लिए दिखावटी चुनाव 2019 के अप्रैल एवं मई महीनों में सात चरणों में संपन्न हुई। इसके लिए 80 लाख कर्मचारियों एवं दसियों लाख संख्या में सरकारी भाड़े के सशस्त्र बलों को तैनात की गयी। सरकार एवं विभिन्न राजनीतिक पार्टियां मिलकर एक लाख करोड़ रुपये से अधिक जन धन को खर्च की। भाजपा ने फिर से सत्ता में आने के लिए चुनाव आयोग सहित तमाम सरकारी तंत्र को अपनी मनमानी से इस्तेमाल की। चुनाव आयोग ने यह कहकर इसे समर्थन किया कि ''निष्पक्ष, पारदर्शिकता एवं स्वतंत्र से'' चुनाव कराने की उद्देश्य से ही ऐसा करना पड़ा। दरअसल इस झूठी संसदीय चुनावों के खिलाफ लोगों में बहुत आक्रोश व्याप्त है। विशेषकर, हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) सहित कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व इलाकों के राष्ट्रीयमुक्ति संघर्ष एवं जनवादी संगठनों ने सार्वजनिक तौर पर ही चुनाव बहिष्कार के लिए आह्वान किया। चुनावी मौसम में शासक वर्ग के गुटों/पार्टियों के बीच अंतरविरोध/झगड़े पहले के मुकाबले अधिक हो गयी। इस जनाक्रोश एवं झगड़ों को नियंत्रित करने के लिए ही सशस्त्र बलों को, विशेष कर जनादोलन के इलाकों में बड़े पैमाने पर तैनात कर जनता पर एक युद्ध अभियान जैसा ही इन चनावों को पूरा कर लिया गया। इसके तहत कश्मीर में राष्ट्रीयमुक्ति आंदोलन के 90 योद्धाओं एवं जनता तथा हमारी क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में 40 क्रांतिकारियों एवं जनता को कत्लेआम किये एवं सैकड़ो लोगों को जेल में डाल दिये।

बार अध्ययन व शिक्षा पूरा करना चाहिए। लगातार पार्टी भर्ती होने वाले नये सदस्यों एवं ऊपर स्तर के पदों में चुने जाने वाले कामरेडों के लिए शिक्षण जारी रखना चाहिए। हमारी शिक्षण जरूर परिणामोन्मुख होना चाहिए। पार्टी की सैद्धांतिक शिक्षा अंतहीन (लगातार होने) वाली एक प्रक्रिया ही है। वह दीर्घकालीन लोकयुद्ध के क्रम में लगातार समृद्ध होना चाहिए। सभी स्तरों में पार्टी शिक्षा में निरंतरता होने द्वारा ही हर 3-4 सालों में एक बार हमारी व्यवहार की समीक्षा कर समृद्ध बना सकते हैं। इस सिलाबस को सदुपयोग करने के लिए प्रयास करते हुए बेहतर करने के लिए सभी पार्टी कमेटियां एवं पार्टी सदस्य ठोस रूप से अपने अमूल्य सूचनाएं भेजने का सीसी अपील करती है। च

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ

केंद्रीय कमेटी

22 अप्रैल 2019 **भाकपा (माओवादी)**

सर्कुलर : 2/2019 (पार्टी सदस्यों तक)

सुधाकर व माधवी का राजनीतिक पतन का भर्त्सना करें!
उन्हें नकारात्मक शिक्षक के रूप में लेकर अमर शहीदों की कुर्बानियों एवं पार्टी लाइन को ऊंचा उठाते हुए भारत की नवजनवादी क्रांति आगे बढ़ाएं!

प्रिय कामरेडो,

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी (सीसी) सदस्य ओग्गु सत्वाजी (सुधाकर, शरत) एवं बिहार-झारखण्ड स्पेशल एरिया कमेटी (बीजे सैक) सदस्या माधवी (नीलिमा) की जोड़ी ने तेलंगाना डीजीपी के सामने 14 फरवरी, 2019 को आत्मसमर्पण कर दिये। इन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन में लंबे समय तक काम कर सीढ़ी दर सीढ़ी उच्च स्तर पर विकसित होकर कई जिम्मेदारियां निभाये। लेकिन भारतीय क्रांति के असमान वृद्धि की ठोस परिस्थितियों एवं प्रतिक्रांतिकारी हमलों को समझने में पूरी तरह विफल होकर, तुच्छ स्वार्थ का शिकार हो जाने, आत्मबलिदान की चेतना लुप्त हो जाने व राजनीतिक रूप से पतित हो जाने की वजह से पार्टी एवं क्रांतिकारी आंदोलन तथा क्रांतिकारी जनता का विश्वासघात कर दुश्मन के सामने घुटने टेक दिये। इन्होंने भारत की नवजनवादी क्रांति की जीत के लिए अपनी गरम लहूं बहाकर अपने जान न्योछावर करने वाले अमर शहीदों के अरमानों को कूड़ेदान में फेंककर बहुत ही निर्लज्जता से घुटने टेक दिये। केंद्रीय कमेटी ने इन दोनों का पार्टी से बहिष्कार कर इन्हें क्रांति के गद्दार घोषित कर रही है। इस मौके पर सुधाकर व माधवी के आत्मसमर्पण के कारणों को गहराई से विश्लेषण कर उचित सबक लेने की जरूरत है।

सुधाकर तेलंगाना राज्य के निर्मल जिला, सारंगापुर गांव के मध्यम किसान परिवार से है। 1983 में निर्मल में इंटरमीडियट पढ़ाई करते हुए राडिकल छात्र संगठन में शामिल हुए। 1984 में पूर्ववर्ती पीपुल्सवार पार्टी में पूर्णकालीन कार्यकार्ता के रूप में शामिल होकर आदिलाबाद जिला कमेटी व एपी राज्य राज्य

हैं। कम्युनिस्ट अपनी जान से भी महान व उज्ज्वल समाजवाद (कम्युनिज्म) लक्ष्य को अधिक मान्यता देते हैं। भारत की जनता एवं दुनिया की जनता की मुक्ति के लिए कुरबानियां देते हैं, कष्ठ-तकलीफों का सामना करते हैं। युद्ध क्षेत्र में लड़ते हुए अपनी खून बहाते हैं, लहरों की तरह आगे बढ़ते हैं। अपनी गरिमा को बरकरार रखते हुए फांसी पर चढ़ते हैं एवं आत्मसमर्पण करने के बजाय लड़कर मरने के लिए ही महत्व देते हैं। इसके लिए लगातार ''क्रांति को विजय की मंजिल तक पहुंचाने के लिए, किसी राजनीतिक पार्टी को खुद अपनी राजनीतिक कार्यदिशा के सही होने पर और अपने संगठन की मजबूती पर निर्भर होना चाहिए'' (माओ, अंतरविरोध के बारे में)। दुश्मन के भीषण हमलों के बीच ही (प्रतिक्रांतिकारी मुहिम के दौरान) बोल्शेविक क्रांतिकारी दुश्मन के जासूसों (दुश्मन के दलालों) एवं कोवर्टों को निकालते हुए पार्टी को संरक्षित कर, उसे सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक, सांगठनिक एवं सांस्कृतिक रूप से मजबूत किये। इसी परंपरा को चीनी कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों आगे बढ़ाया। इसी तरह आज की जटिल एवं कठिन परिस्थितियों के मुताबिक हमारी पार्टी को ढालते हुए एवं बोल्शेवीकरण करते हुए भारत की नवजनवादी क्रांति को आगे बढ़ाएंगे।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ

केंद्रीय कमेटी

30-3-2019 **भाकपा (माओवादी)**

पूर्णरूप से शुद्ध रहना चाहिए। यह अनुभवहीनता वाली भाववाद दृष्टिकोण से ग्रस्त भावना है, भौतिकवादी द्वंद्ववाद के खिलाफ है। ''वस्तुओं में अंतरविरोध का नियम, यानी विपरीत तत्वों की एकता का नियम, भौतिकवादी द्वंद्ववाद का सबसे बुनियादी नियम है'' (माओ, अंतरविरोध के बारे में)। सर्वहारा पार्टी में शुद्धता मुख्य बात होती है, वह सापेक्षिक है एवं अशुद्धता अप्रधान बात है, वह सामान्य बात होती है। एक अंतरविरोध में दो पहलुओं के बीच एकता होती है। उसी समय में उनके बीच आपस में संघर्ष होती है। यही चलन एवं वस्तुओं में बदलाव के लिए प्रेरणा स्रोत है। यह समूचे पहलुओं के विकास से संबंधित मौलिक सूत्र है। यह पार्टी की विकास संबंधित सूत्र भी है। हमारी पार्टी शून्य में नहीं है, इसके विपरीत, जटिल वर्ग संघर्ष के माहौल में अपनी अस्तित्व को जारी रखती है। क्रांति के क्रम में सही राजनीतिक व सैद्धांतिक दिशा होने वाली एक क्रांतिकारी पार्टी में सच्ची क्रांतिकारी शक्तियां आधिपत्य में होने के बावजूद, अनिवार्यत: उसमें सच्ची एवं गलत शक्तियां एक-साथ रहती हैं। इसी तरह पार्टी के अंदर धीरे-धीरे दुश्मन के कुछ गुप्त एजेंट, गद्दार, वर्ग दुश्मन एवं अन्यान्य अवांछनीय शक्तियों की घुसपैठ हो सकती है। क्रांतिकारी पार्टी के कुछ नेता भी सैद्धांतिक रूप से अपने आप को ढालने पर ध्यान नहीं देने की वजह से एवं सर्वहारा कार्य-पद्धति अपनाने में असमर्थ हो जाने की वजह से पतित हो जाते हैं। क्रांतिकारी पार्टी अपनी महत्वपूर्ण लक्ष्य के मुताबिक कारगर ढंग से जब सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक एवं सैनिक शिक्षा-प्रशिक्षण पर उचित ध्यान नहीं देती है, तो पार्टी में गैरसर्वहारा रुझान प्रबल हो जाती हैं। फलत: भगोड़ापन बढ़ जाती है। यही है पार्टी के अंदर सैद्धांतिक कार्य जारी रखने में, समूह व व्यक्ति के बीच एवं नेतृत्वकारी व सदस्यों के बीच द्वंद्वात्मक संबंध। इस सैद्धांतिक पहलू का महत्व को हमारी समूची पार्टी - नेतृत्वकारी एवं सदस्य गहराई से समझना होगा। इसके मुताबिक पार्टी को, अपने आप को बोल्शेवीकरण करने द्वारा भगोड़ापन/आत्मसमर्पण रुझान को उल्लेखनीय तौर पर घटा सकते हैं।

लेकिन संघर्ष जितना भी जटिल हो, आगे की रास्ते जितना भी कठिन हो, सर्वहारा वर्ग, उसकी अगुवा दस्ते के रूप में सच्ची व क्रांतिकारी पार्टी अवश्य ही महान क्रांतिकारी कर्तव्य से आत्मसात होकर, अपने आप को फौलादी बनाकर बोल्शेवीकरण करती है। पार्टी में मालेमा पर समझदारी एवं सर्वहारा संस्कृति को बढ़ावा देती है। क्रांतिकारी आंदोलन में व्यवहार में सामाना करने वाली परीक्षाओं में सच्ची व झूठे क्रांतिकारी या विश्वासघाती बेनकाब हो जाते

कमेटी के बीच कोरिअर के रूप में काम किया। कुछ समय टेक्निकल विभाग (टीडी) के सप्लाई टीम में रहते हुए 1986 में गिरफ्तार होकर, 1989 में जेल से रिहा हुए। 1990-94 के बीच सिरपुर-चेन्नूर दस्ते के सदस्य के रूप में एवं कमांडर के रूप में, 1994-98 के बीच आदिलाबाद डिविजनल कमेटी (डीवीसी) के सदस्य के रूप में काम किया एवं 1998 में डीवीसी सचिव बन गया। 2000 में उत्तरी तेलंगाना के अधिवेशन में स्पेशल जोनल कमेटी (एसजडसी) के सदस्य चुना गया। सीसी प्रस्ताव के मुताबिक दण्डकाण्य (डीके) के लिए तबदला हुए। 2001-03 के बीच डीके एसजेडसी सदस्य के रूप में, 2003-14 के बीच डीके मिलिटरी कमिशन (एसएमसी) के प्रभारी के रूप में काम किया। इस तरह सुधाकर ने क्रांतिकारी आंदोलन की विकास के साथ सीढ़ी दर सीढ़ी विकसित होकर केंद्र व राज्य कमेटियों द्वारा सौंपी गयी जिम्मेदारियों को निभाया। 2005-12 के बीच प्रतिक्रांतिकारी हमले में केंद्रीय कमेटी को बहुत नुकसान झेलना पड़ा। इन परिस्थितियों में सीसी को पुन:संगठित करने के लिए सुधाकर के सकारात्मक गुणों को नजर में रखकर 2013 की सीसी 4वीं बैठक में सीसी सदस्य के रूप में शामिल (को-आप्ट) किया गया। इसके बाद उन्होंने अगस्त 2014 तक यानी एक साल सीआरबी सदस्य के रूप में काम किया। बाद में सीसी निर्णय के मुताबिक इआरबी के लिए तबदला हुए। 2015 से दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करने तक बीजे सैक के बिहार रीजनल यूनिफाइड कमान के प्रभारी के रूप में काम किया। डीके एसजेडसी एवं सीसी सदस्य के रूप में रहते समय उनके अंदर कुछ गैर-सर्वहारा रूझान व्यक्त हुए।

व्युदुगुला अरुणा (माधवी, नीलिमा) तेलंगाना राज्य के वरंगल रूरल जिला, महमदापुरम गांव की है। उन्होंने बाल विवाह का विरोध कर 1994 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में छापामार दस्ते में शामिल हुई। 1997 तक वरंगल जिले में काम कर, बाद में आदिलाबाद के लिए तबदला हुई। 1998 में सुधाकर के साथ शादी हुई। वहां एसी सदस्य के रूप में एवं दल कमांडर के रूप में काम कर, 2001 में सुधाकर के साथ माधवी भी डीके के लिए तबदला हुई। डीके के पश्चिम बस्तर डिविजन के नेशनल पार्क एसी में काम कर 2002 में एसी सचिव बन गयी। जुलाई 2002 में डीवीसी सदस्य, 2009 में डीवीसी सचिव व 2009 में ही आरसी सदस्य बन गयी। निम्नपूंजीवादी बुनियाद से आयी माधवी के अंदर संकीर्णतावाद, नौकरशाही, व्यक्तिवाद, निम्नपूंजीवादी अहंभाव आदि गैर-सर्वहारा रुझानों पर एवं डीवीसी में अनेकता पर 2012 का डिविजन

प्लीनम ने उन्हें चेतावनी दी। उन्होंने पार्टी से सलाह-मशविरा किये बिना पार्टी की कार्यपद्धति को नकारकर परिवार से संबंध जारी रखी। इसके बारे में सुध ाकार को जानकारी होने के बावजूद माधवी की आलोचना करने से दूर बल्कि खुद अपनी परिवार से भी संबंध इसी तरह गलत तरीके से जारी रखा। माधवी को डीके से आरसी स्तर से बीजे में तबदला करने के बाद एक साल के उपरांत यानी जनवरी 2016 में उनकी सकारात्मक पहलुओं को ध्यान में रखकर इआरबी एवं बीजे सैक में निर्णय लेकर सैक में शामिल किया गया।

सुधाकर ने निम्नपूंजीवादी पृष्ठभूमि से पार्टी में आया। जब तक उनके अंदर अपेक्षाकृत रूप से वर्ग चेतना एवं क्रांति के प्रति प्रतिबद्धता रही तब तक उनकी कार्य सकारात्मक ही रहा। जब सुधाकार व माधवी डीके में काम किये तब आंदोलन सापेक्षिक रूप से आगे बढ़ती रही एवं एसजेडसी सापेक्षिक रूप से मजबूत रही। इसी क्रम में ही उन दोनों में व्यक्तिगत गैर-सर्वहारा रुझान सामने आए। उनके अंदर सैद्धांतिक रूप से मनोगतवाद व राजनीतिक रूप से नौकरशाही, संकीर्णतावाद व व्यक्तिवाद मुख्य रुझान के रूप में रहे। सांगठनिक तौर पर पार्टी अनुशासन पर कटिबद्ध नहीं रहने का रुझान परिवार संबंधों को जारी रखने में व्यक्त हुआ। उन्होंने पार्टी संपर्क में रहे एक ठेकेदार के साथ व्यक्तिगत संपर्क बनाकर पार्टी की जानकारी के बिना अपने परिवार संबंध कायम रखे। इआरबी के लिए तबदला होने की क्रम में भी सीआरबी व सीसी प्रस्तावों से उल्टे उस ठेकेदार द्वारा अपने परिवारों को बुलाये। उस ठेकेदार पहले से ही पुलिस व एपी एसआईबी निगरानी में है। सीआरबी इस पूरी परिस्थिति को चर्चा कर, इआरबी के लिए तबदला करने की पृष्ठभूमि में इस पर गौर कर पीबी कामरेड्स भी सुधाकर व माधवी को स्पष्ट रूप से बताये। तब उन दोनों ने आत्मालोचना रूख अपनाकर उस ठेकेदार व परिवारों से संपर्क कट करने का वादा किये।

बिहार रीजियन में उन्होंने लगभग साढ़े तीन साल काम किये। इस दौरान उन्होंने अधिक समय कोयल-शंख जोन में ही रहे। वहां उन दोनों की कमी-कमजोरी तेज हुई। फरवरी 2018 से जुलाई 2018 तक झारखण्ड रीजिनल प्लीनम, बिहार-झारखण्ड स्पेशल एरिया कमेटी तीसरी प्लीनम, बीजे सैक की बैठक एवं इआरबी की 9वीं बैठक दुश्मन के कई हमलों का प्रतिरोध करते हुए संपन्न हुई। उन प्लीनमों एवं बैठकों में आंदोलन की समीक्षा की गयी। सही व गलत पहलुओं एवं अनुकूल व प्रतिकूल पहलुओं की समीक्षा कर उचित सबकें

इस मालेमा सिद्धांत की रोशनी में सुधाकर व माधवी के व्यवहार को अगर देखे तो पाएंगे कि पार्टी में सीढ़ी दर सीढ़ी विकसित होने में उनके अंदर मौजूद सकारात्मक पहलू किस तरह सहयोग किए, उसी तरह यह स्पष्ट है कि जब जटिल परिस्थिति का सामना किया, उनके नकारात्मक पहलू ने मालेमा सिद्धांत में संश्लेषित सामाजिक नियमों व ज्ञान-सिद्धांत को अपनी व्यवहार में सही रूप से जोड़ने में गंभीर रूप से प्रभावित कर उनकी पतन की गति बढ़ा दी। पार्टी में उन्हें जो उच्च जिम्मेदारियां मिली हैं, उन्हें मनोगतवाद ढंग से, केवल पद के रूप में ही समझा एवं उनके साथ मिले कर्तव्यों को, उन्हें पूरा करने के लिए अध्ययन व व्यवहार किस तरह होना चाहिए, उसे समझ नहीं पाये। चीजों के बारे में द्वंद्वात्मक विश्लेषण की तरीके अपनाने में असमर्थ रहें। बीजे आंदोलन में मजबूत व सकारात्मक पहलुओं से सीखते हुए, बेहतर परिणाम हासिल करने के लिए जटिल व कठिन राजनीतिक व सांगठनिक कार्य के लिए तैयार नहीं हुए। अपना अनुभव ही सब-कुछ समझे एवं आत्मतुष्टि से अहंभावी बन गये। फलतः वे अपने सफलताओं व विफलताओं के बीच विभाजन रेखा खींचने में असमर्थ रहें एवं उसकी स्वभाव को समझने में हिचकिचाहट का शिकार हुए। इस तरह के लोगों के बारे में, 'राजनीति का मतलब क्या है?' के सवाल को जवाब देते हुए मार्क्सवादी महान शिक्षक लेनिन ने कहा - ''राजनीति का मतलब है वर्गों के बीच संघर्ष। वर्ग संघर्ष के इस महत्वपूर्ण कड़ी का जो लोग नजरअंदाज करते हैं, वे अंध, अर्ध-परिपक्वता के साथ भ्रमित क्रांतिकारी बन जाएंगे एवं समाजवादी दृष्टिकोण से अलग हो जाएंगे।'' (पेकिंग रिव्यू, नंबर 1, 2 जनवरी, 1976)।

सुधाकर व माधवी जोड़ी को विशेषकर सुधाकर को उच्च जिम्मेदारियां देने की क्रम में, केंद्रीय कमेटी ने ठीक से आकलन नहीं कर पायी कि उन जिम्मेदारियों को किस हद तक वे पूरा कर पाएंगे। सुधाकर में दृढ़ता की कमी, ढुलमुलपन, वर्ग संघर्ष से अधिक पारिवारिक संबंधों को ऊंचा रखने की उनकी रवैया, अनुशासनहीनता आदि पहलुओं को पहचान करने में एवं ये किस तरफ जाएंगे - समझने में केंद्रीय कमेटी ने मनोगतवाद व उदारतावाद का शिकार हुई। इसलिए इन दोनों को नकारात्मक शिक्षकों के रूप में लेकर ऊपर से निचले स्तर तक पार्टी नेतृत्व ने सबक लेना चाहिए।

कुछ लोग सोचते हैं कि चूंकि कम्युनिस्ट पार्टी सर्वहारा की अगुवा दस्ता है, पार्टी में आंतरिक तौर पर कोई भी अंतरविरोध, संघर्ष नहीं होना चाहिए एवं पार्टी

खाना और गिरना अनिवार्य है।'' (व्यवहार के बारे में, माओ रचनाएं, ग्रंथ-1, पृष्ठ-540)।

इसीलिए वे समूची वस्तुगत प्रक्रिया को व्यापक रूप से नहीं देख पाते, उनमें स्पष्ट दिशा और दूरदृष्टि का अभाव होता है, तथा कभी-कभार की सफलता से और सच्चाई की झलकमात्र से आत्मतुष्ट हो जाते हैं। ऐसे लोगों पर यदि क्रांति का संचालन करने का भार हो, तो वे उसे अंधी गली में ले जाकर छोड़ देंगे। सही नेतृत्व देना का मतबल है - नेतृत्व आमतौर पर गलतियां किये बिना सच्चाई को समझना संभव नहीं है। किंतु उत्तम नेतृत्व आत्मालोचना करने में ईमानदारी होनी चाहिए एवं अपने कमी-कमजोर से उबरने के लिए लगातार कतारों व जनता की आलोचानाएं सुनना चहिए। इन आवश्यताओं के मुताबिक जो नेतृत्व अपने अस्तित्व को बचा पाते हैं, उन्होंने हमेशा खुद पर पार्टी कतारों व जनता की निगारानी रखना चाहते हैं। कम्युनिस्ट पार्टी सदस्य जब कुछ योग्यता पाते हैं, वे पार्टी निर्माण व जनता की सहयोग से अपनी गलतियों को जब का तब ठीक करने में पीछे नहीं हटेंगे।

क्रांति व प्रतिक्रांति के बीच; हासिल किए गए सफलताओं व कमी-कमजोरियों के बीच - इन दोनों के बीच विभाजन रेखा खींचना हमें भुलाना नहीं चाहिए। ऐसा नहीं करने से समस्या की स्वभाव के बारे में हम असंमजस में पड़ जाएंगे। ध्यान से अध्ययन करना व विश्लेषण करना - ये दोनों इन विभाजन रेखाओं खींचने में आवश्यक है। हर एक व्यक्ति के बारे में, हर एक चीज के बारे में हमारी दृष्टिकोण विश्लेषण व अध्ययन-युक्त होना चाहिए। हमने एक परिस्थिति का या तो एक समस्या का परिमाणात्मक पहलु पर भी नजर रखकर, एक प्राथमिक परिणामात्मक विश्लेषण करना चाहिए। हर एक चीज (हर एक गुण) किसी एक ठोस परिमाण में ही (मानदण्ड में ही) व्यक्त होती। कोई मानदण्ड के बिना कोई गुण (चीज) अस्तित्व में नहीं होगी। सही व गलत के बीच, हासिल हुए कर्तव्यों व कमी-कमजोरियों के बीच एक स्पष्ट अंतर को देखकर इन दोनों में से प्राथमिक पहलू को निर्धारित करना होगा। ''सकारात्मक व नकारात्मक उदाहरणों पर निर्भर होकर बार-बार शिक्षा देने द्वारा ही एवं समानताओं व भिन्नताओं को दर्शाने द्वारा ही क्रांतिकारी पार्टियां व क्रांतिकारी जनता अपने आप फौलादी बन जाएंगे तथा परिपक्वता हासिल कर, जीत को सुनिश्चित कर सकेंगे'' - यह पूरी तरह साबित हुई एक सच्चाई है। (माओ, बुरी चीजों को अच्छी चीजों में बदला जा सकता है)।

निकाली गयी। चुनौतियों का सामना करने के लिए उचित कर्तव्य तय की गयी। इसके तहत सुधाकर (शरत) व माधवी (नीलिमा) पर भी एक हद तक आलोचनाएं हुई। मोटे तौर पर वहां की उनकी व्यवहार को पड़ताल करने से पता चलता है कि मनोगतवाद रुझान, संकीर्णतावाद, अनुशासन हीनता, व्यक्तिवाद, नौकरशाही रुझान इस प्रकार प्रकट हुई :

1. सुधाकर बिहार रीजियन के यूनिफाइड कमान के प्रभारी जिम्मेदारी लेने के बाद बिहार-झारखण्ड सैक की ठोस स्थिति क्या है, विगत 50 वर्षों के वर्ग संघर्ष, सशस्त्र संघर्ष के इतिहास व अनुभव क्या है, एकताबद्ध पार्टी बनने के ठीक पहले की स्थिति व नयी पार्टी बनने के बाद की स्थिति - इन दोनों में क्या फर्क था, वर्तमान उस फर्क का अस्तित्व किस प्रकार का है, नेतृत्वकारी कामरेड सहित विभिन्न स्तरों के कामरेडो के बीच व्यापक अंतरविरोध रहने के पीछे का कारण, टीपीसी-जेजेएमपी-जेपीसी इत्यादि प्रतिक्रियावादी गिरोह के बनने का कारण तथा उन गिरोहों को उखाड़ फेंकने में क्या कमियां रही थी व अभी भी है - सब कुछ के आलोक में सकारात्मक व नकारात्मक या दोनों पहलू क्या है - इन पहलुओं को समझने के लिए वहां के विभिन्न कामरेडों के साथ व्यापक घुल-मिल जाने की जो जरूरत थी, वैसा नहीं कर, पहले ही अपना मनोगतवादी धारणा के अनुसार समस्याओं को यांत्रिक रूप से हल करने की कोशिश के कारण वास्तविक नतीजा विपरीत में ही निकला।
2. उन्होंने एकपक्षीय बात सुनकर, उसी को ही पूरी तौर पर विश्वास कर कामरेडो के बीच आपसी अंतरविरोधों के हल के लिए एकतरफा प्रयास किया। फलतः अधिकतर कामरेडो के साथ आत्मसात होना तो दूर की बात रही, बल्कि उनसे अलग-थलग पढ़ गया।
3. उन्होंने बिहार-झारखण्ड स्पेशल एरिया कमेटी इलाके में मौजूद भ्रष्टाचार व नैतिक गलती - इन दो विषयों को प्रधान रूप से निशाना बनाकर, उसे केवल अनुशासन कार्रवाई के जरिए ही हल करने की गलत रूख अपनाने की वजह से विचारधारात्मक, राजनीतिक व सांगठनिक प्रयास गौण हो गया।
4. बहुत जल्द ही चिड़चिड़ाना (irritate हो जाना) और गुस्से से बात

करना तथा ऐसे समय पर सुधाकर (शरत) व माधवी (नीलिमा) अकसर कहा करते थे कि 'यहां कुछ भी ठीक नहीं है, डीके और सीआरबी में जाकर देखो, वहां कैसे चलता है, यहां की सैक तो डीके की एरिया कमेटी के बराबर भी नहीं है' इत्यादि, इत्यादि। उन्होंने स्थानीय कामरेडो को हल्का नजरिये से देखते थे। इस तरह उन्होंने वस्तुगत परिस्थितियों की अध्ययन का नजरअंदाज कर व्यक्तिगत अनुभूतियां बनाये थे। मालेमा इसके विपरीत है, वह बताती है कि मनचाहे तरीके से नहीं, बल्कि वस्तुगत वास्तविकता से आगे बढ़ना चाहिए। अर्थात, यह स्पष्ट है कि उनकी व्यवहार सिद्धांत की रोशनी में वस्तुगत स्थिति में मौजूद प्रतिकूलता को अनुकूल में तब्दील करने के लिए सच्ची व प्रभावशाली नेतृत्व द्वारा पूरी की जाने की भूमिका के विपरीत है।

5. सुधाकर व माधवी इआरबी व बीजे सैक से सलाह-मशविरा किये बिना जब वे तेलंगाना व डीके में रहते समय संपर्क में रहे तेलंगाना ठेकेदार को बीजे बुलाकर उनके जरिए अपने परिवारों से जीवंत संबंध साध लिये। माधवी की इलाज के लिए स्थानीय (बीजे सैक) पार्टी के स्रोतों पर निर्भर होने के बजाय सुधाकर इस ठेकेदार के जरिए अपनी परिवार के पास भेजा। तीन महीनों की इलाज के बाद फिर माधवी को बीजे बुलवाया। उस ठेकेदार ने तीसरी बार सुधाकर के भाई के साथ अंदर आकर सुधाकर व माधवी से भेंट किये। वे वापस जाने की क्रम में उन दोनों (ठेकेदार व उसका भाई) को झारखण्ड पुलिस ने रांची में गिरफ्तार कर लिया। इस मौके पर पुलिस ने उनके पास 25 लाख रूपये राशि और आधा किलो सोना जब्त किया। दुश्मन इसे बहाना बनाकर सीसी एवं राज्य स्तर के नेतत्व के खिलाफ बड़े पैमाने पर मीडिया में दुष्प्रचार अभियान चलाया कि वे लुटेरे हैं, विलासी भवन बनाते हैं, अपने बच्चों की पढ़ाई विदेशों में करवाते हैं।

अक्टूबर 2017 में संपन्न बिहार रीजनल यूनिफाइड कमान की बैठक में एवं बीजे सैक की तीसरी प्लीनम में इस (ठेकेदार से एवं अपने परिवार से संबंध) समस्या पर जब चर्चा की गयी, 'खुद उन्होंने ही उन्हें बुलाने, उन्हें सोना व 25 लाख नहीं बल्कि 20 लाख राशि देने' की बात बताया। क्यों दिया, उसका कारण क्या है इसके बारे में यहां नहीं बल्कि अपनी कमेटी (इआरबी) में ही

ग्रुप को परखने की कसौटी होना चाहिए, वे हैं - 1. कार्य के प्रति पूर्ण लगाव, 2. जनसमुदाय के साथ अटूट संपर्क, 3. स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकने की क्षमता और 4. अनुशासन का पालन। चाहे युद्ध, उत्पादन या शिक्षा (जिसमें शुद्धीकरण कार्य भी शामिल है) से संबंधित प्रधान कार्य हों या पिछले कार्य की जांच करने का काम हो, या कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल करने का काम हो या अन्य कोई काम हो, इन सभी कार्यों को करते समय सामान्य आवाहन को विशेष मार्गदर्शन से मिलाने के तरीके को अपनाने के साथ-साथ नेतृत्वकारी ग्रुप को जन-समुदाय से मिलाने के तरीके को अपनाना भी जरूरी है'' (नेतृत्व के तरीकों से संबंधित कुछ सवाल, माओ रचानाएं, ग्रंथ-3, पृष्ठ-213)।

वर्ग समाज में हर एक व्यक्ति एक विशेष वर्ग के सदस्य के रूप में ही जीवनयापन करते हैं। हर एक सोच-विचार पर किसी एक वर्ग के खरा छाप होगी, जिसमें किसी को भी छूट नहीं होगी। कम्युनिस्ट अपने सोच-विचार को वास्तविक बाह्य दुनिया के नियमों के साथ खरा उतारने पर जोर देना चाहिए। ऐसा खरा नहीं उतर पाने से वे अपने व्यवहार में विफलता का शिकार हो जाएंगे। विफल होने के बाद, वे सबक लेकर वास्तविक बाह्य दुनिया के नियमों के मुताबिक अपने सोच-विचार को ठीक करते हैं। इस तरह विफलता को सफलता के रूप में तब्दील करते हैं। मार्क्सवादी महान शिक्षकों ने बार-बार शिक्षा दिलाया कि हार जीत का जननी है।

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की ज्ञान-सिद्धांत मानव विज्ञान एवं व्यवहार से किसी भी तरह से अलग नहीं किया जा सकता। व्यवहार ही सिद्धांत का बुनियाद है। वह फिर व्यवहार की मदद देती है। मार्क्सवादी द्वंद्वात्मक भौतिकवादी दर्शनशास्त्र में दो विशेष लक्षण स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती हैं। एक, उसकी वर्ग स्वभाव, दूसरा, उसकी व्यावहारिकता। इसे तिरस्कार करने वाले असमर्थ व्यक्तियों के बारे में मार्क्सवादी महान शिक्षक माओ ने कहा -

''केवल ऐसे ही लोग, जो समस्याओं के प्रति मनोगत, एकांगी और सतही रुख अपनाते हैं, कहीं जाने के बाद वहां की परिस्थिति पर विचार किए बिना, वस्तुओं को समग्र रूप से (उनके समूचे इतिहास और उनकी समूची वर्तमान स्थिति की दृष्टि से) परखे बिना, तथा वस्तुओं के सारतत्व (उनके स्वरूप तथा एक वस्तु और दूसरी वस्तु के बीच के आंतरिक संबंधों) तक पहुंचे बिना ही बड़े आत्मसंतोष के साथ आज्ञाएं और निर्देश जारी करते हैं। ऐसे लोगों का ठोकर

राज्यों, सभी इलाकों, सभी सामाजिक उत्पीड़ित वर्गों एवं तबकों में पार्टी संगठित नहीं हो पायी। पार्टी अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए मजबूत पार्टी, मजबूत जनसेना, मजबूत संयुक्तमोर्चा अभी भी विकास होना बाकी है। सर्वप्रथम पार्टी को उन्मूलन करने के लिए भारत की नवजनवादी क्रांति के तीन मुख्य लक्ष्य के तौर पर रहे जनदुश्मन – साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग एवं सामंती वर्ग ने लगातार प्रतिक्रांतिकारी सफाया हमले जारी रखी हुई हैं। दुश्मन के हमलों में कई कामरेड शहीद हो जाने, गिरफ्तर हो जाने, दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करने, कुछ कामरेड अस्वस्थता से मृत्यु हो जाने के वजह से सीसी से लेकर निचले स्तर तक पार्टी कमेटियों में लगातार कई बदलाव आ रही हैं। पार्टी की ताकत सापेक्षिक तौर पर घट जाने की ऐसी जटिल परिस्थितियों में पार्टी के अंदर बार-बार उत्पन्न होने वाली खतरा यह है कि कमजोर नेतृत्व प्रदान करना। वस्तुगत जरूरतों के मुताबिक हमारी आत्मगत शक्ति नहीं है। क्रांति को आगे बढ़ाने की अनुकूल अवसरों को चूकने की यही वजह है। हमने सापेक्षिक रूप से सर्वहारा पार्टी के रूप में संगठित नहीं होने की वजह से अपरिपक्वता, गुणवत्ता घट जाना, अनुशासनहीनता, गैर-सर्वहारा वर्ग के रुझान, अलग-अलग पहलुओं के बारे में देरी से प्रतिक्रिया व्यक्त करने का रुझान, सांगठनिक कार्य में खरापन में कमी दिखायी पड़ रही हैं। फलतः पार्टी ने अपनी नीतियों एवं जनयुद्ध को सभी तरह के राजनीतिक आंदोलनों के जरिए अधिकाधिक लोगों के साथ जीवंत संबंध साधकर, जनसंगठनों एवं पार्टी को मजबूत करने में कई मुश्किलों का सामना कर रही है। सांगठनिक कार्य राजनीतिक महत्व रखती है। रूसी बोल्शेविकों के सर्वश्रेष्ठ लक्षण है सांगठनिक कार्य। पार्टी को बोल्शेवीकरण करने के लिए, छोटी पार्टी से मजबूत जन पार्टी के रूप में तब्दील होने के लिए, पार्टी लाइन को जनता के बीच ले जाने एवं विभिन्न परतों के पार्टी निर्माणों का मौलिक कार्य के जरिए जनकार्य को संगठित करने की सक्रिय सदस्यों से युक्त उत्तम निर्माण होना चाहिए। पार्टी को क्रांतिकारीकरण करने के लिए नवजनवादी क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए केंद्र व राज्य कमेटियां अपनी नेतृत्वकारी भूमिका को किस तरह निभाना चाहिए, इसके बारे में महान शिक्षक स्तालिन व दिमित्रोव ने कहा : ''पार्टी का बोल्शेवीकरण करने के लिए स्तालिन द्वारा बताई गई बारह शर्तों में से 9वीं शर्त को, जो नेतृत्व के संचालन-केंद्र की स्थापना करने के बारे में है, उसे हम .... लागू करना चाहिए। कार्यकर्ता संबंधी नीति पर अपनी बहस के दौरान दिमित्रोव द्वारा पेश की गई इन चार शर्तों को इस प्रकार के नेतृत्वकारी

बताने की बात कहा। 2018 की इआरबी 9वीं बैठक में उन्होंने बताया कि माधवी की इलाज एवं कम्युनिकेशन सेटों को खरीदने के लिए ठेकेदार को राशि पहुंचाया। इस तरह बेईमानदारी जवाबों की वजह से पार्टी कतारों में अफवाह बढ़ी। ईमानदारी से व सही आत्मालोचना करने से दूर बल्कि नौकरशाही तरीके से अहंभावपूर्ण व्यवहार करना, पार्टी के नेतृत्व व कार्यकर्ताओं से झूठ बताने की वजह से सुधाकर व माधवी पर अविश्वास पैदा हुई। इसके बाद मौजूदा समस्याएं और कठिन एवं जटिल बन गयी।

दरअसल सुधाकर व माधवी ने देशभर में दुश्मन के हमले तेज होने की परिस्थितियों में सेट-बैक की स्थिति से आंदोलन को पुनर्निर्माण करने का कर्तव्य को एक चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं कर पाये। उन्होंने उस क्षेत्र को अपनी ही इलाका है ऐसी सोच दिल में बैठा नहीं पाये। वहां की बोल-चाल की भाषा, खान-पान, रीति-रिवाज, संस्कृति से आत्मसात नहीं कर पाये। वहां का इतिहास एवं ठोस परिस्थितियों का अध्ययन को नजरअंदाज करने, अपनी थोड़ी-ही ज्ञान के साथ 'मैं जो सोचा वह ठीक है' के संकीर्ण रवैया की वजह से उनमें, विशेषकर सुधार में मनोगतवादी रुझान तेज हो गयी और दुश्मन के हमले से भयभीत होकर डरफोक हो जाने एवं कम्युनिस्टों के लिए जनता ही लोहे की किला है के समझदारी कमजोर पड़ने तथा आत्मबलिदान की चेतना खो जाने के कारण उसके अंदर असुरक्षा की भावना बढ़ी। आंदोलन का पुनर्गठन के लिए अपने सारे गुणों को उजागर करने, वहां के नेतृत्व व कतारों एवं जनता की विश्वास हासिल कर उनकी प्रिय नेता के रूप में बढ़ने की चेतना उनके अंदर धीरे-धीरे घटती गयी। आंदोलन के मजबूत पहलुओं पर, जनता पर एवं पार्टी पर निर्भर होकर क्रांतिकारी सिद्धांत को भौतिक रूप देकर नयी पहलुओं का सृजन करते हुए आंदोलन में बदलाव लाने की दृढ़निश्चय, ईमानदारी एवं आत्मबलिदान की चेतना घट जाने की वजह से उन्होंने पार्टी, पार्टी के नेतृत्व और जनता पर विश्वास खो दिया। अवसरवादी तरीकों में भी लिप्त हो गया। हाल ही में बिहार-झारखण्ड स्पेशल एरिया में संपन्न सभी जोनल और स्पेशल एरिया प्लीनमों में सेट-बैक से उबरकर आंदोलन को आगे बढ़ाने पर तय कार्यक्रम को दृढ़संकल्प के साथ अमल करने हेतु वह तैयार होने के बजाय विश्वासघात किया।

उन्होंने एक साल पहले से ही ढुलमुल होते हुए अंत में राजनीतिक रूप से पतित होकर पुलिस के सामने घुटने टेक दिये। इन विश्वासघातियों ने पार्टी से

संबंधित सभी बहुत-ही गुप्त समाचार दुश्मन तक पहुंचा दिये एवं पार्टी तथा क्रांतिकारी आंदोलन को अपार नुकसान पहुंचाये। इन गद्दारों को क्रांतिकारी आंदोलन एवं जनता ने कभी क्षमा नहीं करेंगे।

सुधाकर व माधवी ने तेलंगाना पुलिस के सामने सरेंडर होने की मौके पर उनके सुर से सुर मिलाकर पार्टी पर मीडिया के सामने कई आरोप लगाये। वे हैं - ''पार्टी का व्यवहार सिद्धांतों के विपरीत है, पार्टी प्रस्तावों को लागू नहीं करते हैं, पार्टी में जातिवाद बढ़ गयी है, पैसे वसूल कर अपनी परिवारों के हितों को पूरा करते हैं, इस तरह के कई कारणों से पार्टी जनता से अलग हो गयी है, दण्डकारण्य में भी भर्ती एवं जनता की मदद कम हुई, वहां की पार्टी प्रभाव कम होती जा रही है, पार्टी में महिलाओं को दबाने के कारण कई कामरेड आत्महत्या कर रहे हैं, इन विषयों पर पार्टी में सवाल उठाने के बावजूद कोई फायदा नहीं मिला, हम कभी पार्टी की राशि को स्वार्थ के लिए इस्तेमाल नहीं किये, सभी लेखा-जोखा पार्टी को हवाले किये, हालांकि पार्टी में रहना मुश्किल होकर सरेंडर कर रहे हैं, अपनी अस्वस्थता भी इसका एक कारण है''।

लेकिन पार्टी पर उनके आरोप वास्तव में खुद के द्वारा पार्टी की बड़ी रकम हड़पने की सच्चाई पर परदा नहीं डाल सकते। पार्टी पर वर्ग समाज के सामंती व साम्राज्यवादी विचारधारा, संस्कृति एवं मूल्यों का असर के वजह से, प्रतिक्रियावादी सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा लगातार बहुत ही क्रूर व निर्मम तरीके से किये जाने वाले हत्याओं-अत्याचारों एवं कारतूतों से पड़ने वाली गंभीर मानसिक तनाव के वजह से तथा पार्टी के अंदर गलतियों, कमी-कमजोरियों के वजह से बहुत कम संख्या में ही सही महिला कामरेडो ने आत्महत्या करने की घटनाओं पर संबंधित पार्टी कमेटियों ने समीक्षा की एवं यथासंभव अधिकाधिक उससे उबरने के लिए पार्टीव्यापी राजनीतिक शिक्षा अभियान चलाने के साथ-साथ मार्गदर्शन (guidelines) भी तय की - लेकिन इस विषय को उन्होंने छिपाया। देश के कुछ इलाकों में विभिन्न स्तर के नेतृत्वकारी कामरेड अपेक्षाकृत कम संख्या में ही सही, आर्थिक भ्रष्टाचार में शामिल हुए। इसी तरह कुछ जगहों पर कुछ महिला कामरेडो पर कुछ अराजक व पतित शक्तियों द्वारा हिंसा व अत्याचार हुए। यह तो सच है कि हमारी पार्टी में घटित इस तरह के हिंसा व अत्याचार बहुत ही नगण्य है। इन दो तरह के गलतियों के वजह से पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन को विभिन्न रूप में नुकसान हुई। इस पर न केवल संबंधित इलाकों के पार्टी कमेटियां बल्कि ऊपर से नेतृत्व भी समीक्षा कर, इससे

उबरने के लिए आलोचना-आत्मालोचना करने, कार्रवाई (सजा देने) करने, शिक्षा दिलाने सहित मार्गदर्शन भी तय की। इसके तहत ही बीजे में घटित गलतियों, कमी-कमजोरियों के बारे में वहां के प्लीनमों में ठोस रूप से चर्चा व समीक्षा की गयी। सुधाकर व माधवी इन प्लीनमों में शामिल हुए व इसमें सामने आए हुए मामलों को अवसरवाद ढंग से गलत व्याख्या कर शोषक वर्गों के सुर में सुर मिलाये। यह उनकी नैतिक पतन के अलावा और कुछ नहीं है।

सुधाकर व माधवी पतित होने का जड़ें कहां हैं?

परिस्थितियों को जानना एवं सर्वहारा सिद्धांत पर पकड़ हासिल करना - दोनों हमारी पार्टी - भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय व राज्य स्तर के कमेटियों के प्राथमिक कर्तव्य हैं। परिस्थितियों को जानने का मतलब है विश्व व विभिन्न देशों के, हमारा देश, राज्य एवं इलाकों के ठोस परिस्थितियों का पूर्ण रूप से, क्रमबद्ध तरीके से जांच-पड़ताल करना। एक शब्द में कहा जाये तो, विश्व को जानना। सिद्धांत पर पकड़ हासिल करना का मतलब है विश्व को बदलने के लक्ष्य से हमारे इर्दगिर्द की परिस्थितियों को बदलने हेतु सिद्धांत को जोड़ना। ठोस परिस्थितियों का अध्ययन को नजरअंदाज करने एवं इतिहास का अध्ययन अर्थात आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन को नजरअंदाज करने के वजह से रणनीतिक रूप से दृढ़ एवं कार्यनीतिक रूप से लचीले रहकर काम नहीं कर पाते तथा आजीवन कम्युनिस्ट के तौर पर अस्तित्व बचाकर, अंतिम जीत तक क्रांति को जारी नहीं रख पाते। क्योंकि अपनी आदत-सी बनी अधिभौतिकवाद सोच से बचाने में उन्हें बहुत ही जटिल होगी। सुधाकर व माधवी ने इस तरह के गलत कार्यपद्धति का शिकार होकर कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के तौर पर अस्तिव को बचाना तो दूर बल्कि विश्वासघाती के रूप में तब्दील हो गये हैं।

पार्टी कार्यकर्ता एवं पार्टी कमेटियों के सदस्य ठोस रूप से किस इलाके में काम करते हैं, उस इलाके के वास्तविक परिस्थिति के बारे में पहले जानना चाहिए। तभी उन्होंने सही तरीके से काम कर सकते हैं। समूची पार्टी में जांच-पड़ताल एवं अध्ययन के लिए जरूरी कार्यक्रम बनाना पार्टी की कार्यपद्धति में बदलाव लाने में मौलिक कड़ी के रूप में साबित होगी।

एकता पार्टी - भाकपा (माओवादी) का गठित होने के बाद पहले के मुकाबले सापेक्षिक तौर पर मजबूत होने के बावजूद, अभी भी देश के सभी

पिछले पांच साल के शासन में भाजपा नेतृत्ववाली एनडीए सरकार विकास-विरोधी, जनविरोधी, देशद्रोहीपूर्ण भूमिका निभाते हुए साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण-परस्त नीतियों एवं शोषक-शासक वर्गों के लिए अनुकूल नीतियों को बड़े पैमाने पर अमल की। देश के खिलाफ, उत्पीड़ित मजदूर, किसान एवं मध्यम वर्ग के जनता, उत्पीड़ित सामाजिक तबकों (महिला, दलित, आदिवासी एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों), उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं (कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व राष्ट्रीयताओं) के खिलाफ एक भी ऐसा अपराध नहीं है जो भाजपा ने नहीं की। फलतः नवंबर 2018 में संपन्न पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा ने हार का सामना करना पड़ा। इस हार की प्रभाव न पड़े एवं 17वीं लोकसभा चुनावों में जीत हासिल करें - इस लक्ष्य को लेकर आरएसएस-भाजपा ने साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों, देश के कारपोरेट कंपनियों एवं सामंतियों के बल पर धनबल, बाहुबल, अधिकारबल आदि सबकुछ केंद्रित कर एवं हिंदू ध र्म की भावनाओं व पाकिस्तान विरोधी भावनाओं को बहकाने की बहुत ही आक्रामक योजना बनायी। बूत प्रबंधन उनके मुख्य नीति बन गयी। इसके तहत जनता के अंदर भ्रांतियां जगाने वाली कल्याणकारी योजनाओं पर प्रचार की चिल्लाहट पैदा की, कई झूठी वादों का बजट लायी, पुलवामा घटना को दिखायी, पाकिस्तानविरोधी/मुस्लिम-विरोधी भावना, हिंदू धर्मोन्मद, अंधराष्ट्रवाद, युद्धोन्माद भड़काकर वोट पाने में उन्होंने सफल हुई। इसने पुलवामा हमले के पीछे मोदी-आरएसएस की षडयंत्र को उजागर करती है। इसके साथ-साथ जाति एवं धर्म की लाग-लपेट को भड़काना-इस्तेमाल करने, सत्ता का दुरुपयोग कर सीबीआई जैसे केंद्रीय संस्थानों को इस्तेमाल कर विपक्षियों का नियंत्रण कर पाने, विभाजित करने व अपने तरफ खींचने की वजह से, विपक्षी पार्टियां भी लंबे समय से जनविरोधी नीतियां लागू करते हुए जनता की विश्वास खो जाने की वजह से मोदी का विकल्प दर्शाने में घोर विफलता का सामना किया। इसलिए इन चुनावों में भाजपा ने जीत हासिल कर पायी। मोदी के नेतृत्व में भाजपा-एनडीए गठजोड़ ने लोकसभा में कुल 543 सीटों में (इसमें एक सीट के लिए चुनाव नहीं हुई) अत्यधिक बहुमति के साथ भाजपा 303 सीटें एवं एनडीए 353 सीटें हासिल कर फिर से सत्ता पर कब्जा जमाया।

विपक्षी पार्टियां मोदी को कुर्सी से उतारने की कई लफ्फाजी बातें करने के बावजूद वे अपने बीच एकता कायम नहीं कर पायीं। मोदी की शासन के प्रति उत्पीड़ित वर्गों, तबकों एवं राष्ट्रीयताओं में आयी तीव्र असंतोष को इस्तेमाल

करने की क्षमता कांग्रेस सहित अन्य सभी पार्टियां खो दिया। लिहाजा कांग्रेस पार्टी भ्रांतियां पैदा करने वाली 'जनहितैशी' चुनाव घोषणा पत्र, विशेषकर 'न्यूनतम आय कानून' के नाम पर 'अब होगा न्याय', 'गरीब परिवार-72,000 रुपये' कहते हुए उत्पन्न करने वाली प्रचार की चिल्लाहट ने जनता को थोडा भी प्रभावित नहीं कर पायी। फलतः कांग्रेस ने इन चुनावों में प्रधान विपक्षी ओहदा भी हासिल नहीं कर पायी। उत्तरप्रदेश में बसपा-सपा-आरएलडी की महागठबंधन, बिहार, झारखंड, कर्नाटक एवं महाराष्ट्र में कांग्रेस की भागीदारी से बनायी गयी महागठबंधन एवं भाकपा, भाकपा (एम), टीडीपी, पीडीपी आदि पार्टियां भी जनता का विश्वास हासिल नहीं कर पाने की वजह से बैठ गयीं। टीएमसी भी आत्मरक्षा की मुद्रे में चली गयी। टीआरएस को भी धक्का लगा। आप पार्टी की अस्तित्व ही खतरे में पड़ गयी। उत्तर-पूर्व इलाके की क्षेत्रीय संसदीय पार्टियां भाजपा की दलाल के रूप में बदलने की वजह से वहां भाजपा मजबूत हो गयी। केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, ओड़िशा में मोदी की लहर कुछ भी नहीं कर पायी। इस तरह इन संसदीय चुनावों के जरिए फासीवाद और मजबूत होकर सामने आयी।

आंध्रप्रदेश, सिक्किम विधानसभा चुनावों में सरकार-विरोधी वोट को इस्तेमाल कर वाईएसआर कांग्रेस, सिक्किम क्रांतिकारी संगठन सत्ता मे आयीं। ओड़िया राष्ट्रीय आकांक्षाओं को भी इस्तेमाल कर नवीन पट्नायक नेतृत्ववाली बीजेडी पांचवीं बार सत्तारूढ़ होने में सक्षम हुई। अरुणाचल प्रदेश में दूसरी विकल्प नहीं होने की वजह से भाजपा फिर तेजी से निकल कर सत्ता में आयी।

इन चुनावों में 100 प्रतिशत वोट हासिल करने के लिए पहले के मुकाबले चुनाव आयोग, साम्राज्यवादी एवं भारतीय कार्पोरेट एजेंसियों ने जनवरी 2019 से ही कई चालाक विन्यासों के साथ प्रचार की दहाड मचायीं। हमारे आंदोलन के इलाकों में चुनाव बहिष्कार अभियान को विफल करने के लिए चुनाव आयोग ने सरकारी सशस्त्र बलों के कूंबिंग, गश्त एवं झूठी मुठभेड़ों के सहारे 'ऑपरेशन हिम्मत' आदि के नाम पर वोट डालो के प्रचार तेज किया। चुनाव पार्टियों ने कार्पोरेट मीडिया को इस्तेमाल कर झूठी वादे कर बड़े पैमाने में भ्रम एवं चुनावों के इर्दगिर्द एक लालसा पैदा किया। संसदीय व्यवस्था के प्रति आलोचनात्मक रवैया अपनाने वाली इलाकों के जनता पर भी वोट देने की दबाव बनाया। चुनाव पार्टियां जाति, धर्म एवं क्षेत्रीय दुराग्रहों को भड़काना हो, उनके द्वारा धनबल, बाहुबल, शराब एवं हिंसा-धमकियों का इस्तोमल हो - इसे चुनाव आयोग ने

आत्मसात होते हुए उन्हें संगठित करना चाहिए। 'हिंदू फासीवादी राष्ट्र' की स्थापना के लक्ष्य से देश में बढ़ती ब्राह्मणीय हिंदू फासीवाद का सामना करना हमारी अर्धऔपनिवेशिक एवं अर्धसामंती भारत के क्रांतिकारी एवं जनवादी शक्तियों तथा जनता के लिए एक चुनौती है। उसी समय में उनकी एकता एवं संयुक्त संघर्ष के लिए यह एक महान अवसर भी। आवें! इस तरह की परिस्थिति में उक्त कार्यक्रम को पहलकदमी एवं सक्रिय रूप से लागू करते हुए देशभर में दीर्घकालीन लोकयुद्ध को तेज करें! नवजनवादी क्रांति, अंत में समाजवाद-साम्यवाद को सफल बनाने की लक्ष्य से और एक कदम आगे बढ़ें!

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ

केंद्रीय कमेटी

दिनांक : 11-06-2019 **भाकपा (माओवादी)**

सरकार के हमले तेज होने की सोच पार्टी, पीएलजीए, जननिर्माणों एवं जनता के अंदर व्यक्त हो सकती है। इसमें कोई शक नहीं है कि सरकारी सशस्त्र बलों के साथ आरएसएस-भाजपाई शक्तियां फासीवादी हमले में उतारू हो जाती हैं। पहले से ही कम्युनिस्टों का सफाया करना आरएसएस का मुख्य कर्तव्य रहा था। इसलिए मोदी सरकार को कार्यनीतिक रूप से असली बाघ के रूप में देखना चाहिए। लेकिन वह रणनीतिक रूप से 90 प्रतिशत जनता की विरोधी है एवं इसे हमने नहीं भुलाना चाहिए कि दिन-ब-दिन उसको अपनी दुश्मन के रूप में जनता पहचान रही है। ऐसी स्थिति में किसी भी तरह की निराशा-हताशा का शिकार होने के बजाय, अनुकूल परिस्थिति का फायदा उठाते हुए व्यापक रूप से जनता को राजनीतिक रूप से गोलबद व संगठित कर, दृढ़ता व वर्गघृणा के साथ अधिक शक्ति जुटाते हुए लड़ने पर हमारी शक्तियों को प्रेरित करना चाहिए।

प्रिय कामरेडो!

मोदी सरकार ने संकल्प लिया कि 'नया भारत' के नाम पर देश में 'हिंदू फासीवादी राष्ट्र' की स्थापना की प्रतिक्रियावादी योजना लागू की जाए। यानी, यह तो स्पष्ट है कि देश में मोदी की नेतृत्व वाली फासीवादी शक्तियां एक दीर्घकालीन योजना के साथ अपने लक्ष्य हासिल करने एवं अपनी विरोधी शक्तियों पर हमले जारी रखने के लिए काम करेंगे। इस प्रतिक्रियावादी योजना एवं इस फासीवादी हमला अनिवार्य रूप से जनता का प्रतिरोध एवं उसकी हार की मार्ग प्रशस्त करती है। ब्राह्मणीय हिंदू फासीवाद के खिलाफ अलग-अलग तरीकों से देशभर विभिन्न स्तरों पर मजदूर, किसान, छात्र, बुद्धिजीवी, महिला, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक एवं कश्मीर व उत्तर-पूर्व राष्ट्रीयता की जनता लड़ रही हैं। हमारे आंदोलन के इलाकों में साढ़े पांच लाख से अधिक पुलिस एवं अर्धसैनिक बलों को तैनात करने के बावजूद हमारी पार्टी के नेतृत्व में जनता जनयुद्ध को आगे ले जा रही हैं। आंदोलनों पर जितने भी फासीवादी दमन हो, उसे धिक्कार करते हुए जनता संघर्ष की रास्ते पर आगे बढ़ रही हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी यही रूझान दिखायी पड़ रही है। क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियां रोज व्यापक होती जा रही हैं। इस अनुकूल परिस्थिति का फायदा उठाते हुए हमने उत्पीड़ित जनता के साथ व्यापक रूप से एवं मजबूती से

जनवादी प्रक्रिया के तहत ही मान लिया। तो आरएसएस-भाजपा को कोई रोक-टोक नहीं रह गयी। मतदाताओं को खरीदने के लिए चुनाव पार्टियां गैरकानूनी ढंग से बड़े पैमाने पर वितरण करने वाली 8,000 करोड़ रुपये कीमती वाली राशि, सोना, चांदी, शराब एवं मादकपदार्थों को चुनाव आयोग जब्त करने के बावजूद, इससे कई गुणा अधिक मतदाताओं को दिये गये दसियों हजार करोड़ रुपयों का खर्च नियंत्रण करने में वह पूरी तरह विफल रही। इन चुनावों में भाजपा, कांग्रेस एवं क्षेत्रीय पार्टियां अभूतपूर्व ढंग से बड़े पैमाने पर खर्च कीं। इसमें भाजपा सभी पार्टियों को पार किया।

इन चुनावों में यथासंभव सभी चुनावी पार्टियां अपने उम्मीदवारों के तौर पर बहुत हद तक घोटालाबाजों, बदमाशों एवं अपराधियों को ही और बार सामने लायीं। चुनावों में इस तरह की अपराधी एवं शोषक वर्ग की पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों एवं करोड़पतियों ही अधिकतर जीत हासिल किये। इन चुनावों के अवसर पर कोई भी चुनाव पार्टी व्यापक उत्पीड़ित जनसमुदायों, राष्ट्रीयताओं एवं देश से सामना करने वाली मौलिक आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को गंभीरता से उठाना हो, जनता के सामने लाना हो नहीं किया। चुनाव प्रचार के तहत मैदान में रही पार्टियां एवं उम्मीदवारों ने आपसी आरोप-प्रत्यारोपों से कौन कितना भ्रष्ट है एवं अपराधी है उजागर करने सहित सड़ी-गली सभी संसदीय परिभाषा को मनमर्जी से इस्तेमाल किया। व्यापक तौर पर एवं खुलेआम हिंसा में उतारू हो गये। जाति एवं धर्म को मनमानी से इस्तेमाल किया। यह अमीरों की विलासी खेल बन गयी। ये सब चुनावी मौदन में शामिल पार्टियों एवं उम्मीदवारों के जनविरोधी चरित्र, भाई-भतीजावाद, विकास-विरोधी एवं स्वार्थी नीतियों तथा भ्रष्टचार-घोटालों को उजागर किया। इन सभी तथ्यों ने विश्व के 'सबसे बड़े लोकतांत्रिक' देश की संसदीय चुनावों की चालबाजी की पोल खोल रही है।

चुनाव आयोग ने मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए जितने भी सर्कस कलाबाज दिखाने के बावजूद आधिकारिक आंकड़े के मुताबिक ही मतदान 63 प्रतिशत से अधिक नहीं हो पायी। यह पिछले लोकसभा चुनावों की मतदान प्रतिशत से 3 प्रतिशत कम है। बड़े पैमाने पर धनबल, बाहुबल, अधिकारबल, सरकारी सशस्त्र बलों के दबाव से हुई धांधली की प्रतिशत को घटना से असली मतदान प्रतिशत और कम हो जाती है। जहां क्रांतिकारी एवं राष्ट्रीयमुक्ति आंदोलन मजबूत हैं, उन इलाकों में मतदान करवाना मुश्किल समझकर सैकड़ो मतदान केंद्रों को पुलिस

थानों एवं अर्धसैनिक बलों के कैंपों के पास स्थानांतरित किये। ऐसे केंद्रों में बड़े पैमाने पर हेराफेरा हुई। इसके बावजूद छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, ओड़िशा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना आदि राज्यों के हमारी आंदोलन के मजबूत इलाकों में मतदान प्रतिशत 5-30 प्रतिशत से अधिक नहीं है। बंदूक के बल पर वोट डालवाने को रोकने एवं दुश्मन के हमलों से आत्मरक्षा के तहत हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए के वीर योद्धाओं ने संगठित जनता की सहयोग से दण्डकारण्य, बिहार, झारखंड, ओड़िशा, आंध्रप्रदेश सीमा इलाके एवं तेलंगाना राज्यों में दुश्मन के बलों पर कई शानदार हमले कर 35 सशस्त्र पुलिसवालों मार दिये एवं 76 पुलिस वालों को घायल किये। कश्मीर में बड़े पैमाने पर भय की वातावरण पैदा करने के बावजूद, कुछ इलाकों में मतदान प्रतिशत 10 तक सीमित हो गयी। वहां 'कश्मीर को आजादी चाहिए' का नारा और एक बार गूंज उठा। उत्तर-पूर्व इलाकों में भी जनता कई जगहों पर चुनाव बहिष्कार किया। स्थानीय समस्याओं की हल के लिए भी जनता देश के 165 जगहों पर चुनाव बहिष्कार किया। वोट नहीं देने पर उग्रवादी या माओवादी का ठप्पा लगने, सोसाईटी चावल नहीं देंगे एवं सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के लिए योग्यता खो जाने की शोषक-शासक वर्ग के राजनीतिक पार्टियों एवं सरकारी सशस्त्र बलों के धमकियों की वजह से एवं दूसरा सही विकल्प नहीं होने की परिस्थितियों में मतदाताओं ने बड़े पैमाने पर 'नोटा' बटन को दबाया। इस तरह सरकारों के जनविरोधी नीतियों एवं दमन के खिलाफ क्रांतिकारी एवं राष्ट्रीयमुक्ति आंदोलन के इलाकों में तथा जनवादी व विस्थापन-विरोधी आंदोलनों का आह्वान को लेकर भी उत्पीड़ित जनता, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं एवं तबकों ने उल्लेखनीय संख्या में चुनाव बहिष्कार किया।

एक मजाक के रूप में संपन्न हुई इन चुनावों में एनडीए गठजोड़ ने बड़े पैमाने पर जीत हासिल करने की बात कहने के बावजूद, दरअसल उसे जो वोट मिली हैं, कुल मतदाताओं की संख्या में सिर्फ एक तिहाई तक ही है। इससे स्पष्ट होता है कि सभी तबकों के यानी धर्म, जाति, क्षेत्र, लिंग एवं अस्तित्वों से ऊपर उठकर वोट हासिल करने की भाजपा की दावे में कितना दम है। यह 'सबसे बड़े लोकतांत्रिक व्यवस्था' की दिवालियापन को सूचित करती है।

मोदी अपनी जीत के बाद 'विजय भारत', 'सबका साथ, सबका विकास एवं सबका विश्वास' के साथ जीत हासिल करना दावा करते हुए जनता के लिए जो संदेश दिया - जो सामाजिक समुदाय उन्हें वोट नहीं दिये, उनके साथ भी

'जोतने वालों के लिए जमीन' के आधार में जारी कृषि क्रांतिकारी आंदोलन से जोड़ना चाहिए। आदिवासी इलाकों में पांचवी अनुसूची को लागू करने की मांग करते हुए तमाम आदिवासी जनसमुदायों को गोलबंद कर व्यापक जनांदोलन का निर्माण करना चाहिए।

☆ धार्मिक अल्पसंख्यकों में विशेषकर मुस्लिम जनता में ब्राह्मणीय हिंदू फासीवाद के खिलाफ टूट पड़ रही आक्रोश को संगठित करने के लिए पहल करना चाहिए। उन्हें बाकी उत्पीड़ित तबकों साथ संगठित कर मजबूत फासीवादी विरोधी आंदोलन को व्यापक आधार पर निर्माण करना चाहिए।

☆ अलग होने का अधिकार सहित आत्मनिर्णयाधिकार के लिए लड़ने वाली कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व इलाकों के राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलनों एवं गोरखालैंड आदि पृतक राज्य आंदोलनों के समर्थन में भाईचारा आंदोलनों का निर्माण करना चाहिए। कश्मीर में धारा 370 एवं धारा 35ए को समाप्त करना, उत्तर-पूर्व राज्यों में राष्ट्रीय नागरिकता संशोधन बिल को अमल करने के लिए ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी साजिशों के खिलाफ बड़े पैमाने पर जनांदोलनों का निर्माण करना चाहिए।

☆ हमारी पार्टी की राजनीतिक लाइन पर दृढ़ता से अडिग रहते हुए शासक वर्गों के बीच अंतरविरोधों को इस्तेमाल करने में हमें पहल करना चाहिए व बहुंत ही चलाकी से रहना चाहिए। इस अवसर फायदा उठाते हुए ही, संयुक्तमोर्चा की गतिविधियों पर हमारे अनुभवों को ध्यान में रखकर शासक वर्गों के पार्टियों का प्रभाव में रही उत्पीड़ित वर्गों व तबकों की जनता एवं राष्ट्रीयताओं एकजुट होने तथा जनांदोलनों की तरफ आकर्षित होने की तरफ जनांदोलनों का निर्माण करना चाहिए। इसके लिए पार्टी कैडरों की सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठिक स्तर बढ़ाना चाहिए। कम्युनिस्ट शैली से काम करते हुए हमारे पैरों पर खड़े होकर हमारी शक्ति को बढ़ाना चाहिए एवं साझा दुश्मन का सामना करना चाहिए। दुनिया के क्रांतिकारी आंदोलनों एवं हमारी देश के क्रांतिकारी आंदोलनों के अनुभव से सीखना चाहिए।

☆ पार्टी की नेतृत्व ने इसे ध्यान में रखना होगा कि चुनावों में ब्राह्मणीय हिंदू फासीवाद की जीत से सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी व जनवादी आंदोलनों पर

चाहिए। हमें उनके वर्तमान संघर्षों में शामिल होना और उनके आंदोलनों का नेतृत्व प्रदान करना चाहिए। किसानों के आंदोलन के समर्थन में तमाम जनवादी और जनपक्षदर शक्तियों को गोलबंद करना चाहिए और उनके साथ एकताबद्ध होकर संघर्षों का निर्माण करना और उन्हें तेज करना चाहिए।

☆ मजदूर वर्ग में मजबूत होती जा रही ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी गुटों के खिलाफ, निजीकरण, आधुनीकरण के नाम पर किए जाने वाली छंटनी (नौकरी से निकालने) के खिलाफ, मजदूर कानूनों में प्रतिक्रियावादी संशोधनों के खिलाफ, उनपर मनमानी से प्रयोग की जाने वाली क्रूर कानूनों के खिलाफ, कार्यस्थलों की स्थिति में बेहतरी, वेतन बढ़ाने आदि मजदूरों की जीवन-मरण समस्याओं पर मजदूरों को संगठित कर मजबूत सर्वहारा आंदोलन का निर्माण करना चाहिए।

☆ शिक्षा, संस्कृति व इतिहास की भगवाकरण एवं निजीकरण के खिलाफ, शिक्षा की संरक्षण व वैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली के लिए छात्र-युवाओं एवं बुद्धिजीवियों को संगठित करना चाहिए। देश में दिन-ब-दिन तीव्र रूप से बढ़ती जा रही बेरोजगारी समस्या पर व्यापक बुनियाद पर बेरोजगारी युवाओं को गोलबंद करने की कार्यक्रम लेना चाहिए।

☆ महिलाओं पर तेज होती जा रही ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी हमले एवं पितृसत्तात्मक उत्पीड़न के खिलाफ, लैंगिक अत्याचारों खिलाफ, भद्दा सामंती-साम्राज्यवादी जहरीली संस्कृति के खिलाफ महिला आंदोलनों को व्यापक बुनियाद पर संगठित करना चाहिए। देशभर में मजबूत महिला आंदोलन का निर्माण करना चाहिए।

☆ देशभर में दलितों पर बढ़ती ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी हमले के खिलाफ व्यापक आधार पर मजबूत आंदोलना का निर्माण करना चाहिए। इसमें अन्य जातियों के प्रगतिशील शक्तियों को गोलबंद करने का प्रयास करना चाहिए।

☆ देशभर में गंभीर रूप से जारी विस्थापन समस्या पर आदिवासियों, किसानों एवं शहरी गरीबों को संगठित कर देश-विदेशी (साम्राज्यवादी) कारपोरेट कंपनियों के खिलाफ जुझारू संघर्ष का निर्माण करना चाहिए। इन्हें अखिल भारतीय स्तर पर सभी राज्यों में विस्तारित करना चाहिए। इन्हें

मिल कर काम करूंगा, अगले पांच सालों में गलत मंशा से कोई भी कार्रवाई नहीं करूंगा, यह मेरा संकल्प कहें, समर्पण कहें, प्रतिबद्धता कहें जो भी हो - वह सिर्फ धोखा है एवं फासीवाद से रंगी हुई है। साम्राज्यवाद-परस्त, सामंती-परस्त, संघीय-विरोधी, विस्तारवाद नीतियों से लैस मोदी नेतृत्ववाली भाजपा सरकार संसद में मिली बहुमत को इस्तेमाल कर अपनी फासीवादी नग्न चेहरा को पहले के मुकाबले और क्रूरता से उजागर करने में बहुत देरी नहीं लगेगी। मोदी की नेतृत्ववाली एनडीए सरकार लोकसभा में अत्यधिक बहुमति हासिल करना, मजबूत संसदीय विपक्ष नहीं होना, इससे भी मुख्य पहलू - देश में तेज होती जारी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक संकट ने तेज होने वाली ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी हमले को एवं नया भारत निर्माण के नाम पर सभी क्षेत्रों में जनता पर होने वाली भारी हमले की खतरे को सूचित करती हैं।

प्रिय कामरेडो,

साम्राज्यवाद अंतराष्ट्रीय स्तर पर लंबे समय से जो आर्थिक व वित्तीय संकट का सामना कर रही है, उससे बहाली होने की स्थिति दिखायी नहीं पड़ रही है। साम्राज्यवादी देशों के बीच आर्थिक क्षेत्र में होड़ व्यापार युद्धों के रूप में प्रकट हो रही हैं, इसने पश्चिमी एशिया एवं हिंद-प्रशांत इलाके में सामरिक क्षेत्र में उनके बीच स्पर्धा को तेज कर दी है। अमेरिका ने उसके द्वारा हिंद-पशांत इलाके में बनायी गयी पसिफिक कमान एवं 'क्वाड' (चतुर्मुखी सुरक्षा समझौता) गठबंध न को मजबूत कर रही है। इस इलाके में चीन की दबदबे को रोकने के लिए भारत को 'दक्षिण एशियायी पुलिस' के रूप में खड़ा करने एवं 'सार्क' संगठन की जगह पर 'बिम्सटेक' (बंगाल की खाड़ी की पहल-बहुक्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग, इसमें भारत, म्यांमार, थाईलांड, बांगलादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान शामिल है) को रणनीतिक रूप से आगे लाने के लिए कठपुतलियों को बहका रही है। वन रोड वन बेल्ट योजना, 'क्वाड' शिखर सम्मेलन, डोकलाम की घटनाक्रम, श्रीलंका में ईस्टर धमाकें, हाल ही में मालदीव व श्रीलंका में मोदी की दौरा आदि ने हिंद-प्रशांत इलाके में साम्राज्यवादियों के बीच अंतरविरोध गहराते हुए तनातनी बढ़ी है।

साम्राज्यवादी आर्थिक संकट की प्रभाव से दिन-ब-दिन जनता की जिंदगियां दूभर होती जा रही हैं। बेहतर जवीन परिस्थितियों के लिए विभिन्न मांगों पर उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं एवं जनता के प्रतिरोध आंदोलन विश्वभर में तेज हो जाने

के बावजूद, राजनीतिक रूप से कम्युनिस्ट एवं राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलनें कमजार हाने की वजह से साम्राज्यवादी वित्तीय पूंजी की हमला क्रूर फासीवादी रूप ले रही है। कई पूंजीवादी-साम्राज्यवादी देशों एवं पिछड़े देशों में भी दक्षिणपंथी पार्टियां सत्ता में आ रही हैं। फासीवाद विश्वभर में विस्तारित हो रही है। फलत: विश्वभर में तीन मौलिक अंतरविरोध दिन-ब-दिन तेज होती जा रही है।

हमारा देश में दूसरी बार सत्ता पर काबिज मोदी गुट ने कैबिनेट में, आठ कैबिनेट कमेटियों में अमित शाह जैसे लोगों को शामिल कर सरकारी नौकरशाही तंत्र को और मजबूत कर रही है। वह विभिन्न क्षेत्रों एवं समस्याओं पर अपनी ध्यान केंद्रित करने का बात जो कह रही है, ये सब जनता को ठगने एवं साम्राज्यवादियों विशेषकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों (एमएनसियों एवं टीएनसीयों) के भूमंडलीकरण एजेंडे को आक्रामक रूप से लागू करने के बजाय और कुछ नहीं। दोबारा सत्ता पर काबिज होने के बाद मोदी सरकार अमेरिकी साम्राज्यवादियों की मांगों को पूरा करने एवं उनकी आदेशों के मातहत उन्हें अमल करने के लिए किसी भी कीमत चुकाने के लिए तैयार है। साम्राज्यवाद प्रायोजित आर्थिक उदारीकरण नीतियों को आक्रामक रूप से एवं तेजगति से अमल कर रही है। इन नीतियां देशीय उद्योगों एवं वाणिज्य को निगल रही हैं।

पहले, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय पूंजी ने भारत जैसे पिछड़ी दश में मुनाफें की होड़ के तहत प्रवेश करती है। इसके द्वारा कमाने वाली मुनाफें न्यूयार्क, लंडन, टोक्यो, बेर्लिन आदि जगहों में अपनी मातृ-संस्थानों के लिए बह जाती हैं। हमारा देश के लिए कुछ भी फायदा नहीं होगी।

दूसरा, हमारा देश में निवेश करने वाली साम्राज्यवादी पूंजी पर जो मुनाफें दर प्राप्त होती है वह अपनी मातृदेश में पाने वाली दर से तीन-चार गुणा अधिक होती है। यहां की मजदूरों को निर्दयता से शोषण करना, कच्चे माल को सस्ते दर पर लूटना एवं नाम के वास्ते या शन्य पर्यावरण पाबंदियां की वजह से बड़े पैमाने पर यहां पर्यावरण की विनाश हो जाती है, उसी समय उन्हें अप्रत्याशित अधिक मुनाफें मिलती हैं।

तीसरा, दलाल शासक कहते हैं कि बुनियादी सुविधा, ऊर्जा के संसाधन आदि क्षेत्रों में निवेश करने के लिए देश में पूंजी नहीं है। लेकिन यह सरासर झूठ है। अगर साम्राज्यवदियों के मुनाफें को रोक पाते हैं, भारत के दलाल

पर आत्मबलिदान देने की जरूरत के बारे में प्रेरित करना चाहिए। हर एक समस्या पर यथासंभव सभी स्तरों में व्यापक व मजबूत संयुक्तमोर्चों को गठित करने एवं अन्य संघर्षरत संगठनों व शक्तियों के साथ एकता कायम करने के लिए पहल करना चाहिए। जनता को व्यापक बुनियाद पर गोलबंद कर जनांदोलनों को तेज करना चाहिए। देश के अलग-अलग इलाकों में हमारे बलों द्वारा संचालित साहसिक गुरिल्ला कार्रवाइयों से जनता को उत्साहित करना चाहिए। जनयुद्ध में जनता की सक्रिय भूमिका बढ़ाते हुए उन्हें तैयार करनी चाहिए। इसमें पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका सक्रिय रूप से अदा करनी चाहिए।

☆ हमने जनता की दैनंदिन व मौलिक समस्याओं को, दिन-ब-दिन तेज होती जा रही पर्यावरण की समस्याओं को लेकर उन्हें जझारू आंदोलनों में गोलबंद करना चाहिए। क्रूर कानूनों के खिलाफ, हमारे आंदोलन के इलाकों में पुलिस व केंद्रीय अर्धसैनिक बलों की तैनाती एवं कारपेट सुरक्षा की विस्तार तथा उन इलाकों की सैनिकीकरण के खिलाफ, हमारे आंदोलन के इलाकों में गिरफ्तारियों, प्रताड़ना, संपत्ति-फसल एवं गांवों का विध्वंस, महिलाओं पर अत्याचार, झूठी मुठभेड़ों, जनता पर हत्याकाण्डों आदि के रूप में जारी राज्य आतंक एवं राज्य प्रायोजित हत्यारे गिरोहों को भण्डाफोड़ करते हुए व्यापक प्रचार को लेकर, राज्य की पाशविक हमले को विरोध करने वाले सभी शक्तियों के साथ व्यापक संयुक्तमोर्चों को गठित कर जनप्रतिरोध आंदोलनों का निर्माण करना चाहिए। केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन का पूरी तरह सफाया करने के लक्ष्य से जारी जनता पर युद्ध-'समाधान' या दूसरी नयी हमले को हराने के लक्ष्य से ताकत के मुताबिक गुरिल्ला युद्ध को पहलकदमी से एवं सक्रिय रूप से चलाना चाहिए। जनप्रतिरोध एवं गुरिल्ला युद्ध को समन्वय के साथ संचालित करना चाहिए।

☆ 'जोतनेवाले के लिए जमीन' के आधाार पर जमीनदारों के जमीन खेतिहर-गरीब किसानों के बीच वितरण करने की मांग को केंद्र बनाकर, किसानों के तात्कालिक मांगों पर उन्हें गोलबंद करना चाहिए। कृषि क्रांतिकारी वर्गसंघर्ष को तेज करना चाहिए। साम्राज्यवाद-विरोधी व सामंत-विरोधी आंदोलनों में किसान को अखिल भारतीय स्तर पर व्यापक बुनियाद पर गोलबंद कर मजबूत किसान आंदोलन का निर्माण करना

वर्ग की जनता के आंदोलनों को कुचलने के लिए और क्रूर कानूनें बनाकर, और फासीवादी कार्रवाइयां लेने के लिए इन चुनावों के परिणाम एनडीए सरकार को अधिक अवसर दिया है। लेकिन इस अवसर पर हमने यह भी याद रखना होगा कि दलाल शासक वर्ग की पार्टियां जो भी हो, उनके साम्राज्यवादी आका जो भी हो अपनी हितों के लिए कभी भी, कहीं भी कम्युनिस्ट क्रांतियों को कुचल ही दिये, इसके विपरीत वे व्यवहार नहीं करते। यह पारिस कम्युन से लेकर अनुभव में है। एलसाल्वडार एवं श्रीलंका के अनुभव भी हमारे आंखों के सामने हैं। शासक वर्गों के प्रति जनता के अंदर पैदा होने वाली भ्रम जो किसी भी तरह की हो हमें ढूंढ निकालना होगा। केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से 'समाधान' या दूसरे नाम पर संचालित किए जाने वाले नयी रणनीतिक चौतरफा हमले को हराने के लिए एवं हमारी जनयुद्ध द्वारा हासिल सफलताओं को बचाने के लिए देशभर में जनसमुदायों को जागरूक कर व्यापक आंदोलन खड़ा करने की बहुत ही आवश्यकता है। इसलिए, ब्राह्मणीय हिंदू फासीवाद एवं सभी तरह के प्रतिक्रियावादी, फासीवादी व प्रतिक्रांतिकारी तत्वों को उनकी जड़ों से उखाड़ कर सच्ची जनतांत्रिक संघीय गणतंत्र की स्थापना के लक्ष्य से देशभर में निम्न लिखित कार्यक्रम के साथ जनांदोलन एवं जनयुद्ध को तेज करना होगाः

- ☆ ब्राह्मणीय हिंदू फासीवाद के खिलाफ देश की जनता को राजनीतिक रूप से गोलबंद करने के लिए सबसे अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके लिए तेज होती जा रही साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीपति एवं सामंती वर्गों के शोषण, उत्पीड़न एवं दमन का जुझारू रूप से प्रतिरोध करने के लिए व्यापक जनसमुदायों को एकत्रित करना हमारी तरीका होनी चाहिए।
- ☆ हमें गैर-जरूरी नुकसानों से दूर रहते हुए नेतृत्व को, कार्यकर्ताओं एवं जनता को बचाना चाहिए। नये सदस्यों को भर्ती करते हुए पार्टी को विस्तारित करना चाहिए। सभी स्तरों के कामरेडों को शिक्षा देकर नये नेतृत्व को तैयार करनी चाहिए। बोल्शेविक अभियान के अनुभवों से पार्टी को ग्राम स्तर से लेकर ऊपर तक मजबूत करना चाहिए।
- ☆ दुश्मन की फासीवादी हमले का सामना करने के लिए पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जननिर्माणों एवं जनता को राजनीतिक रूप से तैयार करनी चाहिए। दुश्मन की फासीवादी हमले की तीव्रता, हमले की स्तर, उसकी क्रूर स्वभाव के बारे में, उसका जवाबी हमला करने के तहत बड़े पैमाने

नौकरशाही पूंजीपति वर्ग द्वारा स्विस बैंकों में छिपायी गयी 100 बिलियन डालर राशि को बाहर निकल पाते हैं, लुटेरों के हाथों से व्यापक कालेधन की अर्थव्यवस्था पर कब्जा कर पाते हैं, चुपके से देश-विदेशी कारपोरेट संस्थानों द्वारा वंचित 12 लाख करोड़ रूपये की बट्टे खाते को जब्त कर लेते हैं, मंत्रियों, अधिकारियों, संसद, विधायक, पुलिस एवं रक्षा क्षेत्रों में लगाने वाली भारी अनुत्पादक फिजूली खर्चों को यथासंभव कम कर पाते हैं, तब अभी विदेशों से प्राप्त होने वाली निवेश से 10 गुणा अधिक पूंजी देश में ही पैदा कर सकते हैं।

चौथा, दलाल शासक कहते हैं कि आधुनिक तकनीक के लिए विदेशी सहयोग एवं समझौते जरूरी है। यह भी झूठ है। इतिहास ने साबित कर दिखाया कि पूर्व सोवियत संघ, चीन जैसी समाजवादी देश स्वदेशी तकनीक पर ही निर्भर होकर कई छलांग लगायी, उनके द्वारा जो वृद्धि हासिल की गयी वह कोई भी साम्राज्यवादियों की पाबंदियों से प्रभावित नहीं हुई। ऐसे तो हमारा देश में व्यापक पिछड़ी ग्रामीण इलाके में उत्पादन शक्तियों को विकसित करने के लिए पर्याप्त तकनीक मौजूद है। दरअसल, साम्राज्यवादी संस्थानों एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा निर्देशित नीतियों की वजह से देश में कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र संकटग्रस्त हो जाने के परिणामस्वरूप भारतीय अर्धऔपनिवेशिक एवं अर्धसामंती व्यवस्था में अवसर नहीं मिलने की वजह से किसानों की आजीविका खत्म हो गयी, उन्होंने बड़े पैमाने पर ग्रामीण इलाकें छोड़कर शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं, बेरोजगार उच्च स्तर तक पहुंच गयी है, रोजी-रोटी के लिए कुशल-अकुशल मजदूर एवं उच्च शिक्षा प्राप्त युवा विदेश जा रहे हैं।

साम्राज्यवादी वित्तीय पूंजी द्वारा होने वाली औद्योगिकीकरण जनविरोधी एवं देशद्रोही है। इन कंपनियों में जनता की जीवन के लिए जरूरी चीजें नहीं, बल्कि अधिकाधिक मुनाफें देने वाले विलासी चीजों को ही उत्पादन करते हैं। इस विदेशी पूंजी में सामाजिक दृष्टिकोण नहीं होती है। इससे सिर्फ अमीरों एवं कुछ ऊंची मध्यम वर्ग के लोग ही फायदा उठाते हैं, वह व्यापक जनसमुदायों को और गरीबी में धकेलती है तथा अमीर एवं गरीब के बीच खायी तेजी से बढ़ती है। फलतः देशीय बाजार एवं औद्योगिक वृद्धि लड़कड़ाती है। देश की अर्थव्यवस्था और पतन हो जाती है।

वास्तव में देश में आने वाली विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) में 70 प्रतिशत मौजूदा सरकारी एवं निजी संस्थानों एवं व्यापारों के हिस्से खरीदने के

लिए लगायी जाती है। सिर्फ एक छोटी-सी राशि ही नये संस्थानों की स्थापना के लिए इस्तेमाल किया जाता है। एक शब्द में कहा जाये तो, उस तरह की पूंजी ने आजीविका को पैदा नहीं कर सकती। दरअसल आधुनिक यंत्र के साथ ही वह देश में प्रवेश करती है। वह न सिर्फ देश में महंगे दरों से आयात की जाती है, बल्कि बड़े पैमाने पर नौकरियों को नष्ट करती है। बेरोजगारी और बढ़ जाती है। देश के सभी क्षेत्र एफडीआई के जहरी दंश झेल रही हैं। पिछले मोदी सरकार बीमा, बैंकिंग, खदान, रक्षा उत्पादन, मीडिया, आखिर छोटे औद्योगिक क्षेत्र, कृषि, कारीगर, खुदरा बाजार जैसे मुख्य क्षेत्रों में एफडीआई के लिए अनुमति दी। 100 फीसदी एफडीआई उसकी लक्ष्य रही है। जगजाहिर है कि वह एक तरफ देशभक्ति की लफ्फाजा करते हुए ही देश की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह विदेशी कारपोरेट कंपनियों के हाथों हवाला करते हुए जनविरोधी एवं देशद्रोही नीतियां लागू कर रही है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए ही केंद्र में कमजोर संकीर्ण सरकार के बजाय मजबूत फासीवादी सरकार को गठित करने की तरफ ही तुले हुए साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों, भारतीय दलाल नौकरशाही पूंजिपतियों, सामंतियों, मीडिश घरानों ने लोकसभा चुनावों में ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी पार्टी भाजपा को फिर से सत्ता में लाये हैं। मोदी के नेतृत्व में भाजपा की जीत देश में तेज होने वाली ब्राह्मणीय हिंदू फासीवाद एवं संसदीय फासीवाद का ही संकेत है।

औद्योगिक एवं कृषि संकट की वजह से भारतीय अर्धऔपनिवेशिक एवं अर्धसामंती अर्थव्यवस्था मंदी में फंसी हुई है। उसकी वाणिज्यक घाटा बढ़ रही है। जीडीपी वृद्धि दर पिछले पांच सालों से सबसे न्यूनतम स्तर तक पहुंच गयी है। भारतीय एनएसएस की आंकड़े के मुताबिक बेरोजगारी शहरी इलाके में 7.8 प्रतिशत एवं ग्रामीण इलाके में 5.3 प्रतिशत तक बढ़ी है। लेकिन साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हितों को एवं देश की दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों व सामंतियों के हितों को पूरा करने, देश में 'ब्राह्मणीय हिंदू राष्ट्र' की स्थापना ही मोदी सरकार की मुख्य एजेंडा है। इसलिए देशभर में तमाम उत्पीड़ित वर्गों (मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग, देशीय पूंजीपति वर्ग), उत्पीड़ित सामाजिक तबकों (महिला, दलित, आदिवासी एवं धार्मिक अल्पसंख्यक) एवं उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं (कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व राष्ट्रीयताओं) पर उसकी शोषण एवं उत्पीड़न तथा अत्याचार व फासीवादी हमले और तेज हो जाती हैं। इन फासीवादी शक्तियां पिछले पांच सालों में 'गोरक्षा', 'घर वापसी', 'लव-जिहाद'

के नाम पर एवं 'भीड़ की हत्यों' (मोब-लिंचिंग) की तरीका अपनायीं। अब वे इन पुराने तरीकों के साथ और क्रूर तरीकें अपनाती हैं। मोदी कहता है कि आतंकवाद ही अपनी मुख्य निशाना है एवं आतंवाद पर विश्वव्यापी सम्मेलन होनी चाहिए। भाजपा ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ना ही देशभक्ति कहते हुए, अपनी चुनावी घोषणापत्र में अपनी ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी राष्ट्र की एजेंडे को खुलेआम सामने लाकर घोषणा की कि संविधान में संशोधन कर 'धारा 370' एवं 'धारा 35ए' को समाप्त करेंगे, नक्सलवाद को पूरा तरह उखाड़ देंगे, देशभर में एनआरसी (राष्ट्रीय नागरिकता संशोधन बिल) को लागू कर पड़ोसी देशों से शरणार्थी के रूप में आयी मुस्लिम जनता को देश से भगा देंगे एवं हिंदू व बौद्ध धर्म के लोगों को आश्रय देंगे। मतलब विशेषकर हमारी पार्टी की नेतृत्व में जारी क्रांतिकारी आंदोलन पर, कश्मीर व उत्तर-पूर्व इलाकों में जारी राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलनों पर हमला तेज हो जाती है। इसकी बहाने देश में जनवादी आंदोलनों पर, छात्रों एवं बुद्धिजीवियों पर, महिला, दलित, आदिवासी एवं अल्पसंख्यकों पर अत्याचार, महिलओं पर लैंगिक अत्याचार, हमले, संपत्ति का विध्वंस, नरसंहार बढ़ जाती हैं। देश में गृहयुद्ध की स्थिति पैदा होती है। इस फासीवादी हमले की वजह से देशभर में उत्पीड़ित जनता की जीवन स्तर और बदतर हो जाती है। चुनावों में 'भारी जीत' के साथ मोदी की नेतृत्व वाली भाजपा ने विपक्षी पार्टियों सहित अपनी एनडीए गठजोड़ के सह-पार्टियों को भी निगल रही है, इससे शोषक-शासक वर्गों के पार्टियों के बीच अंतरविरोध और तेज हो जाती हैं। फलतः देश में चार मौलिक अंतरविरोध दिन-ब-दिन तेज होते हुए उत्पीड़ित वर्गों, तबकों एवं राष्ट्रीयताओं के आंदोलन व्यापक होते हुए क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा हो जाती हैं। फासीवाद विश्वभर में साम्राज्यवादी देशों में हो रहे मजदूर वर्ग के आंदोलनों एवं पिछड़े देशों में हो रहे क्रांतिकारी जनवादी आंदोलनों की प्रगति को रोक नहीं सकती। उल्टे इन आंदोलनों की प्रगति ही कागजी बाघ साम्राज्यवाद एवं फासीवाद को चकनाचूर कर सकती है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है।

अभी और बार एक सत्ता में आयी भाजपा नेतृत्व वाली एनडीए सरकार की स्थिति कुल मिलाकर देखें तो ऐसी होने की अंदेशा है कि वह और आक्रामक रूप से साम्राज्यवाद-परस्त नीतियां जारी रखेयी एवं करोड़ों श्रमजीवी जनता को और क्रूरता से शोषण कर एवं और निर्ममता से क्रांतिकारी व जनवादी आंदोलनों को कुचल देगी। याद रखे कि संगठित आंदोलनों एवं मजदूर, किसान व मध्यम